

RNI नं. : 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 जुलाई 2024

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 जुलाई 2024

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62

अंक : 07

मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 68

डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26

Office Posted at R.M.S., Bikaner



राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणापासक

धार्मिक पाक्षिक

संघ आबद्धता
से ही
संघ उत्थान



स्वविचार



राम चमकते भानु समाना

**अतिक्रमण करते ही
हम पर आक्रमण होगा।**

कायरों से किसी भी कार्य की आशा
करना, अपने विश्वास को डोलाना
और स्वयं को विषाद में ले जाना है।
स्वयं अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करें।
भरोसेमंद को कार्य सौंपें,
जो भरोसे पर खरा उतरे।

**चाहने वाले को
प्रशंसा नहीं मिलती।**

-पश्म पून्व आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.शा.

॥ आत्मवर्णी ॥

भावे अ असंजमो सत्थं।

-आचारांगनिर्युक्ति (96)

भावदृष्टि से संसार में असंयम ही सबसे बड़ा शस्त्र है।

From the volitional disposition point of view, lack of restraint is the greatest weapon. (It kills and hurts the six kings of living beings)

मणसंजमो णाम अकुसल मणनिरोहो, कुसलमण उदीरणं वा।

-दशवैकलिकचूर्ण (1)

अकुशल मन का निरोध और कुशल मन का प्रवर्तन, मन का संयम है।

Mental restraint means reining in evil and wicked thoughts and to give rein (free expression) to those that are pious and pure.

एस खलु गंथे, एस खलु मोहे।
एस खलु मारे, एस खलु णए॥

-आचारांग (1/17)

यह असंयम की ग्रंथ (आसक्ति) है, यही मोह है, यही मृत्यु है तथा यही नरक है।

This lack of restraint itself is the knot (of attachment), it itself is delusion, it is also the death and it itself is the hell.

असिधारागमणं चेव, दुक्कवं चरिउं तवो।

-उत्तराध्ययन (19/38)

तप का आचरण तलवार की धार पर चलने के समान दुष्कर है।

Observing penance is as hard as walking on the edge of a sword.

भवकोडी-संचियं कम्मं, तवसा तिज्जरिज्जइ।

-उत्तराध्ययन (30/6)

साधक करोड़ों भवों के संचित कर्मों को तपस्या के द्वारा क्षीण कर देता है।

By observing proper penance the spiritual aspirant can shed the karmic encumbrance accumulated over hundreds of millions of births.

सो तवो दुविहो दुत्तो, बाहिरभंतरो तहा।
बाहिरो छव्विहो दुत्तो, एवमभंतरो तवो।

-उत्तराध्ययन (30/7)

तप दो प्रकार का है - बाह्य और आभ्यंतर। बाह्य तप छः प्रकार का है। इसी तरह आभ्यंतर तप भी छः प्रकार का कहा गया है।

The penance is of two types - external and internal. The external penance is again of six types, so is the internal penance.

साधार- प्राकृत मुक्तावली ॐॐॐ



राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

- 08** गाढी श्रद्धा -आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.
10 सेवा-धर्म की गहनता -आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.
17 करुणा भाव और आत्मसंस्कार -आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

- 23** ऐसी वाणी बोलिए : मधुर वचन -संकलित
27 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला -कंचन कांकरिया
28 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र -सरिता बैंगानी

संस्कार सौरभ

- 29** धर्ममूर्ति आनंद कुमारी : विनय-मूर्ति -संकलित
35 जैन दर्शन में पाँच शरीर : सिद्धांत व साधना -डॉ. बी. रमेश गादिया
37 महत्तम उद्देश्य : महापुरुष का निर्माता -पदमचंद गाँधी
41 सम्यक्त्व की प्रगाढ़ता : एक महती आवश्यकता -गणेश डूंगरवाल
44 कैसा हो आदर्श युवा ? -कांता बैद
46 संधारा : जीवन व साधना का सार -अशोकचंद कोठारी
48 महत्तम परिवर्तन -डॉ. आभाकिरण गाँधी

भक्ति रस

- 45** सम्यक्त्व की महिमा -बी. शांतिलाल पोकरणा
47 नाना गुरुदेव की स्मृति -पायल वया

विविध

- 31** बालमन में उपजे ज्ञान -मोनिता जय ओस्तवाल
50 गुरुचरण विहार -महेश नाहटा



तेरी किस्मत तेरे हाथ

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

अं गुलिमाल, रोहिण्येय, प्रभव कैसे खूँखार बन गए व कैसे संत बन गए, यह एक पहेली है। उस पर जब विचार करते हैं तो सामान्यतः हम बहुत हलके स्तर पर पहुँच पाते हैं। हम यह मानते हैं कि शोषणादि परिस्थितियों ने उन्हें आतंकी बना दिया और महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर एवं प्रशमरस से अनुरंजित जंबू कुमार के उपदेश से वे संत बने। उक्त कथन कल्पित नहीं है परंतु पूर्ण सत्य भी नहीं है। सत्य का एक पार्ट है। उक्त सभी निमित्त हैं, संयोग हैं। मूल में व्यक्ति का स्वयं का उपादान होता है। वर्तमान मनोविज्ञान की भाषा में विचार करें तो हम अपने भीतर जैसी तस्वीरें बनाते हैं वैसे बनते जाते हैं। यह बात मनोविज्ञान अब मान रहा है। आत्म-ज्ञानियों ने इसे बहुत पहले से स्वीकार किया है। उनका कहना है कि **“जो व्यक्ति, जिसका मन जिस पदार्थ में गहरा लगा हुआ है, उस समय वह तद्रूप है।”** व्यक्ति जैसा-जैसा सोचता है, वह वैसा-वैसा बनता जाता है। अंगुलिमाल हो या अन्य कोई वह अपने भीतर अपने अनुभवों के आधार पर या यों कहें कि उन अनुभवों को आकार देता जाता है एवं उसी के आधार पर वह आने वाले समय में घटने वाली घटनाओं का आकलन करता जाता है। उन अनुभवों की तस्वीर को गहरा बनाता जाता है। यदि वे संत भी बने हैं तो बाह्य संयोग जिनका भी रहा हो, पहले उन्होंने उन संस्कारों को अवचेतन मन तक पहुँचाया है। परिणामस्वरूप अवचेतन मन शीघ्र उन पर काम करने लगा एवं सुधार की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई। यह सुधार कभी इतना त्वरित होता है कि व्यक्ति समझ ही नहीं पाता कि उसमें एकदम परिवर्तन कैसे आ गया? यह बात निश्चित है कि जब हम अंतर से परिवर्तन चाहते हैं तब ही बाहर बदलाव घटित होता है। यही दशा एक गृहस्थ की होती है। जब तक उसके भीतर अपनों की तस्वीरें बनी रहती हैं, वह उन्हें छोड़ नहीं पाता। जैसे ही वे तस्वीरें वहाँ से हटती हैं, उपदेश-चिंतन किसी भी निमित्त से वह उन सबको छोड़ विरक्ति पथ पर बढ़ जाता है। अतः स्पष्ट है कि व्यक्ति अपने अवचेतन मन तक सुधार के विचार पहुँचाने में समर्थ हो जाता है तो तत्काल उसमें परिवर्तन घटित होने लगता है।

कार्तिक कृष्ण 10, शुक्रवार, 06-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर ♥♥♥♥



YOUR FATE IS IN IN YOUR HANDS?

-Param Pujya Acharya Pravara 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

How did Angulimal, Rohineya, Prabhav turn blood-thirsty and how did they transform into saints? This is an enigma. When we reflect over it, we generally arrive at a level that could be characterized as only frivolous, and not substantial. We believe that circumstances that were fraught with exploitation etc forced them to take the path of terror, and that Jambu Kumar's sermons, laced as they were with the message of Mahatma Buddha, Bhagwan Mahavir and Prashamras, reformed them into saintly beings. The aforesaid assertion is not imaginary, but not the whole truth either. It is an aspect of truth. All the above constitute causes, coincidences.

Basically, the material cause is the individual's own. In modern psychological parlance, we keep getting transformed in tune with the images we conjure up within. Psychology has come to accept this. Those with self-knowledge knew of these ages back. Their view was, "The person whose thoughts are deeply attached to an object, is the spitting image of it at that time." As the person keeps thinking, so does he keep metamorphosing.

Be it Angulimal or another, he evaluates future occurrences on the basis of his inner experiences or, to put it differently, he gives shape and form to his experiences. He intensifies the portrayal of his experiences. Even those who turned saints, had first implanted those (saintly) values into their subconscious, whatever may have been the outward coincidence (that favoured them). As a consequence, the subconscious mind commenced acting on them and the process of their reform got triggered. This reform is sometimes so instantaneous that the person is hard put to understand how the transformation happened with such suddenness. It is a certainty that when we desire change from within, its external manifestation results.

This is the very predicament which the householder (or, the lay person) finds himself in. So long as pictures of his kin endure within, he cannot renounce them. No sooner do these pictures recede than he advances down the path of non-attachment, whatever be the cause, like say sermons, reflections, and so on.

Hence it is clear that when a person is able to convey to his sub-conscious thoughts of transformation, change occurs then and there.

Friday, 06-11-2015

Courtesy- Brahmakshar ❤️❤️❤️

अहम् के आवरण को हटाएँ

सुनहरी कलम से....



आमतौर पर बहुत से मामलों में हम भगवान महावीर के अनेकांतवाद को दरकिनार कर केवल और केवल स्वयं को सर्वेसर्वा प्रतिष्ठित करने में लगे रहते हैं। हम अपने दृष्टिकोण से कहते हैं - 'मैं ही सही हूँ', जबकि कहना ये चाहिए कि 'मैं भी सही हूँ'। ये 'भी' और 'ही' का अंतर प्रभु महावीर के अनेकांतवाद के सिद्धांत से एकदम स्पष्ट हो जाता है और यह स्पष्टता कई जीवन परिवर्तनकारी स्थितियाँ प्रकट करती है।

'मैं ही सही हूँ' और 'मैं भी सही हूँ' ये दोनों वाक्य हमें उलझन से सुलझन की ओर ले जाते हैं परंतु अज्ञानतावश कई बार अहम् रूपी आवरण के कारण हमें यह नजर ही नहीं आता है कि हर स्थिति के दो पहलू होते हैं। हम बिना अन्य परिस्थितियों पर चिंतन-मनन किए केवल अपने पहलू को ही अपना अंतिम निर्णय मान लेते हैं। एक प्रसंग के माध्यम से आसानी से इस बात को और विस्तृत रूप से समझा जा सकेगा -

एक बार एक दंपति अपने घर में बैठे चाय पी रहे थे। अचानक पत्नी की नजर सामने वाले घर में सूख रहे कपड़ों पर गई। वह अपने पति से बोली- "कितने मैले कपड़े हैं। लगता है इनको सही से कपड़े धोने नहीं आते।" पति खामोश रहा। अब ये रोज का सिलसिला हो गया। पत्नी प्रतिदिन कपड़े देखकर अलग-अलग व्यंग्य कसती। रोज की भाँति एक दिन सुबह पति-पत्नी चाय पी रहे थे। पत्नी ने देखा कि आज तो कपड़े बिलकुल साफ-सुथरे धोए गए हैं। यह देखते ही पत्नी बोली- "जरूर किसी ने फटकार लगाई होगी तभी इन्हें अकल आई है।" पति बहुत ही शांत भाव से बोला- "उनके कपड़े मैले नहीं थे, हमारे काँच पर धूल जमी थी, जिसे आज सुबह मैंने साफ किया।"

यदि खुले नजरिए से देखें तो यह प्रसंग कई शिक्षाएँ देता है। हमारे शीर्षक के अनुसार देखें तो यहाँ एक बात स्पष्ट है कि प्रत्येक दृष्टिकोण से टटोले बिना किसी के बारे में अपनी राय बना लेना, व्यंग्य कसना, गलत सोचना नैतिकता की दृष्टि से तो गलत है ही साथ ही धार्मिक दृष्टिकोण से भी हम अनजाने में अनेकानेक कर्मों का बंध कर लेते हैं।

हमारे सामने जो भी परिस्थिति उत्पन्न हो, उस पर शांत भाव से चिंतन-मनन करें और अपना पहलू अथवा विचार रखने से पहले उसका अच्छे से विश्लेषण करें। इस सोच के अभाव में कई बार गलत निर्णय की स्थिति प्रकट हो जाती है, जिसका भुगतान हमें कई तरह से करना पड़ता है। यह बात हम सभी भली-भाँति जानते हैं।

अतः प्रत्येक स्थिति का विश्लेषण करें और समझदारी का परिचय दें। इसी शुभभावना के साथ....।

-सह-संपादिका ♥♥♥♥

धर्मदिशना

गाढ़ी श्रद्धा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

ते गबहादुर की कथा औरंगजेब के जमाने की है। औरंगजेब बड़ा ही धर्मांध बादशाह था। वह किसी भी उपाय से लोगों को मुसलमान बनाना चाहता था। एक दिन कुछ लोगों ने उसे मुसलमान बनाने का उपाय सुझाया। वह उपाय यह था कि अगर लोगों को कष्ट झेलने पड़े तो वे घबराकर मुसलमान बन जाएँगे। अब प्रश्न हुआ कि कौनसा कष्ट पड़ने पर लोग मुसलमान बन सकेंगे? इस प्रश्न के समाधान में उसे सूझा कि दुष्काल के समान और कोई कष्ट नहीं है। अगर दुष्काल का कष्ट पड़े तो लोग जल्दी मुसलमान बन सकते हैं। इस विचार के साथ ही उसने सोचा- “मगर दुष्काल पड़ना तो कुदरत के हाथ की बात है। मुझसे यह किस प्रकार हो सकता है?”

मुस्लिम धर्म यह नहीं कहता कि किसी को बलात् मुसलमान बनाया जाए या किसी पर अत्याचार किया जाए लेकिन कोई मनुष्य जब धर्मांध बन जाता है तो उसमें वास्तविक धर्माधर्म के या योग्यायोग्य के विचार करने की शक्ति नहीं रहती। राजा का धर्म तो यह है कि किसी भी संकट के समय प्रजा की सहायता करे मगर औरंगजेब तो धर्मांधता के कारण उलटा दुष्काल बुलाने

धर्म के लिए सभी कुछ त्याग किया जा सकता है। धर्म का संबंध प्राणों के साथ है। प्राण जैसे प्यारा लगता है, उसी प्रकार धर्म प्यारा लगना चाहिए। धर्म जब प्राणों के समान प्रिय लगे तब समझना चाहिए कि हम में धर्मश्रद्धा मौजूद है।

का विचार कर रहा था।

औरंगजेब सोचने लगा- “अगर दुष्काल पड़ जाए और लोगों को अन्न न मिले तो वे जल्दी मुसलमान बन जाएँगे? लेकिन कुदरत का कोप हुए बिना दुष्काल कैसे पड़ सकता है? ऐसी दशा में मैं अपना विचार अमल में कैसे लाऊँ?” विचार करते-करते वह कहने लगा- “मैं बादशाह हूँ। क्या बादशाह के जोर से मैं अकाल पैदा नहीं कर सकता?” इस प्रकार सोचकर बादशाह ने करीब दो लाख सैनिक कश्मीर में भेजे और वहाँ के धान्य से लहराते हुए खेतों पर पहरा बिठा दिया। किसान धान्य काटने आते तो उनसे कहा जाता कि मुसलमान बनना मंजूर हो तो धान्य काट सकते हो, वरना अपने घर बैठो। इस प्रकार अन्न कष्ट के कारण कितने ही किसान मुसलमान बन गए। जब बादशाह को यह वृत्तांत विदित हुआ तो वह अपनी करतूत की सफलता का अनुभव करके बहुत प्रसन्न हुआ। साथ ही उसने अन्य प्रांतों में भी यह उपाय आजमाने का निश्चय किया। दूसरा नंबर पंजाब का आया।

पंजाब में बादशाह ने यही तरीका अख्तियार किया। लोग त्राहि-त्राहि पुकारने लगे। इस दुर्दशा के समय क्या करना चाहिए, यह विचार करने के लिए बहुत से लोग गुरु तेगबहादुर के पास गए और कहने लगे कि बादशाह ने सारे प्रांत में यह जुल्म आरंभ कर दिया है। अब क्या करना उचित है? गुरु तेगबहादुर ने कहा- “तुम लोग बादशाह के पास यह संदेश भेज दो कि हमारा गुरु तेगबहादुर मुसलमान बन जाएगा, तो हम सब भी मुसलमान बन जाएँगे। कदाचित् वह मुसलमान न बने तो

हम भी नहीं बनेंगे। आप तेगबहादुर को पकड़ कर उनसे पहले निबट लीजिए।”

तेगबहादुर की बात सुनकर लोग कहने लगे कि यह संदेश भेजने से तो आपके ऊपर आपदा आ पड़ेगी। मगर बहादुर तेगबहादुर ने कहा- “सिर पर आपत्ति आ पड़े या प्राण चले जाए तो भी परवाह नहीं। कष्ट सहन किए बिना धर्म की रक्षा कैसे हो सकती है?”

अंततः लोगों ने उपर्युक्त संदेश बादशाह के पास भेज दिया। बादशाह ने तेगबहादुर को बुलावा भेजा। वह जाने को तैयार हुए। उनके शिष्यों ने कहा- “आप हमें यहीं छोड़कर कैसे जा सकते हैं? बादशाह आपके प्राण ले लेगा।” तेगबहादुर ने उत्तर दिया- “यह तो मैं भी जानता हूँ लेकिन मेरे प्राण देने से औरों की रक्षा होती है। अगर मैं अपने प्राण बचाता हूँ तो दूसरों की रक्षा नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में अपने प्राण देना ही मेरे लिए उचित है। मेरे बलिदान से दूसरों की रक्षा होगी, यही नहीं वरन् धर्मरक्षा के लिए प्राणार्पण करने की भावना भी जनता में जाग उठेगी।”

इस प्रकार अपने शिष्यों को समझा-बुझाकर गुरु तेगबहादुर औरंगजेब से मिलने गए। औरंगजेब ने उन्हें मुसलमान बनने के लिए बहुत समझाया और प्रलोभन दिए। मगर तेगबहादुर ने बादशाह को यही उत्तर दिया- “आपको अपना धर्म प्यारा है और मुझे अपना धर्म प्यारा है। धर्म पालन के विषय में किसी प्रकार का दबाव नहीं होना चाहिए। आप अपना धर्म पालें, मैं अपना धर्म पालूँ। अगर आपको अपने धर्म के प्रति इतना आग्रह है तो क्या मुझे अपने धर्म पर दृढ़ नहीं रहना चाहिए?”

बादशाह बोला- “तुम्हारा धर्म झूठा है। अगर उसमें कुछ सच्चाई है तो दिखलाओ कोई चमत्कार!”

तेगबहादुर ने कहा- “चमत्कार बतलाना जादूगरों का काम है। परमात्मा का सच्चा भक्त चमत्कार दिखलाता नहीं फिरता। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में चमत्कार भरा है। उस चमत्कार को देखो।”

बादशाह कहने लगा- “अगर तुम मुस्लिम धर्म स्वीकार नहीं करना चाहते तो मृत्यु का आलिंजन करने

के अतिरिक्त तुम्हारे लिए दूसरा कोई मार्ग नहीं है।”

तेगबहादुर- “मरने के लिए तो मैं तैयार ही हूँ। धर्म के लिए प्राण देने से अधिक प्रसन्नता की और क्या बात हो सकती है।”

बादशाह ने हुक्म दिया- “तेगबहादुर को बाजार के बीचो-बीच ले जाओ और वहाँ इसका सिर काट डालो।” सिर काटने के पश्चात् तेगबहादुर के गले में एक चिट्ठी पाई गई। उसमें लिखा था- “सिर तो दिया मगर सिखा नहीं दी अर्थात् प्राणों का उत्सर्ग कर दिया किंतु अपने धर्म का त्याग नहीं किया।”

इस उदाहरण को सामने रखकर आप अपने विषय में विचार कीजिए कि आपने सत्यधर्म की रक्षा के लिए क्या दिया है? पहले के लोग धर्म रक्षा के लिए प्राण भी अर्पण कर देते थे लेकिन धर्म नहीं जाने देते थे। आप में कोई ऐसा तो नहीं है, जो थोड़े से पैसों के लिए ही धर्म का त्याग कर देता हो? जिस मनुष्य में से नीति चली जाती है, उसमें धर्म भी नहीं रहता।

औरंगजेब ने सोचा तो यह था कि तेगबहादुर को मरवा डालने से लोग जल्दी मुसलमान बन जाएँगे लेकिन उसका विचार भ्रमपूर्ण ही सिद्ध हुआ। तेगबहादुर के बलिदान ने लोगों में एक प्रकार की धार्मिक वीरता उत्पन्न की। लोगों में धर्म के लिए मर मिटने की दृढ़ता देखकर अंततः औरंगजेब को बलात् मुसलमान बनाने का विचार छोड़ देना पड़ा।

इस उदाहरण को उपस्थित करने का आशय यह है कि धर्म के लिए सभी कुछ त्याग किया जा सकता है। आजकल अनेक लोग तुच्छ-सी बात के लिए भी धर्म का त्याग करने में या धर्म की सौगंध खाने में संकोच नहीं करते। धर्म सौगंध खाने की चीज नहीं है। धर्म का संबंध प्राणों के साथ है। प्राण जैसे प्यारा लगता है, उसी प्रकार धर्म प्यारा लगना चाहिए। धर्म जब प्राणों के समान प्रिय लगे तब समझना चाहिए कि हम में धर्मश्रद्धा मौजूद है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-17
(उदाहरण माला भाग-2) ❀❀❀



सेवा - धर्म



-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

पद्म प्रभ जिन, तुज मुज आंतरु रे....

परमात्मा के चरणों में प्रार्थना करने की जो परिपाटी है, उसके पीछे सहज रूप से सेव्य-सेवक का भाव होता है। आत्मा अपने आपको जब असमर्थ समझती है तो समर्थ के चरणों में इस परिपाटी से अपना निवेदन प्रस्तुत करती है। इस विराट विश्व में सर्वशक्तिसंपन्न, सर्वज्ञ व सर्वदर्शी परमात्मा सबके लिए सेव्य है, सेवा करने लायक हैं तथा जितनी संसारी आत्माएँ हैं, वे प्रभु-चरणों में सेवा का दृश्य उपस्थित करती हैं।

योग्यता की दृष्टि से परमात्म-स्वरूप इस संसारी आत्मा के जीवन में भी विद्यमान है किंतु वह आच्छादित है। यह आच्छादन मोह, माया, क्रोध, मान, लोभ आदि के कर्मजन्य परिणामों के कारण से है। यह कर्म-समूह आत्मिक शक्तियों को दबा देता है। प्रार्थना में यही भावना अंतर्निहित होती है कि प्रभु की सेवा करके इन कर्मजन्य परिणामों को हटा दें किंतु प्रभु की स्तुति-मात्र से ऐसा करना शक्य नहीं होगा। यदि आत्मा अपने विचार व आचार से व्यवस्थित बन जाए, अपनी समग्र मूलभूत शक्तियों को जागृत करने की दिशा में सचेत हो जाए तो वह आत्मा

सेव्य-सेवक की स्थिति को समकक्ष बना लेती है।

कर्ता और निमित्त का अंतर

जागृत आत्मा यह विचार करती है कि अपने भविष्य का निर्माण करने वाली वह स्वयं होती है। सारी आंतरिक शक्तियाँ उसके आत्म-स्वरूप में विद्यमान हैं, जिनकी अनुभूति लेना तथा उनको उभारने के लिए विभिन्न निमित्तों का आश्रय ग्रहण करना उसका कर्तव्य होता है। इन्हीं विभिन्न निमित्तों में परमात्मा का निमित्त एक महत्त्वपूर्ण निमित्त माना गया है। यह इसलिए कि इस निमित्त के रूप में एक आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत होता है, जिसका अनुसरण करते हुए यदि समुचित प्रयत्न किए जाएँ तो प्रार्थना सफल बन सकती है।

परमात्मा की सेवा का यह अर्थ है कि परमात्म-स्वरूप के आदर्श को अपने जीवन में उतारने का यत्न किया जाए, वीतराग स्थिति को जीवन का अंग बनाकर चला जाए। वीतराग प्रभु ने जीवन-कल्याण के जो उपदेश दिए हैं, उनमें यही सत्य ध्वनित होता है कि संसार की जितनी भव्यात्माएँ हैं, वे योग्यता की दृष्टि से वीतराग स्वरूप का ही प्रतिनिधित्व करती हैं किंतु आवश्यकता

इस पुरुषार्थ की होती है कि परमात्मा के निमित्त को मार्गदर्शक मानकर वे आत्माएँ अपनी कर्तव्य शक्ति के बल पर आत्म-विकास की सर्वोच्चता को प्राप्त कर लें।

सेवा : आत्मा की रुग्णता की

प्रभु के प्रतिनिधित्व को अगर कहीं सजग रूप में देखना है तो उसे मानव जीवन की चेतना-शक्ति में देख सकते हैं। मनुष्य देह में विद्यमान इस चैतन्य देव का साक्षात्कार सेवा के बल पर सहज रूप में किया जा सकता है किंतु आज यह चैतन्य देव रुग्ण है और आत्मा इस रुग्णावस्था से निवृत्ति नहीं पा रही है।

आध्यात्मिक दृष्टि से रुग्ण बनी हुई आत्मा की सेवा प्रभु के आदर्शों के अनुसार ही हो सकती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर चैतन्य देव को देखने का प्रयास करे और तदनुसार चैतन्य देव की रुग्णता का निवारण करने हेतु सेवा में जुटे। यह सेवा किस प्रकार की हो तथा उसके लिए क्या-क्या साधन एकत्रित किए जाएँ, इसका गंभीरता से विचार करना होगा।

सेवा चिकित्सा के रूप में

यह सेवा इस प्रकार की जाए कि यह चैतन्य देव पूर्ण स्वस्थ बन जाए और अपनी समस्त शक्तियों का स्वयं सबल नियंत्रक हो जाए। इतना आत्मबल जाग जाए कि वह अपने मूल स्वरूप को खोज ले और सँभाल ले। आत्मा की रुग्णता को मिटाकर उसे सुस्वास्थ्य प्रदान करने की दिशा में जो निष्ठापूर्वक आध्यात्मिक सेवा की जाती है, वही चिकित्सा के रूप में प्रतिफलित होकर आत्मा को कर्म रोगों की दुर्बलता से मुक्ति दिलाती है।

सेवा का व्यापक दृष्टिकोण

शास्त्रों में इसी सेवा का निर्देश व्यापक दृष्टिकोण के साथ आया है। तीर्थंकर नाम कर्म प्रकृति के बंध में संघ व साधु की सेवा को विशिष्ट महत्त्व दिया गया है। इस सेवा में वैयावृत्य व समाधि, दोनों का समावेश है। विकासोन्मुख आत्मा संघ व साधु की सेवा करे किंतु कैसे? यह सोचने की बात है। इस सेवा में आध्यात्मिक

स्वरूप को प्रधानता दी गई है। आध्यात्मिक विकास के लक्ष्य को लेकर चलने वाला संघ प्राणिमात्र के लिए अपने द्वार खुले रखता है। वह किसी जाति, संप्रदाय या दल तक ही सीमित नहीं होता। ऐसे संघ की सेवा ही वास्तविक सेवा कहलाती है।

निमित्त कोई भी, सेवा अपनी ही

वस्तुतः सेवा करने वाले व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि मैं सेवा अन्य की नहीं कर रहा हूँ अपितु अपने आपकी ही कर रहा हूँ। अन्य की सेवा के निमित्त से स्वयं की ही आत्मा का परिमार्जन कर रहा हूँ। सेवा कराने वाले ने एक प्रकार से मुझे अपनी ही आत्मा की सेवा करने का अमूल्य अवसर प्रदान किया है। मैं दूसरे को किसी भी प्रकार से स्वस्थ बनाते हुए उसके माध्यम से अपनी ही आध्यात्मिक स्वस्थता प्राप्त कर रहा हूँ और इस कारण मेरा उस पर सेवा करने का कोई एहसान नहीं, बल्कि प्रकारांतर से सेवा कराने वाला ही मुझ पर उपकार कर रहा है। यदि ऐसी विचारणा एक जागृत मानव जीवन में जन्म लेती है तो सेवा की विशिष्टता व व्यापकता की अनुभूति भी संभव बन सकती है। निमित्त कोई भी हो, सेवा सदा अपनी ही होती है, यह मानकर सेवा की गहनता को ग्रहण करना चाहिए।

आप सोचेंगे कि सेवा तो दूसरे की की जा रही है, फिर अपनी सेवा कैसे हुई? इसके लिए आध्यात्मिक विज्ञान की दृष्टि से सोचना होगा, तभी यह विदित होगा कि वस्तुतः आप अपनी ही सेवा कर रहे हैं। यही सोचिए कि आप प्रभु की प्रार्थना कर रहे हैं तो क्या इसका अभिप्राय प्रभु को प्रसन्न करना है? प्रभु तो अपने स्वरूप में इस प्रकार तल्लीन हैं कि न तो वे प्रसन्न होते हैं और न ही उन्हें प्रसन्न करने की आवश्यकता है। साधक या सेवक प्रभु की सेवा, भक्ति, स्तुति या उनके नाम का जप आदि जो भी करता है, अपने ही चैतन्य देव को प्रबुद्ध करने के लिए करता है। फिर यह अपने आपकी ही सेवा हुई या नहीं? साधक यदि अपने आपको प्रार्थना आदि

के माध्यम से प्रबुद्ध बना ले और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्राप्त कर ले, तब यही कहा जाता है कि वह सच्ची रीति से परमात्मा की सेवा कर रहा है।

परमात्मा की सेवा का रहस्य

परमात्मा की सेवा का आंतरिक अर्थ है - स्वयं की आत्मा की सेवा, उसका परिष्कार और परिमार्जन। इस सेवा का फल भी परमात्मा से नहीं मिलेगा बल्कि अपने ही विकास के रूप में अपनी ही आत्मानुभूति से मिलेगा। जहाँ प्रभु की प्रार्थना का प्रसंग है, वहाँ पर भी मैं आपको संकेत देता हूँ कि परमात्मा में अपने प्रतिनिधित्व को संसार के सामने रखकर जो उसे ढूँढ़ता है तो ढूँढ़ने वाला स्वयं भी बुद्ध परमात्मा कहलाता है। तब ऐसा समझा जाएगा कि बुद्ध परमात्मा ने अपने आपको संसार के अंदर समाहित कर रखा है एवं उसमें भी उस सिद्ध परमात्मा का प्रतिनिधित्व रहा हुआ है।

मनुष्य कभी यह सोचे कि मैं परमात्मा की सेवा कैसे करूँ क्योंकि परमात्मा तो मुझे दिखता नहीं है? ऐसी अवस्था में ज्ञानीजन का आदेश है कि तुम्हारी आँखें स्पष्ट नहीं हैं, इस कारण दृष्टि स्पष्ट नहीं है। परमात्मा के अपने ही भीतर रहे हुए प्रतिनिधित्व को पहचानो और उसी की सेवा करो तो वह परमात्मा की सेवा हो जाएगी। ये जितनी आत्माएँ हैं, मूल रूप में परमात्म स्वरूप का प्रतिनिधित्व करने वाली हैं। अतः इन सभी आत्माओं की सेवा के प्रसंग में भी परमात्मा की सेवा का ही प्रसंग माना जाएगा। इसी अपेक्षा से संघ व साधु की सेवा, समाधि या वैयावृत्य का प्रसंग आया है। ऐसी सेवा का अवसर प्रत्येक मनुष्य के सामने आता है और उस समय उनकी सेवा को यदि वह अपनी ही सेवा का रूप मानकर करता है, तभी वह सच्चे अर्थों में सेवा करता है।

सेवा निरभिमान होनी चाहिए

शास्त्रकारों ने इस दिशा में संकेत दिया है कि -

‘अद्व करे नामे एगे नो मान करे एगे अद्व करे’

अर्थात् एक व्यक्ति सेवा करता है और निरभिमान

वृत्ति के साथ करता है तो वह सच्ची सेवा करता है। वह सोचता है कि मैं मान कैसा करूँ क्योंकि मैं तो अपने आपकी सेवा कर रहा हूँ।

आज ऐसी वृत्ति देखी जाती है कि सेवा करने वाला सोचता है कि मैंने व्यक्ति अथवा संघ की इतनी सेवा की है तो उसका पारितोषिक मुझे मिलना चाहिए। अन्य पारितोषिक की कामना न भी की जाए तो भी अधिकांश रूप में तो यह चाहा जाता ही है कि उसकी सेवा की सराहना की जाए, उसे उसका कीर्ति-लाभ मिले। जहाँ ऐसी कामना होती है और कीर्ति नहीं मिलती है तो समझा जाता है कि जैसे उसने कुछ भी सेवा नहीं की। इस प्रकार की कल्पना जिसके मन में होती है, मानिए कि वह व्यक्ति सेवा के मर्म को ही नहीं समझता है। वैसी सेवा के जरिए वह अपनी रुग्ण आत्मा की चिकित्सा तो नहीं करता बल्कि उस पर रोगों के नए लेप ही चढ़ाता है।

अभिमान - यह एक प्रकार से ऐसा ही रोग-लेप है। जिस आत्मा में अभिमान की मात्रा चलती है, वह व्यक्ति सेवा करते हुए भी अपने को नम्र नहीं बना पाता है तथा समझता है कि उसके समान सेवा करने वाला अन्य कोई नहीं है। जब ऐसी भावना प्रबलतर बन जाती है तो उसकी आत्मा के इस अभिमान रूपी रोग की स्थिति असाध्य बनती जाती है। असाध्य न मानें तो दुःसाध्य तो बन ही जाती है। शारीरिक रोग की अपेक्षा मानसिक रोग की चिकित्सा कठिन होती है क्योंकि यह रोग इस तरह व्याप्त हो जाता है कि वह मनुष्य के मन को भ्रमित बना देता है।

सेवा और सेवा का दंभ

ऐसा मानी व्यक्ति सेवा नहीं करता, बल्कि सेवा का दंभ मात्र करता है। **‘मान करे नामे एगे अद्व करे’** के रूप में वह सेवा तो नहीं कर रहा है लेकिन मान अपने अंदर लेकर चल रहा है। **‘मैं ही सेवा करने वाला हूँ। मेरे बिना तो सेवा हो ही नहीं सकती। संघ या संस्था चल ही नहीं सकती’** ऐसी विचारणा तो अभिमानी रखता है किंतु ऐसी सेवा आत्मशुद्धि का कारण नहीं बन सकती है। वह

न तो आध्यात्मिक विज्ञान का ज्ञाता बनता है और न ही राष्ट्र या विश्व का सेवक कहलाता है।

सेवा का यह पारस्परिक रूप

सेवा का एक ऐसा भी रूप होता है जो पारस्परिक संबंधों पर आधारित होता है। जब संतान, माता की कुक्षि से जन्म लेकर बाहर आती है और जैसे ही उसको भान होता है कि यह मेरी माता है, इसने मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया है, यह माता मुझे स्नेह प्रदान कर रही है तथा इसके स्नेह से मैं उन्नत नहीं हो सकता हूँ तो संतान के मन में माता की सेवा करने की भावना उत्पन्न होती है। ज्यो-ज्यो संतान होश सँभालती है, सबसे पहले उसका दृष्टिकोण माता की सेवा की ओर जाता है। उसे शुद्ध सेवा का रूपक न भी समझें क्योंकि उसमें मोह का रंग भी हो सकता है या दान-प्रतिदान का भाव भी। आगे समझ बढ़ने पर वह संतान पिता के महत्त्व को भी समझने लगती है। साथ ही साथ वह परिवार के अन्य सदस्यों के जीवन का मूल्यांकन भी करने लगती है और सहयोगियों, पड़ोसियों के साथ-साथ समाज की ओर भी उसकी रुचि बढ़ने लगती है। इन सबके उपकार को मानते हुए व्यक्ति जब उनकी सेवा करता है और उस वक्त उसमें अगर अभिमान भी मिला होता है तो वैसी सेवा में पारस्परिकता का निर्वाह भी नहीं होता है तथा उसमें व्यापकता भी नहीं आती है।

सेवा का यह पारस्परिक रूप भी कर्तव्य-बुद्धि को जागृत करता है। विशिष्ट ज्ञान न भी हो, मध्यम दर्जे का भी ज्ञान हो, तब भी व्यक्ति कर्तव्य-बुद्धि के आधार पर अपने उपकारियों एवं सहयोगियों के लिए तन, मन, धन से सेवा करने की भावना रखता है। इस पारस्परिक रूप में एक बात यह भी रह सकती है कि यदि सहयोगी या पड़ोसी की सेवा नहीं की जाएगी तो सहयोगी या पड़ोसी उसकी भी सेवा नहीं करेगा। इस विचार-दशा में पारस्परिक हित या स्वार्थ की स्थिति भी रहती है। यह स्वार्थ-संधि भी आदर्श रूप ले ले तो सेवा अधिक शुद्ध रूप ग्रहण कर लेती है।

सामाजिक सेवाओं के प्रसंग

जब व्यक्ति समाज के धरातल पर चरण रखता है तो उस स्थल पर उसके लिए सेवा के अनेकानेक प्रसंग उपस्थित होते हैं, जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक आदि सेवाओं से संबंधित होते हैं। समाज के सभी व्यक्तियों की शारीरिक सेवा तो एक व्यक्ति दे नहीं सकता है किंतु मानसिक सेवा की दृष्टि से वह सर्वजन-हित की ओर ध्यान लगाकर समाज में विषमता को हटाकर समता के संस्कारों का प्रसार कर सकता है। शारीरिक सेवा तो गौण है, उसकी तुलना में जो इस प्रकार मानसिक सेवा करता है, वैसे ही वह मानसिक सेवा के अनुरूप यथास्थान शारीरिक सेवा का कार्य भी कर सकता है।

सामाजिक सेवा के प्रसंग में भी आधारगत भावना यह हो सकती है कि मैं सामाजिक सेवा न करूँ क्योंकि समाज में कोई विकृति प्रवेश करे तो उसका कुप्रभाव मुझ पर भी पड़ेगा। तब भी ऐसी भावना सर्वजन-हित की ही कही जाएगी। समाज की सेवा का तात्पर्य है - समाज के संगठन को इस प्रकार से व्यवस्थित रखना कि उसमें एकता व समता की भावना का अधिकाधिक रूप से प्रसार हो।

समाज के अंदर बुद्धिशाली वर्ग मानसिक सेवा के साथ ही साथ बौद्धिक धरातल पर भी चिंतन करता है कि आज समाज में जो अज्ञान है, निरक्षरता व अवैचारिकता है, दुष्चारित्र व अविवेक है, उसका परिमार्जन करना आवश्यक है। तब वह अपनी योग्यता के अनुसार समाज की बौद्धिक सेवा हेतु तत्पर बनता है। उस सेवा में बुद्धि तो प्रधान होती ही है साथ ही मन और शरीर का बल भी जुड़ा रहता है।

सामाजिक सेवाओं के प्रसंग में जब इन तीनों प्रकार की सेवाओं का दृष्टिकोण व्यापक बनता है, तब उस पर दार्शनिक पुट चढ़ता है और इस तरह सेवाभावना का क्रमिक विकास आध्यात्मिक भूमिका का निर्माण कर देता है, जहाँ पहुँचने पर चैतन्य देव की सेवा उसे परमात्मा की सेवा तक ले जाकर स्वयं परमात्म स्वरूप में प्रतिष्ठित कर देती है।

बौद्धिक सेवा पर एक दृष्टि

समाज की सेवा के धरातल पर यदि यश की आकांक्षा है तो उससे अनैतिकता पनपने लगती है। वर्तमान समाज में बौद्धिक सेवा पर ही एक दृष्टि डालें तो दिखाई देगा कि शिक्षक वर्ग में आवश्यक नैतिकता का अभाव है। अनैतिकता संबंधी विविध प्रसंगों से आज के शिक्षक का जीवन इतना रुग्ण बन रहा है कि वह छात्रों के जीवन को व्यवस्थित रूप प्रदान करने में समर्थ सिद्ध नहीं हो रहा है। इसका कारण है कि शिक्षक अपने स्वार्थ में डूबता है और छात्रों का जीवन मोड़ने में वांछित मानसिक प्रभाव नहीं बना पाता है। बौद्धिक सेवा होते-होते भी उसमें जो एक रस आना चाहिए, वह नहीं आता है। इसके अभाव में ध्यान और लक्ष्य का केंद्रीयकरण भी नहीं जम पाता है।

इस कारण समाज में जो बुद्धिजीवी वर्ग है, उसका प्रधान कर्तव्य है कि वह अपनी योग्यता के अनुसार बौद्धिक रूप से समाज की सेवा करे, क्योंकि विचारों में जब तक पवित्रता का समावेश नहीं होगा, आचार निर्मल नहीं बन सकेगा। आचार के निर्मल हुए बिना उच्चार शुद्ध नहीं होगा। विचार, आचार व उच्चार के निर्मल होने पर ही सच्चाई व ईमानदारी के साथ समाज की सेवा की जा सकती है। इस कारण बौद्धिक सेवा मूल में आवश्यक होती है। ऐसी निर्मलता के अभाव में न तो आत्मा की सेवा होती है और न ही परमात्मा की सेवा होती है।

सेवा का लक्ष्य स्थिर होना चाहिए

मैं यह कहता हूँ कि सेवा कहीं भी किसी की भी की जाए, सेवा का लक्ष्य स्थिर होना चाहिए। सेवा के लक्ष्य को इस रूप में समझना चाहिए कि सेवा हम दूसरों की नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपने आपकी ही कर रहे हैं। ऐसी मनोदशा में सेवा के कर्तव्य में न तो अभिमान प्रवेश करेगा और न ही कीर्ति का लोभ। इतनी सावधानी के साथ जब व्यक्ति सेवा के क्षेत्र में चले तो वस्तुतः वह सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़कर संघ और साधु की सेवा तथा वैयावृत्य का कर्तव्य उच्च रीति से पूरा कर सकता है। समाज व

संघ की स्थिति मुख्यतः उसके मुखियाओं पर निर्भर करती है। यदि मुखिया विश्वस्त हृदय वाला है तथा सामाजिक सेवा को निज की सेवा मानता है तो वह स्वार्थ व अभिमान की वृत्तियों का त्याग करके शुद्ध सेवा कर सकता है।

लक्ष्य स्थिर होने की स्थिति में ही सेवा-धर्म की गहनता हृदयंगम होती है। **‘सेवाधर्मो परम गहनो योगिनामप्यगम्यः’** इसीलिए कहा गया है कि सेवा धर्म की गहनता की उपलब्धि आसान नहीं होती है। योग साधना सहज हो सकती है किंतु सेवा धर्म के मर्म को पहचानना और पाना बहुत कठिन है।

एक सच्चे सेवक को समझना चाहिए कि मैं संघ की सेवा के लिए तत्पर बना हूँ, साधु की सेवा के लिए तत्पर बना हूँ और समाज व राष्ट्र की सेवा के लिए तत्पर बना हूँ तो उसमें कितनी ही बाधाएँ क्यों न आएँ, मैं उससे विचलित नहीं होऊँ। उसमें अभिमान व स्वार्थ नहीं आ पाए तथा दृढ़ता भर जाए। इस प्रकार जब संकल्प मजबूत हो और विश्वास अटल बन जाए, तब सेवा की सच्ची साधना संभव बनती है।

सेवा करने की कला

शारीरिक सेवा का प्रत्यक्ष रूप सामने आता है और उससे ही सेवा करने की कला भी प्रकट रूप में दिखाई देती है। शारीरिक सेवा के व्यक्त रूप में ही मानसिक व बौद्धिक सेवा का अव्यक्त रूप भी रहा हुआ होता है। सेवा करने की कला के संबंध में एक आदर्श रूपक मेदिनीपुर के न्यायाधीश का है। वे यद्यपि न्यायाधीश के पद पर थे तथापि उनके जीवन में सेवावृत्ति की प्रधानता थी। उनकी सेवावृत्ति मान व स्वार्थ से रहित, सत्कार व यश की लालसा से मुक्त तथा आत्मिक शुद्धि की स्थिति में चल रही थी।

एक बार ऐसा प्रसंग बना कि वे अपने बंगले के फाटक पर खड़े अपने चपरासी का इंतजार कर रहे थे। उनकी आँखें दूर-दूर तक ढूँढ़ रही थी। तभी उन्होंने देखा कि एक पागल कुत्ता उस चपरासी पर लपका और उसने

उसकी पिंडली काट खाई। न्यायाधीश महोदय उस चपरासी को वहीं लिटाकर उसकी पिंडली से जहर चूस-चूस कर फेंकने लगे। आप सोचिए और अपनी कल्पना, बौद्धिक-शक्ति व चरित्रशीलता को दौड़ाइए कि कहाँ तो इतने ऊँचे पद पर रहा हुआ न्यायाधीश और कहाँ वह एक चपरासी! फिर भी उसकी किस प्रकार की सेवा करने लगा! यह चपरासी की सेवा नहीं, स्वयं उसके जीवन का परिमार्जन था, उसकी बौद्धिक निर्मलता का प्रसंग था। यह सेवा करने की उच्च कला थी।

जब स्वस्थ होकर चपरासी न्यायाधीश के चरणों में गिरकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करने लगा तो न्यायाधीश ने कहा कि मैंने तुझ पर कोई एहसान नहीं किया है। मैंने तो अपने आपकी सेवा की है, अपने अंदर के दुःखों का निवारण किया है। अब मुझे अपने भीतर अधिक शुद्धि की प्रतीति हो रही है। तुझ में और मुझ में जो समान मूल स्वभाव रहा हुआ है, उसके प्रति समता भाव से ही मेरी यह सेवा हुई है। अभिप्राय यह है कि जब आंतरिक समता की प्रतिष्ठा हो जाए तो वहाँ विशेष शुद्ध भाव से सेवा की साधना हो सकती है। इसे ही सेवा की कला कहते हैं।

सेवा और फल की आकांक्षा

सेवक की यह मनोवृत्ति भी समझने व त्यागने लायक है कि सेवा तो पूरी बने या नहीं बने लेकिन उस सेवा का फल पाने की आकांक्षा तुरंत बन जाती है।

सेवा कार्य में ऐसी वृत्ति रखने का अर्थ है कि उसने सेवा का महत्त्व नहीं समझा और अपने आपको सेवाभावी समझने लग गया। यह सेवा है या विडंबना है? यह वस्तुतः आत्मिक शुद्धि है या अशुद्धि है? यह स्थिति सभी लोगों के लिए चिंतनीय है।

ऐसे सफल चिंतन के बाद ही आपको विदित हो सकेगा कि आध्यात्मिक सेवा ही सर्वोपरि होती है। ये जितनी अन्य प्रकार की सेवाएँ हैं, इस आध्यात्मिक सेवा के सहारे ही पल्लवित हो सकती हैं। यदि मनुष्य का आध्यात्मिक जीवन सुरक्षित है, अंतर्चेतना प्रबुद्ध है तो

समाज की सेवा का तात्पर्य है –
समाज के संगठन को इस प्रकार से
व्यवस्थित रखना कि उसमें एकता व
समता की भावना का अधिकाधिक
रूप से प्रसार हो।

वह शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक सेवा भी योग्यतापूर्वक संपादित कर सकता है।

आध्यात्मिक सेवा सर्वोपरि

संघ व साधु की वैयावृत्य करने के प्रसंग से भी स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि आध्यात्मिक सेवा ही सर्वोपरि होती है, जो सभी अन्य प्रकार की सेवाओं में शुद्ध बनाए रखने की प्रेरणा देती है। जब मनुष्य मुक्त हृदय से सेवा करता है तो उसके हृदय में उच्चकोटि की क्षमाशीलता व सेवा भावना का उदय होता है, जो उसे जीवन के सर्वोच्च विकास तक पहुँचा देती है।

इसी संदर्भ में नंदीसेन महाराज का प्रसंग आया है। यह प्रसंग उस समय का है, जब उन्होंने मुनि व्रत अंगीकार कर लिया था तथा वे ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य की आराधना के साथ सेवा करने के लिए तत्पर रहते थे। उनकी सेवा भावना इतनी उच्चकोटि तक पहुँची कि अपनी तपस्या भी करते और अति शुद्ध भाव से सेवा भी करते। उस शुद्ध सेवा की सुगंध पृथ्वी से भी ऊपर उठकर स्वर्ग तक पहुँची। इंद्र ने देवसभा में मुनि नंदीसेन की गहन सेवा की सराहना करते हुए कहा कि इनकी सेवा इतनी कठोर है कि उससे उन्हें कोई विचलित नहीं कर सकता है। सभी देवों ने इंद्र के कथन पर विश्वास किया परंतु एक देव शंकाशील बन गया कि क्या ऐसा भी हो सकता है? उसने मुनि को विचलित करके इंद्र को नीचा दिखाने का निश्चय किया।

सेवा की परीक्षा कितनी कठिन होती है?

नंदीसेन मुनि बेले के पारणे के लिए भिक्षा लाए थे और आहार लेने की तैयारी में थे, तभी उस शंकालु

एक सच्चे सेवक को समझना चाहिए कि मैं संघ की सेवा के लिए तत्पर बना हूँ, साधु की सेवा के लिए तत्पर बना हूँ और समाज व राष्ट्र की सेवा के लिए तत्पर बना हूँ तो उसमें कितनी ही बाधाएँ क्यों न आएँ, मैं उसमें विचलित नहीं होऊँ। उसमें अभिमान व स्वार्थ नहीं आ पाए तथा दृढ़ता भर जाए।

मिथ्यात्वी देव ने बाहर से अपनी वैक्रिय शक्ति से इस प्रकार आवाज दी कि तुम तो अपने खाने में लगे हुए हो और बेचारा एक वृद्ध साधु जंगल में पड़ा कराह रहा है। उसकी सेवा करने वाला वहाँ कोई नहीं है। यह सुनते ही उन्होंने अपने हाथ के पहले निवाले को मुँह की तरफ ले जाने की बजाय पात्र में डाला और पात्र में पानी लेकर जंगल में पहुँचे। वहाँ देव की वैक्रिय शक्ति मौजूद थी। एक वृद्ध संत कराह रहा था। मुनि वहाँ पहुँचे और सेवा-सुश्रूषा को तत्पर हुए। वह संत बोला- मेरे सारे कपड़े मल-मूत्र से भरे हैं। इन्हें साफ कर दो। उन्होंने उसके वस्त्रों को, उसके शरीर को साफ किया। तब वह बोला- मुझसे उठा नहीं जाता है। तब नंदीसेन मुनि ने उसे अपने कंधे पर उठाया और चलने लगे। किंतु उसने मल-मूत्र छोड़ने की स्थिति ऐसी बनाई कि नंदीसेन मुनि मल से लथपथ हो गए और भयंकर दुर्गंध से संपूर्ण वातावरण दूषित लगने लगा। किंतु मुनि नंदीसेन उसे उठाकर सेवाभाव व समभाव से अपने स्थान की ओर ले जा रहे थे। अपनी आत्मा के समान सबकी आत्मा को समझने वाले उस मुनि ने लगातार उस वृद्ध संत की सेवा की। वे भयंकर विषम परिस्थिति के सामने भी तनिक विचलित नहीं हुए।

जब देव की शंका पूरी तरह मिट गई तो उसने अपनी माया समेटी और देव रूप में उनके चरणों में गिर कर कहने लगा- सेवा की कितनी कठिन परीक्षा मैंने ली

और मैंने जान लिया कि आपकी सेवा आदर्श रूप है। इंद्र की आपके लिए सराहना शत-प्रतिशत सत्य थी। ऐसी ही उत्कृष्ट सेवा भावना स्व. आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. की थी। वे छोटे से छोटे संत की सेवा में पहुँच जाते थे। जलगाँव में मोतीलाल जी म.सा. की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। उनको मल-मूत्र का भी भान नहीं रहता था। तब गुरुदेव उनके पास पहुँचते, उनके कपड़े साफ करते और उनकी सेवा करते थे।

सेवा की उत्कृष्टता

महापुरुषों की सेवा ही उत्कृष्ट होती है। इस प्रकार सेवा में जुटने से तीर्थंकर नाम कर्म की प्रकृति का बंध हो सकता है। निरभिमान, निःस्वार्थ एवं शुद्ध सेवा से सबका जीवन मंगलमय बनता है और सेवा की गहनता तक पहुँचा जा सकता है। प्रार्थना के माध्यम से सेव्य-सेवक की दृष्टि लेकर सेवा की उत्कृष्टता को प्राप्त करना प्रत्येक भव्य आत्मा का कर्तव्य है।

साभार- नानेशवाणी-19 (ज्योतिर्मय की ज्योतिर्धारा) ❀❀❀

आज का मनुष्य पैसे के पीछे ज्यादा दौड़ता है, पर उससे तृप्ति नहीं होगी। एक व्यक्ति को पूछो कि तुझे कितने में तृप्ति होगी? दस हजार दे दिया जाए तो हो जाएगी तृप्ति? पच्चीस हजार से? लाख से? दस लाख से? उसे दस लाख भी दे दिए तो भी तृप्ति कहाँ? मनुष्य सोचता है - बस इतना कमा लूँ तो इतनी संपत्ति इकट्ठी हो जाएगी, फिर बैठकर धर्म-ध्यान करूँगा। वह गृहस्थाश्रम में रह रहा है। उसमें कितना इकट्ठा करना है? शायद अभी तो आप बोलने में अटक जाएँगे। एकांत का प्रसंग हो तो और आपसे पूछ लूँ कि कितना चाहिए? तो क्या बताएँगे? इस तृष्णा का कभी अंत आने वाला नहीं है। इस पैसे से वास्तविक प्यास बुझने वाली नहीं है। यह संपत्ति स्थायी सुख-शांति दे नहीं सकती।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.



करुणा भाव और आत्मसंस्कार

-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.

शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी,
विविध भंगी मन मोहे रे।
करुणा, कोमलता, तीक्ष्णता,
उदासीनता सोहे रे॥

देवाधिदेव तीर्थंकर प्रभु महावीर ने 'सर्वजंतु हितकरणी करुणा' के भावों से ओत-प्रोत भव्यात्माओं के कल्याणार्थ जो उपदेश दिया था, वह दिव्यदेशना के रूप में इतनी लंबी अवधि बीत जाने के पश्चात् आज भी हमारे मार्गदर्शन हेतु उपलब्ध है। वह देशना उपलब्ध है यह तो सौभाग्य की बात है परंतु चिंतन का विषय यह है कि क्या हम उसका उपयोग कर रहे हैं? खेद का विषय है कि हम ऐसा नहीं कर रहे हैं। हमने तो उस देशना को किताबों में सुरक्षित कर पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाई है। पर तीर्थंकरों के उपदेश पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने के लिए ही नहीं हैं, वे जीवन की शोभा बढ़ाने के लिए हैं। यदि उन्हें जीवन में आत्मसात् कर लिया जाए तो जीवन का उन्नयन हो सकता है, अन्यथा वे उपदेश आपके लिए क्या अर्थ रखते हैं। प्रभु ने इसी स्थिति को ध्यान में रखकर कहा था कि तुम्हारा जीवन असंस्कारित है। सोचना यह है कि असंस्कारित कैसे है? उस अवस्था से हम उपरत कैसे हो सकते हैं? कैसे हम संस्कारित बनें? संस्कारित बनना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि जब तक जीवन की मूलभूत अवस्थाएँ असंस्कारित हैं, तब तक आगे का पाथेय भी प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए सर्वप्रथम आवश्यकता

है जीवन को संस्कारित करने की। कवि आनंदधन जी ने संस्कारित जीवन हेतु ही भगवान शीतलनाथ की प्रार्थना को माध्यम बनाया। माध्यम अथवा निमित्त कोई भी हो सकता है लेकिन आवश्यकता होती है कि चैतन्य उसे निमित्त रूप में स्वीकार कर ले। नमिराजर्षि के लिए चूड़ी की खनखनाहट ही यह निमित्त बन गई। राजा करकंडू के लिए यह माध्यम वह सांड बना जो पूर्व में हष्ट-पुष्ट अवस्था में था किंतु बाद में इतनी दयनीय दशा में पहुँच गया कि भिनभिनाती मक्खियाँ उड़ाने तक की सामर्थ्य उसमें नहीं रही। उसे देखकर नृपति जागृत हो गए। निमित्त जीव-अजीव, जड़-चेतन, किसी को भी बनाया जा सकता है परंतु बनाने वाला तो चेतन ही होता है। आगम ऐसे दृष्टांतों से भरे पड़े हैं जो स्पष्ट करते हैं कि जब तक कोई निमित्त नहीं बनाया जाता और जब तक उसमें समाहित मूल तत्त्वों को ग्रहण नहीं किया जाता तब तक कल्याण पथ प्रशस्त भी नहीं हो सकता। कवि आनंदधन जी प्रभु की प्रार्थना की एक कड़ी 'परदुःख छेदन इच्छा करुणा' को प्रभु शीतलनाथ की कृपा हेतु निमित्त बनाते हैं। उनके प्रति समर्पणा निमित्त अथवा साधन बनकर जीवन को संस्कारित कर सकती है।

उस पंक्ति में करुणा का जो स्वरूप बताया गया है, उस पर विचार करने के बाद प्रश्न उत्पन्न होता है कि दुःख को कैसे दूर किया जाए? इस संबंध में भगवान का निर्देश है कि दुःख को दूर करना है तो दुःख के कारण को

भी जानना होगा। कारण को जाने बिना दुःख दूर नहीं होगा। वृक्ष तो ऊपर दिखाई देता है लेकिन उसका मूल जमीन में छिपा रहता है। दुःख रूप कार्य अथवा परिणाम को तो जानते हैं लेकिन कारण ओझल हैं, उसे देख नहीं पा रहे हैं। उस कारण को देख पाना अथवा जान पाना आवश्यक है क्योंकि यदि कारण का समूल उच्छेदन नहीं किया गया तो वह कारण आगे से आगे कर्म बनता चला जाएगा। इसलिए दुःख को दूर करना है तो पहले कारण को भी दूर करना होगा। इसके लिए कारण जानने की जिज्ञासा होना भी आवश्यक है। जब तक किसी कार्य को करने की भावना नहीं जगे तब तक कार्य संपादित नहीं हो सकता। **‘व्यक्ति सुख चाहता है और दुःख की अनुभूति करता है’** – इस कथन के शब्दों के मर्म को ग्रहण करें। सुख की कल्पना से दुःख की अनुभूति कैसे होती है इस स्थिति को समझें। व्यक्ति भविष्य के सुनहरे स्वप्न संजोता है और सुंदर कल्पनाओं में ही सुख व आनंद मानना है। कल्पनाओं का कोई भौतिक धरातल नहीं होता इसलिए वे यथार्थ में परिणित नहीं होती। मनुष्य को इससे असंतोष होता है और कल्पनाओं के टूटने से पीड़ा होती है। इसलिए कल्पनाओं की वास्तविकता समझकर उनसे दूर रहने का प्रयत्न करना चाहिए। एक व्यापारी प्रतिवर्ष तलपट मिलाता है और उसे प्रतिवर्ष घाटा ही घाटा लगता दिखता है। उसे समझ नहीं आता कि घाटा क्यों लग रहा है। वह खोज करता है। विद्यार्थी यदि निरंतर अनुत्तीर्ण होता रहता है तो उसके अभिभावक उसे उसी दशा में नहीं चलने देते बल्कि वे खोज करते हैं कि वह निरंतर अनुत्तीर्ण क्यों हो रहा है। संभव है दो-तीन वर्ष उसके लगातार अनुत्तीर्ण होने पर उसे विद्यालय में प्रवेश देने से भी इनकार कर दें। आप अन्वेषण करते हैं और अन्वेषण के बाद कारणों को दूर करने की कोशिश करते हैं। व्यापारी ने भी साझेदारी में व्यापार किया था, घाटा लगने पर उसने खोज प्रारंभ की। खोज में पहले दृष्टि टिकती है साझेदार पर कि कहीं वह

तो धोखा देकर अपना घर नहीं भर रहा है। आखिर इतना नुकसान क्यों हो रहा है, जबकि उसे एहसास है कि वह तो निष्ठा से कार्य कर रहा है। प्रत्येक वस्तु मुनाफे से बिक रही है और रोटेशन अच्छा है तो घाटा क्यों हो रहा है। हो न हो वह कुछ गड़बड़ी कर रहा है, इसी से मुझे घाटा उठाना पड़ रहा है। खोज करने पर ज्ञात हुआ कि वह साझेदार फर्म के प्रति ईमानदार नहीं है। इस स्थिति से निपटने के लिए आप दृढ़ कदम उठाएँगे। साझेदार से कहेंगे कि या तो हिसाब करके फर्म छोड़ दो या फर्म रखना चाहो तो मैं फर्म छोड़ देता हूँ। यह विकल्प तब ही रख पाएँगे जब संकल्प से पहले खोजबीन कर लेंगे। स्पष्टतः संकल्प होगा कि मैं साझेदारी में घाटा सहन नहीं कर सकता। फिर अलग से करने में समय अधिक नहीं लगेगा। पूज्य आचार्यदेव बोरीवली में चातुर्मासार्थ विराजमान थे। मुंबई में पहली बार पर्दापण हुआ था। पत्रकारों ने सुना तो पहुँच गए। उन्होंने आचार्य भगवन् से अनेक प्रश्न किए। उस दौरान आचार्य भगवन् ने जो बातें कही, अभिषेक नामक गुजराती पत्रिका में उस वार्ता का संक्षिप्त निष्कर्ष एक घटनाक्रम के रूप में छपा- **‘आचार्य श्री नानेश नु मजेदार सिद्धांत।’**

वह साझेदारी के रूप में ही उल्लेखित हुआ। गुरुदेव ने बताया कि जब वे गृहस्थ रूप में थे तब उन्होंने साझेदार से यह समझौता कर लिया था कि यदि कभी मुझे उत्तेजना आ जाए तो तुम चुप रह जाना, तुम्हें उत्तेजना आ जाए तो मैं चुप रह जाऊँगा। इसीलिए उसे कहा गया मजेदार सिद्धांत। यदि इसे परिवार में अमली रूप में काम में लें तो? यह हो कि यदि एक व्यक्ति उत्तेजित हो और शेष सदस्य शांत रहें तो परिवार सुरक्षित बना रहेगा। यदि एक उत्तेजित हो और साथ में सभी उत्तेजित हो जाएँ तो उस घर को बचा पाना मुश्किल होगा। आचार्यश्री की वह छोटी वय थी, धर्मग्रंथों का अध्ययन भी नहीं किया था लेकिन उनका समझौता सिद्धांत उनके भीतर की उपज थी। उन्होंने उसके ही आधार पर व्यापार

किया। आज भी यदि वह सिद्धांत परिवार में, समाज में, राष्ट्र में तथा जहाँ भी दो व्यक्ति मिलते हों वहाँ लागू हो जाए तो वह वरदान साबित हो सकता है। आज व्यक्ति के लिए जीवन अभिशाप बना हुआ है। परिवार में, समाज में सबको साथ लेकर चलना टेढ़ी खीर है। आचार्यदेव के जीवन को उर्वर रूप देने वाले सिद्धांत से अभिशाप को वरदान में बदला जा सकता है।

बात समझेदारी की चल रही थी। जिस साझेदारी में पाप हो उसे समाप्त करना ही समझेदारी हो सकती है। परदुःख-छेदन के सिद्धांत पर चलने पर भी ऐसा हो सकता है। उस स्थिति में 'पर' के साथ जो साझेदारी है उससे संबंध समाप्त कर पिंड छुड़ाएँ। अवसर आया है, जागें। परदुःख-छेदन का सिद्धांत तो अच्छा है लेकिन 'पर' किसे कहें? 'पर' व्यक्ति नहीं बल्कि पौद्गलिक पदार्थों के प्रति जो ममत्व, राग भाव या भीतर पैदा होने वाले वैभाविक भाव हैं वे ही 'पर' हैं। वे दुःख पैदा करते हैं। उस दुःख की अनुभूति करनी चाहिए। 'पर' का संयोग बना चेतना में, कर्म में साथ भागीदारी हुई, संसार में दुकान चलने लगी। वह बहुत समय तक बेसुध रहा, सारी पूँजी लगा दी, देखरेख भी पुद्गलों पर छोड़ दी। संपत्ति लगाकर सारा कार्य मन, वचन व काया को सौंप दिया। ये सब पौद्गलिक हैं। इन्होंने हमें जगह-जगह घुमाया मनमर्जी से, जहाँ चाहे वहाँ भटकाया लेकिन हमने यह चिंतन भी नहीं किया कि इस सांसारिक साझेदारी में हमें कितना घाटा लगा। प्रभु को केवलज्ञान प्राप्त हो गया, उनके सान्निध्य में आने वाले गणधरों को भी केवलज्ञान प्राप्त हो गया। क्या कारण है हमारे भीतर वैसी शक्ति प्रकट नहीं हो रही है? कारण यह है कि पुद्गलों ने अपना इतना साम्राज्य जमा लिया है और हमें इस कदर दास बना लिया है कि उन्हें छोड़ने की हम में क्षमता या तत्परता ही नहीं बन पा रही है।

पहले हम 'पर' के स्वरूप को जान लें। ये कर्म पुद्गल ही 'पर' हैं। हमने इन्हें लिफ्ट दी, कर्म को आसन दिया। हम यह भूल गए कि इनकी प्रवृत्तियाँ विकृत हैं,

इनसे बचकर ही रहना चाहिए। लिफ्ट पाकर ये सेंध लगाने का काम करने लगे। तुम सतर्क नहीं रहे इसी कारण ये हावी हो गए। अब चेतो, अभी भी समय है, 'पर' को जान लो। जानने पर दुःख-छेदन की इच्छा भी जागृत होगी। हम सुनते तो बहुत हैं कि सामायिक, पौषध, धार्मिक अनुष्ठान आदि करने चाहिए, हिंसा नहीं करनी चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए लेकिन क्या हिंसा छूटी, झूठ छूटा? दूसरे कामों से अपने को हमने अलग कितना किया? कवि कह रहे हैं- **'परदुःख छेदन इच्छा करुणा'**। कवि ने जो मार्मिक बात कही है, उसमें निहित बात को समझें। वे शाब्दिक चयन में ही नहीं रहे अपितु अर्थ की गहराई में भी उतरे। उन्होंने आत्मा के सत्चित् आनंदमय स्वरूप को प्राप्त करने के लिए प्रयास करने का संकेत दिया है। प्रभु ने तो कह दिया जीवन असंस्कारित है प्रमाद मत करो लेकिन जीवन को संस्कारित कैसे करें? पहले यह जानना होगा कि संसार में आत्मा किस कारण घूम रही है। कारण को जानें, 'पर' संयोग को जानें क्योंकि उसने जीवन को असंस्कारित किया है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र को ढक दिया है, हमें असहाय बना दिया। सोचें, उसका छेदन करने के लिए क्या करना चाहिए। उसे साझेदारी से अलग करना है या उसके साथ दुकान चलाते रहना है? छेदन की इच्छा जगती तो है और आपने जान लिया है कि झूठ में छवि बिगड़ती है। आप चाहते भी हैं कि ईमानदारी से काम करूँ लेकिन ये प्रवृत्तियाँ छोड़ने का साहस नहीं कर पाते। तब समझ लीजिए की हिंसा, झूठ आदि से अलग नहीं हो पाएँगे। हम कुत्सित प्रवृत्तियों को जानकर भी त्याग नहीं पाते, बेबस रह जाते हैं, यह दयनीय स्थिति है। प्रभु का उपदेश सुबाहुकुमार सुन रहे हैं। आप वर्णन सुन गए **'सह्यमिणं भंते, पत्तियामिणं भंते, रोएमिणं भंते'** अर्थात् भगवन्! मैं निर्ग्रथ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ, प्रतीति करता हूँ, रुचि करता हूँ लेकिन रुचि जब तक जगी ही नहीं कि मुझे अमुक कार्य करना है तब तक प्रवृत्ति नहीं होगी।

मैं पूर्व में बतला गया हूँ कि हमारी कल्पना सुख के लिए होती है। सोचते हैं कि यह करूँगा, वह करूँगा। कुछ व्यापार की कल्पनाएँ, कुछ परिवार संदर्भित कल्पनाएँ लेकिन क्या कभी यह भी कल्पना की है कि मुझे आत्मा के लिए कुछ करना है? संतों को ही नहीं, श्रावकों को भी पिछली रात्रि में ब्रह्ममुहूर्त में चित्तवृत्ति को संबोधित करते हुए कहना है- **“चैतन्य! तू जाग, सोच तू कहाँ से आया है? क्या करना है? कहाँ जाना है? तू कौन है?”** यदि तू कौन है इसे भी नहीं जाना तो आगे प्रवृत्ति कैसी होगी? भाई दर्शनार्थ आते हैं, पूछते हैं- महाराज मुझे पहचाना? मैं कहता हूँ भाई तुम्हें पहचानने से मतलब सिद्ध नहीं होगा। मेरे तुम्हें पहचानने या न पहचानने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। फर्क तब पड़ेगा जब तुम ‘स्व’ को पहचानोगे। ‘स्व’ को पहचाने बिना उद्धार नहीं होगा। यदि स्वयं को ही पहचान जाँ तो भी बेड़ा पार हो सकता है। क्योंकि कहा गया है- **‘जे एगं ज्ञाणड छे सखं ज्ञाणड’** अर्थात् यदि एक को जान लोगे तो सबको जान लोगे। कैसे जान लोगे? मान लीजिए मैंने एक व्यक्ति को जान लिया, हजार व्यक्ति उपस्थित हैं और वह व्यक्ति उनमें नहीं है तो मैं कहूँगा यह वह नहीं है, यह वह नहीं है। इस प्रकार निषेध रूप से सबका परिचय हो जाएगा। यहाँ कहा गया है कि एक आत्मा को जिसने सर्वांगीण रूप से जान लिया वह प्रत्येक पदार्थ को सर्वांगीण रूप से जान लेगा। इसलिए प्रभु कहते हैं- ‘स्व’ को जानो, यही करुणा भाव है। सम्यक्त्व के लक्षण में भी करुणा भाव कहा गया है। जब अपनी अनुभूति में परदुःख-छेदन की भावना प्रबल होती है, तब परभाव दूर हो जाते हैं। जब साझेदारी से घाटा दूर करने की अभिलाषा प्रबल बनती है तब वह वकील के पास पहुँच जाता है। उसे यदि फुर्सत नहीं हो तो भी दो सौ-चार सौ रुपए देकर तय करेंगे, परामर्श करेंगे कि घाटा दूर कैसे करूँ। हानि से उबरने की इच्छा तो सभी को जगती है परंतु जब तक आत्मशक्ति जागृत न हो तो मन का सान्निध्य उसे दबा देता है। आत्मशक्ति को प्रकट करना

है तो बाहर से हटकर बिखरी शक्तियों को केंद्रित करना आवश्यक है। चारों ओर जो हमारी शक्ति बिखर रही है जब तक वह केंद्रित नहीं होगी तब तक चाहे कितना ही प्रयत्न करें, पौद्गलिक प्रभाव से ऊपर उठ नहीं पाएँगे। पौद्गलिक प्रभाव से ऊपर उठने के लिए आवश्यक है शक्ति का केंद्रीयकरण। इस स्थिति को एक उदाहरण से समझें।

यदि यह समाचार मिलता है कि युद्ध छिड़ गया है और कभी भी बमबारी हो सकती है तब सभी को सचेत किया जाता है कि अपने घरों में जेड आकार की खाइयाँ खोद लें ताकि हवाई हमले के समय नागरिक उनमें शरण लेकर सुरक्षित रह सकें। रात्रि में लाइट नहीं जलाई जाए तथा सेना को आक्रमण की स्थिति में तैयार रखा जाता है। पता नहीं कब आवश्यकता पड़ जाए। इसी प्रकार हम व्यक्तियों को सावधान करते हैं कि न जाने कब जरूरत पड़ जाए, अतः हर समय सावधान रहो। सेनापति का कुशल नेतृत्व मिले तो पुद्गल से पिंड छूट सकता है। इसलिए परदुःख-छेदन हेतु ऊर्जा को संयोजित करें। आज हम भ्राँतियों के झूले में झूलने लगते हैं।

कभी-कभी व्यक्ति धार्मिक क्रियाएँ भी अपनी पाप-प्रवृत्तियों को छिपाने के लिए करता है ताकि दुनिया की निगाहों में वह धर्मात्मा बना रहे। कई बार वह दुकान में भी गोमुखी में हाथ रखकर माला फेरता रहता है। ग्राहक जब देखता है कि सेठ जी इतने धर्मात्मा हैं तो वह बेझिझक माल खरीद लेता है। यह तो घर पर जाकर देखने पर मालूम पड़ता है कि तोल कितना खरा था और माल कितना सही। व्यक्ति अपने पाप को छिपाने हेतु कैसे धर्मात्मा बन जाता है यह उस राजा के दृष्टांत से समझा जा सकता है, जिसने देखा चारों ओर उसका अपयश फैल रहा था। कहा जाता था कि वह अन्यायी है। राजा को चिंता हुई कि अपने संबंध में फैले अपवाद को कैसे दूर किया जाए। एक पुरोहित राजसभा में आता रहता था। उसने राजा को चिंतित देख चिंता का कारण पूछा। राजा ने मन की बात बता दी। उसने कहा-

“राजन्! यदि आप प्रतिदिन धर्मशास्त्र सुनें तो आपका पाप नष्ट हो जाएगा।” राजा ने कहा- “कौन सुनाएगा? मैं तो पढ़ना जानता नहीं हूँ।” पुरोहित ने कहा- “राजन्! सुनाने के लिए मैं तैयार हूँ, भला आपके लिए मनाही थोड़े ही हो सकती है।” राजा ने पूछा- “अच्छा, तुम सुनाओगे तो पारिश्रमिक क्या लोगे?” पुरोहित ने उत्तर दिया- “वैसे तो राजन् आपका आधार है, आपसे क्या माँगूँ लेकिन परिवार, बीवी-बच्चों को भी पालना पड़ता है। आप जो दक्षिणा देना चाहें, दे दें। मैं प्रतिदिन एक घंटे धर्मशास्त्र सुना दूँगा।” पुरोहित जी प्रतिदिन आने लगे। धर्मशास्त्र सुनाने के बाद रसीद काट देते और पुरोहित जी भंडारी से दो सोने की अशरफियाँ प्राप्त कर लेते। समय गुजरता रहा। एक दिन पुरोहित जी नाई की दुकान पर पहुँचे। नाई ने बाल बनाते हुए कहा- “आप प्रतिदिन राजा को धर्मशास्त्र सुनाते हैं तो आप क्या लेते हैं?” पुरोहित ने कहा- “मुझे दो अशरफी प्राप्त होती है।” नाई ने कहा- “तो पुरोहित जी, मैं भी आपसे दो अशरफी लूँगा क्योंकि आप भी एक घंटे सुनाते हैं और मुझे भी इस काम में एक घंटे का समय लग जाता है। अतः मैं भी दो अशरफियों से कम नहीं लूँगा।” पुरोहित ने कहा- “भाई, तुम्हारी और मेरी मेहनत में अंतर है तथा मैं राजा से माँगता नहीं हूँ, राजा स्वयं दक्षिणा के रूप में मुझे प्रदान करता है।” नाई ने कहा- “तो ठीक है। मैं भी आपसे कुछ नहीं लूँगा, जब चाहें तब दक्षिणा दे देना।” पुरोहित तो चला गया लेकिन नाई ने विचार किया- “अरे ये ब्राह्मण राजा से प्रतिदिन दो अशरफी वसूल करता है और ये राजा भी कुछ समझता नहीं। इतने से कार्य के लिए दो अशरफी? अब अपने को कुछ करना होगा।”

कहते भी हैं कि पक्षियों में कौआ और मनुष्यों में नापित बड़े चतुर होते हैं। नाई ने सोचा- “कोई चतुराई लगानी चाहिए।” वह राजा के पास पहुँचा और बोला- “राजन्! आपके शरीर से तो सुगंध आती है लेकिन ये पुरोहित आपसे परहेज करता है। मैं प्रतिदिन सेवा करते

हुए देखता हूँ। यह पुरोहित अपने आपको श्रेष्ठ समझता है।” राजा ने कहा- “भाई, वह तो धर्मात्मा है। ऐसी बात मुझे तो महसूस नहीं होती है।” नाई ने कहा- “राजन्! आप ने ध्यान नहीं दिया लेकिन ऐसे लोगों को परखने में मुझे देर नहीं लगती। आप उदार दिल वाले हैं इसलिए उस नजरिए से नहीं देखते। वह सिर्फ परहेज ही नहीं रखता बल्कि सुगंध में भी दुर्गंध की अनुभूति करता है।” राजा ने कहा- “इसका क्या प्रमाण है? तुम किस आधार पर यह कह रहे हो?” नाई ने कहा- “राजन्! जब वह आपके पास आता है तो नाक व मुँह पर कपड़ा बाँध लेता है। आपके प्रति उसके मन में दुगुच्छा के भाव हैं। जब कल वह आए, आप ध्यान रखना।” राजा ने दूसरे दिन ध्यान रखा, सचमुच पुरोहित जी ने मुँह-नाक बाँध रखे हैं। राजा ने सोचा- “हाथ कंगन को आरसी क्या।” राजा के मन में ग्रंथि बन गई। एक पर-भाव और जुड़ गया, छेदन तो दूर रह गया। “ब्राह्मण घृणा करता है नाई ने ठीक ही कहा था। मैंने इतने दिन ध्यान ही नहीं दिया। मन में पाप वासना है, घृणा है। वह कैसा धर्मात्मा है!” और उसके मन में अनेक प्रकार की कल्पनाएँ घूमने लगीं। राजा भूल गया कि वह धर्मशास्त्र सुन रहा था। यदि सुनने में ध्यान न हो तो व्यक्ति प्रत्येक कड़ी को अपने दृष्टिकोण से जोड़ने की कोशिश करता है, अपना गणित लगाता है। कौनसी बात किस पर फिट बैठती है, यह सोचता रहता है। परंतु जब तक बाकी, जोड़, गुणा, भाग का गणित चलता रहता है तब तक एक और एक ग्यारह नहीं बनते। लेकिन यदि इन चिह्नों को सर्वथा हटाकर लिखें- 1 और 1 यह ग्यारह बन जाते हैं। इस प्रकार संबंध जुड़ने पर दो शक्तियाँ साथ खड़ी हो जाती हैं, तब ग्यारह बन जाते हैं। राजा भी गणित लगा रहा था। धर्मशास्त्र सुनाने का समय पूर्ण हुआ, पुरोहित ने राजा को आशीर्वाद दिया और राजा ने भी रोज की तरह पचीं लिख दी। पुरोहित रवाना हुआ। उधर नाई को भी यह जानने की उत्सुकता हुई कि राजा ने कुपित होकर विप्रदेव को क्या दंड दिया है। खबर लेनी चाहिए। देखा,

ब्राह्मण तो प्रसन्न मुद्रा में चला आ रहा था। उसने कहा- “ब्राह्मण देवता, नमस्कार।” ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया। नाई के हाव-भाव से लग रहा था कि वह कुछ चाह रहा है। ब्राह्मण ने पर्ची उसके हाथों में दे दी और चले गए अपनी राह। नाई भंडारी के पास पहुँच गया और रसीद पेश कर दी। भंडारी ने कार्य पूरा किया।

दूसरे दिन ब्राह्मण दरबार में पहुँचा। राजा ने विस्मित होकर पूछा- “आपने कल दक्षिणा नहीं ली? पर्ची कहाँ है?” ब्राह्मण ने सोचा बात क्या है! फिर उसने कहा- “दक्षिणा तो मिल गई।” राजा विचार में पड़ गया कि क्या भंडारी मेरे निर्देश का पालन नहीं करता है? राजा ने ब्राह्मण से कहा- “तुम्हारे भीतर हिंसा व राग-द्वेष के भाव पनप रहे हैं। धर्मशास्त्र क्या सुनूँ, पहले स्वयं तो उन पर आचरण करो।” पुरोहित ने कहा- “महाराज! मुझे बात समझ में नहीं आई।” राजा ने कहा- “अरे, ये बताओ कि धर्मशास्त्र सुनाने मेरे पास आते हो तो मुँह पर कपड़ा क्यों बाँधते हो? यहाँ अपने दो के सिवाय तीसरा कोई नहीं रहता, स्पष्ट है कि तुम मुझसे घृणा करते हो।” पुरोहित ने कहा- “राजन्! आपके शरीर से तेल, चंदन, उबटन की सुगंध आती है। मैं तो कपड़ा इसलिए बाँधता हूँ कि कहीं मेरे मुँह का थूक धर्मशास्त्रों पर या आप पर न उछल जाए। आपका अपमान न हो जाए। उसके बचाव की दृष्टि ही मुख्य है।” राजा ने विचार किया- “नाई तो कह रहा था दुगुच्छा के कारण मुँह बाँधता है।” राजा विचार करने लगा कि भंडारी ने दक्षिणा क्यों नहीं दी। भंडारी को बुलाया गया। उसने कह दिया- “आपके निर्देशानुसार मैंने अपना कार्य किया है।” तब ब्राह्मण ने कहा- “कल की दक्षिणा नाई ने माँग ली थी, पर्ची वह ले गया था।” नाई को बुलाया गया। उसकी नाक पर पट्टी बाँधी थी। राजा ने पर्ची के माध्यम से भंडारी को आदेश दिया था कि पर्ची लाने वाले की नाक तत्काल काट दी जाए। भंडारी ने वही किया था। नाई ने निवेदन भी किया था कि अरे! यह क्या कर रहे हैं। भंडारी ने कहा- “मुझे नहीं

मालूम। राजा का आदेश है और पर्ची पर राजा के हस्ताक्षर हैं।” ब्राह्मण ने कहा- “राजन्! आपको दंड देने से पहले जानकारी तो कर लेनी चाहिए थी।” यह है पाप छिपाकर धर्मात्मा बनने का उपक्रम।

उदाहरण की बात तो अपनी जगह पर है परंतु हम विचारें कि ऐसा कैसे हुआ। निश्चित ही जहाँ असंस्कारित जीवन है वहाँ आवेश में व्यक्ति आपा भूल जाता है। जो दूसरों को दुःख देने का प्रयत्न करता है वह दूसरों को दुःखी कर पाए या नहीं लेकिन स्वयं को पहले ही दुःखी कर लेता है। प्रभु का इसलिए निर्देश है कि जीवन असंस्कारित है। सावधान हो जाओ, एक क्षण भी प्रमाद न करो। जब ‘पर’ से संयोग जुड़ता रहेगा, भीतर करुणा का स्रोत प्रवाहित नहीं होगा। कवि भी परमात्मा की स्तुति उस इच्छा को, संस्कारों को जागृत करने के लिए करते हैं। इच्छा क्या है? परदुःख-छेदन की इच्छा। कवि हमें बोध दे रहे हैं कि जब प्रभु ने करुणा को जागृत किया, तब उसे अपने तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि विशद् रूप से प्रसारित कर दिया। चारों ओर उसका फैलाव कर दिया। इस प्रकार विश्व के प्राणिमात्र के लिए उसे प्रवाहित किया।

हमें कामना करनी चाहिए कि प्रभु की स्तुति से वे गुण हमारे भीतर भी समाविष्ट हों। हमें प्रभु की दिशा में स्वयं को झुकाना है। आत्मशक्तियों को सचेत करना है। शक्ति यदि जागृत है तो पुद्गल हावी नहीं हो सकेंगे। केंद्र यदि मजबूत है तो आने वाली वृत्तियाँ हानि नहीं पहुँचा सकेंगी। यदि केंद्र ही कमजोर है तो वहाँ कोई भी शक्ति कारगर नहीं होगी। शक्ति को जागृत करने के लिए पुद्गलों के प्रभाव से मुक्त होना होगा और संसार भाव से मुड़ना होगा। दुनिया से पहले, ‘पर’ को सुधारने से पहले स्वयं को सुधारना होगा। वह करुणा जब स्वयं में व्याप्त हो जाएगी तब भगवान शीतलनाथ द्वारा दिखाए गए मार्ग पर हम मुस्तैदी से चल सकेंगे और जीवन के इष्ट को प्राप्त कर सकेंगे।

साभार- श्री राम उवाच-3 (चैतन्य की यात्रा) ❀❀❀

ऐसी वाणी
बोलिए



मधुर वचन

‘ऐसी वाणी बोलिए’

धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। ‘मित वचन’ पूर्ण होने के पश्चात् ‘मधुर वचन’ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय ही व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में

श्रावक का वचन व्यवहार (सार-संक्षेप)

A श्रावक बच्चे के साथ वचन एवं व्यवहार

DO (ऐसा करें)

- 1 अच्छे शब्दों का प्रयोग करें।
- 2 Politely बात करें।
- 3 किसी भी बात को स्पष्ट एवं सरल शब्दों में कहें, ऐसा न कहें जिससे Confusion Create हो।
- 4 बच्चों की बात सुनें, Good Listener में बताए अनुसार।
- 5 अच्छा कार्य पर उनकी सराहना करें। जिस अच्छाई की हम सराहना करेंगे, वो उसे Repeat करेंगे।
- 6 यदि बच्चों को आपने डाँटा हो तो बच्चे सोने जाए उससे पहले बात Clear करके या Sorry बोलकर माहौल को अच्छा बना दें।

DON'T (ऐसा न करें)

- 1 दबाव से कोई काम न कराएँ। काम कराने का Positive तरीका अपनाएँ।
- 2 बच्चों के Negative Point को बार-बार Highlight न करें। उन पर कोई Tag न लगाएँ।
- 3 किसी से उनकी तुलना न करें।
- 4 गलतियों के लिए बार-बार Torture न करें।
- 5 झूठे वादे न करें।
- 6 सुनी सुनाई बात पर विश्वास करके बच्चों पर न भड़कें। पहले उनसे बात करें, उनकी बात भी सुनें।

DO (ऐसा करें)

- 7 बच्चों को सिखाएँ कि गलती करना बुरा नहीं है, एक ही गलती को जानबूझकर बार-बार करना बुरा है।
- 8 बच्चों को सिखाएँ कि जो आज मुश्किल लग रहा है, प्रयास करने पर वो कल आसान लगने लगता है।
- 9 छोटी-सी गलती हो जाए और बच्चे आपको बताने आएँ तो कहें- 'कोई बात नहीं, आगे से ध्यान रखना।'
- 10 बच्चों की Feelings को महत्व दें। ये न कहें कि ये इतनी भी कोई बड़ी बात नहीं है, जितना तुम बोल रहे हो। सहज भाव से सुन लें।
- 11 बच्चों पर विश्वास करें, फिर कुछ बोलें।
- 12 भले ही आपकी आदत कुछ भी हो परंतु बच्चों को सच्ची बात बताएँ-जो सही है, उसे सही। जो गलत है, उसे गलत।
- 13 बच्चों को शिक्षा देने से पहले खुद वैसे बनें।

DON'T (ऐसा न करें)

- 7 बच्चों के सामने Negative बातें (निंदा आदि) न करें।
- 8 आपको किसी से द्वेष है तो उस द्वेष को बच्चों में न डालें। इससे उनका भविष्य बिगड़ सकता है।
- 9 हमेशा, कभी नहीं, मैंने पहले ही कहा था, जैसे शब्दों के Negative प्रयोग न करें।
- 10 बच्चों को कभी ये न कहें कि हम तुम्हारे कारण दुःखी हैं।
- 11 छोटी-छोटी बात पर न टोकें।
- 12 दूसरों के सामने बच्चों को न डाँटें।

B श्रावक परिवार के साथ वचन एवं व्यवहार

DO (ऐसा करें)

- 1 Respectfully बात करें।
- 2 समय-समय पर एक-दूसरे की साता पूछें।
- 3 सहयोग के लिए एक-दूसरे का आभार व्यक्त करें।
- 4 सबके विचार सुनें और सबसे राय लें।
- 5 सबकी अच्छाई देखें और उसका वर्णन करें।
- 6 अच्छी बातें एक-दूसरे के साथ शेयर करें। सहज भाव से, सुनाने के भाव से नहीं।
- 7 किसी को तकलीफ हो तो पहले उसकी बात सुनें और उसे साता पहुँचे वैसे ही शब्दों का प्रयोग करें।
- 8 जिसकी बात है, उसी से कहें।

DON'T (ऐसा न करें)

- 1 तुरंत बात काटने की आदत न रखें। यदि आप ऐसा करेंगे तो परिवार में शांति से जी नहीं पाएँगे।
- 2 दूसरों को दोष (Blame) न दें।
- 3 किसी ने गुस्से में कुछ गलत कह दिया तो खाना-पीना छोड़कर, मुँह फुलाकर न बैठें।
- 4 अपने विचार दूसरों पर थोपने की कोशिश न करें।
- 5 जब भी बैठें तब कोई नकारात्मक चर्चा (शिकायत, बहस) न करें। यदि ऐसा करेंगे तो धीरे-धीरे बैठना ही बंद हो जाएगा।
- 6 किसी को भी Neglect न करें, सबसे सहज व्यवहार रखें।
- 7 कोई व्यक्ति यदि हठाग्रही हो तो उसे ज्यादा समझाने का प्रयास न करें।
- 8 जो राई का पहाड़ बना देता हो, उसको भूल से भी उसकी गलती का एहसास कराने की कोशिश न करें।

DO (ऐसा करें)

- 9 जो हठाग्रही है उनके साथ सहज बातचीत करें और मुस्कराहट के साथ उनसे बोलें तो वे शांत रहेंगे।
- 10 कोई बात मन में हो, कोई समस्या हो तो उसे बड़ों के साथ शेयर करें। ऐसा कहा जाता है कि बड़ों को बताने से 50% Solution (सोल्यूशन) तो अपने आप हो जाता है। इससे उन्हें खुशी भी मिलेगी।

DON'T (ऐसा न करें)

- 9 किसी महिला को कभी उसके मायके वालों के विषय में कुछ न सुनाएँ।
- 10 परिवार में भाई-भाई, देवरानी-जेठानी आदि किसी की तुलना करके, एक को दूसरे से नीचा न दिखाएँ।
- 11 किसी की भी आँख में आँसू आए, ऐसा कोई वचन न बोलें।

C

विद्यार्थी-शिक्षक के साथ वचन एवं व्यवहार

1. कोरा कागज बनकर पढ़ें, अर्थात्—

- आप बहुत जानकार हैं, ये दिखाने की कोशिश न करें।
- 'ये सब तो मुझे मालूम है', ऐसा न कहें।
- उलटा Teacher को ही पढ़ाने न लग जाएँ।
(हाँ, यदि कोई आपसे पढ़ाने के लिए कहे तो आप पढ़ा सकते हैं)

2. बीच में न बोलें—

- जब पूछा जाए, तब बोलें। आपको कितना भी याद हो, तब भी बीच में न बोलें।
 - बोलना हो तो आज्ञा लेकर बोलें।
 - बोलते समय, समय का ध्यान रखें। अधिक लंबा न बोलें।
3. यदि पढ़ाने वाले की कोई बात गलत लगे और बताना बहुत ही जरूरी हो तो ही बताएँ, वरना गौण कर दें।
 4. गलती अकेले में ही बताएँ, पोलाइटली (Politely) बताएँ। साथ ही, गुण भी बताएँ। जैसे— आपने अच्छा पढ़ाया लेकिन ये Point मुझे ऐसे समझ में आ रहा है। आप बताएँ, क्या सही है?
 5. विषय आपकी समझ में आ रहा है या नहीं, इस विषय में स्पष्ट रहें। हाँ तो हाँ, ना तो ना। नहीं आने पर हाँ कहेंगे तो माया का दोष लगेगा।
 6. ज्ञान सीखने के बाद आभार व्यक्त करें – आपने हमें बहुत ज्ञान सिखाया, इसके लिए हम आभारी हैं। उपकारी का आभार मानने से गुणों की अभिवृद्धि होती है।

D

विद्यार्थी-विद्यार्थी के साथ वचन एवं व्यवहार

1. ज्ञान प्राप्त करते समय आपस में अनावश्यक बातें करके Disturbance Create न करें।
2. अपने साथ सीखने वालों का सहयोग करने के लिए तैयार रहें, बहाने न बनाएँ।
3. अपने साथ सीखने वालों में अल्प क्षयोपशम वाले विद्यार्थी के साथ भी उतने ही सम्मान से बात करें, जितना तीव्र क्षयोपशम वालों के साथ करते हैं।
4. किसी भी विद्यार्थी पर व्यंग्य न करें, हँसी न उड़ाएँ।
5. माया युक्त वचनों का प्रयोग न करें। याद होने के बाद भी मुझे तो याद नहीं हुआ, Short Tricks मालूम होते हुए भी मुझे नहीं आता आदि न कहें।

6. किसी को Blame न करें कि तुम्हारे कारण Class Slow चलती है।
7. विद्यार्थी को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित और प्रेरित करें। किसी का Will Power Weak हो, उसे बढ़ाने का प्रयास करें।
8. किसी की Help करने के बाद अपनी प्रशंसा न करें।
9. किसी विद्यार्थी ने आपकी छोटी-सी Help भी की हो तो उसका आभार व्यक्त करें। इससे आत्मीयता और उत्साह दोनों की अभिवृद्धि होती है।
10. आपस में Teacher की निंदा न करें, उनकी नकल न उतारें।
11. जोर-जोर से हँसकर संसार की बातें न करें। खासकर उस समय, जब आप धर्म-ध्यान में हों। बाहर भी न करें तो अच्छा।
12. Class में कोई दूसरा कुछ बोल रहा हो तो उसे बीच में टोकें नहीं और न रोकें। यह काम Teacher पर छोड़ दें।
13. आपस में किसी भी Point पर बहस न करें। जहाँ-जहाँ मतभिन्नता हो, वहाँ या तो सहज रूप से Discuss करें या फिर उस Point को छोड़ दें और ऐसा कहें- “हो सकता है आपकी बात सही हो, हम पूछकर Clear कर लेंगे।”
14. एक-दूसरे से ईर्ष्या न करें। याद रखें, आप अपने आत्म-कल्याण के लिए ज्ञान सीख रहे हैं, किसी से आगे होने के लिए नहीं। आपका यह विचार रहेगा, तो आप स्वतः सबके प्रति विनम्र रहेंगे।
15. कभी कोई बहस हो जाए तो माफी माँग लें। यह न देखें कि गलती किसकी है। यदि आपने Negative Reaction दिया हो तो माफी माँग लें। मनमुटाव रखेंगे तो ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाएँगे।



ज्ञान का खजाना, इसी में है पाना



- प्रश्न 1. इंद्र ने देवसभा में किसकी सेवा की सराहना की थी?
- प्रश्न 2. किसको जाने बिना दुःख दूर नहीं होगा?
- प्रश्न 3. 'आचार्य श्री नानेश नु मजेदार सिद्धांत' कौनसी पत्रिका में छपा था?
- प्रश्न 4. देवों की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति कितनी कही गई है?
- प्रश्न 5. 'साधु को एक ही देश में नहीं विचरने वाला होना चाहिए' यह किसमें लिखा गया है?
- प्रश्न 6. 'जिसको यह शंका हो रही है, वही तो तुम्हारी आत्मा है' यह किसने, किससे कहा?
- प्रश्न 7. 'आत्महित व साधना में बढ़ने की बात छोटा बच्चा भी कहे, तो उसकी सुनता हूँ' यह किसका कथन था?
- प्रश्न 8. उपकारी का आभार मानने से किसकी अभिवृद्धि होती है?
- प्रश्न 9. उगते हुए अंकुर, पत्ते, फूल की कली को क्या कहा गया है?
- प्रश्न 10. बहुश्रुतता का मूल कारण क्या है?

नोट :- जून 2024 के धार्मिक अंक में प्रकाशित प्रश्नोत्तरी के सही उत्तर व विजेताओं के नाम के लिए आगामी प्रकाशित होने वाले जुलाई 2024 समाचार अंक का अवलोकन करने का कष्ट करें।

- नोट :-
1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में से देने हैं।
 2. उत्तर के साथ पृष्ठ संख्या भी लिखनी अनिवार्य है।
 3. उत्तर किसी खाली पेज पर साफ सुथरे अक्षरों में लिखकर 5 अगस्त 2024 से पूर्व WhatsApp No. 9314055390 पर भेजें।
 4. सिर्फ उत्तर ही लिखें, प्रश्न नहीं लिखने हैं।



श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 जून 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रश्न 73 साधारण शरीरी जीवों की पहचान क्या है ?

उत्तर 1) जिस मूल को तोड़ने पर समान (चक्राकार) दिखाई दे, वह मूल अनंत जीव वाला होता है। इसी प्रकार कंद यावत् बीज तक के 9 भेदों का जानना चाहिए। साधारण शरीर के 10 भेदों का वर्णन 56-65 तक 10 गाथाओं में हैं।

नोट - फल, फूल, पत्ते आदि भी साधारण शरीरी होते हैं। इस पाठ से इस भ्रांत मान्यता का निराकरण होता है कि सिर्फ जमीन के नीचे उत्पन्न होने वाले मूल और कंद ही साधारण शरीरी होते हैं।

2) जिनकी गाँठ का भंगस्थान (टूटा हुआ स्थान) चूर्ण से व्याप्त हो।

3) जिन पत्तों की शिराएँ (नलिकाएँ, veins) प्रच्छन्न (अदृश्य) हों, वे चाहे दूध सहित हों या दूध रहित हों और

4) जिनकी संधि अदृश्य हों, वे अनंत जीवों वाले होते हैं।

प्रश्न 74 अनंतकायिक और प्रत्येक जीव वाली छाल की पहचान कैसे की जाती है ?

उत्तर 1) मूल के काष्ठ (मध्यवर्ती सारभाग, लकड़ी) से छाल मोटी हो तो छाल अनंत जीव वाली होती है, यदि छाल पतली हो तो प्रत्येक जीव वाली होती है।

2) कंद के काष्ठ (लकड़ी) से छाल मोटी हो तो छाल अनंत जीव वाली, यदि पतली हो तो प्रत्येक जीव वाली होती है।

इसी प्रकार स्कंध के काष्ठ और शाखा के काष्ठ का भी छाल के साथ कहना चाहिए।

नोट - मूल, कंद, स्कंध और शाखा में ही लकड़ी होती है, अन्य भेदों में लकड़ी नहीं होती है।

प्रश्न 75 जल और स्थल में उत्पन्न होने वाले पुष्पों में कितने जीव होते हैं ?

उत्तर कोई संख्येय जीवों वाले, कोई असंख्येय जीवों वाले और कोई अनंत जीवों वाले होते हैं। गाथा 86 से 96 में इनके नामों का उल्लेख है। इनमें भी किसी पुष्प के डंठल आदि एक जीव वाले होते हैं। जैसे -

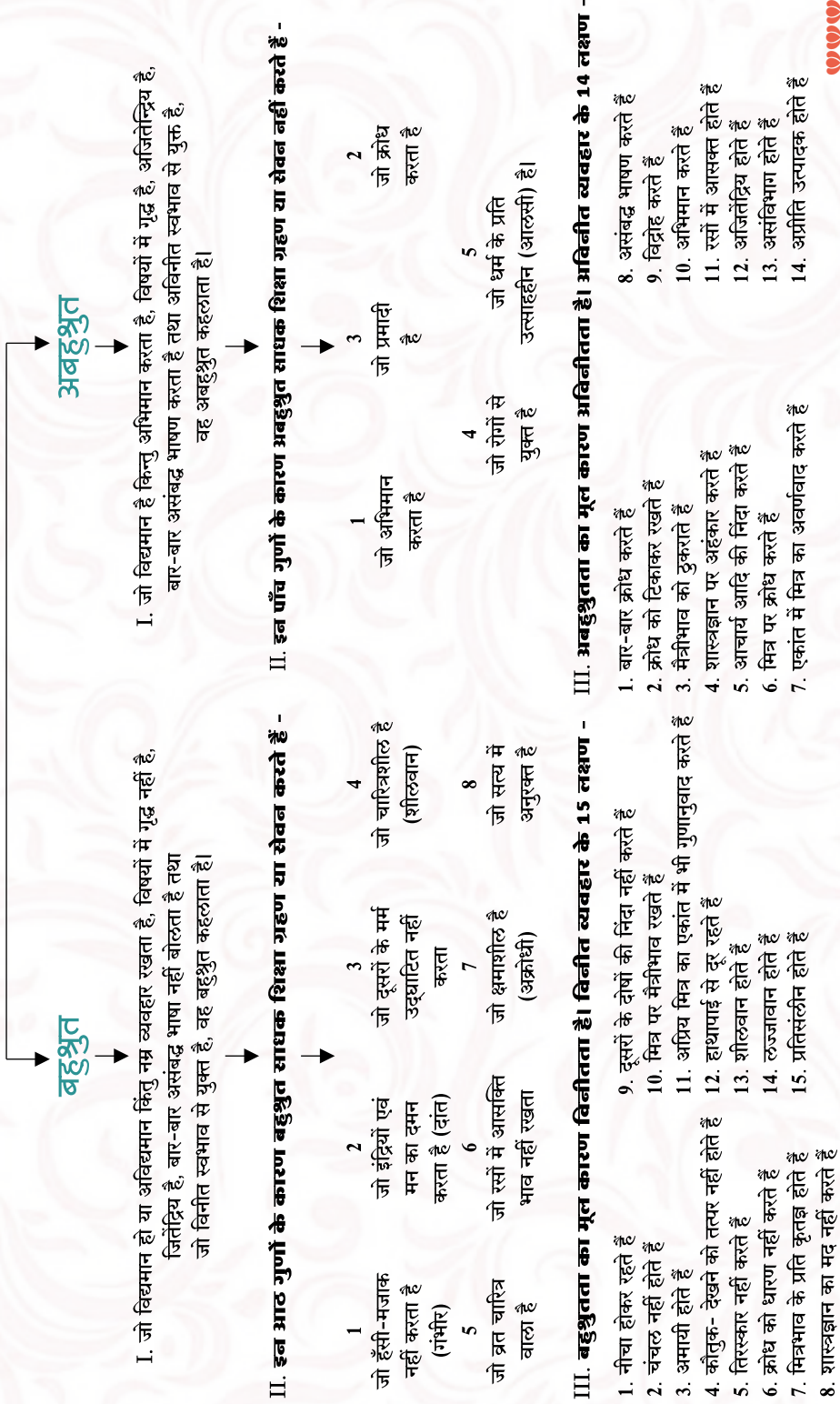
1) पद्म, उत्पल आदि कमलों के डंठल, पत्ते, कर्णिका, केसर और मिंजा एक जीव वाले होते हैं।

2) बाँस और इक्षुवाटिका के पत्ते एक जीव वाले किंतु पुष्प अनेक जीव वाले होते हैं।

प्रश्न 76 क्या बीज का जीव वनस्पति के मूल का जीव बनता है ?

उत्तर बीज की दो अवस्थाएँ होती हैं। यथा - योनि अवस्था और अयोनि अवस्था। जिस बीज में वह शक्ति विद्यमान रहे कि उसमें जीव उत्पन्न हो सके वह बीज योनि अवस्था वाला कहा जाता है। इसके विपरीत अवस्था वाला बीज अयोनि अवस्था वाला होता है। योनि अवस्था वाले बीज का जीव मरकर कदाचित् मूल का जीव बनता है कदाचित नहीं। जैसे- आम की गुठली बोए जाने पर गुठली का जीव मरकर पुनः उसी गुठली में नए शरीर के साथ उत्पन्न हो सकता है या अन्य गति में भी उत्पन्न हो सकता है।

'बहुरसुयपुज्जं' अध्ययन का संक्षिप्त चित्रण



विनय-मूर्ति



धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

15-16 जून 2024 अंक से आगे....

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है जिसमें आचार्य श्री हुवमीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र्य प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

जी वन-निर्माण में यात्रा का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। देशाटन शिक्षा का प्रधान-अंग माना गया है। केवल लंबी-लंबी और साहसपूर्ण यात्राओं के कारण बहुत से मनुष्यों का नाम इतिहास में अमर है। उनकी यात्राओं का वर्णन साहित्य की अमूल्य संपत्ति है।

जैन-संस्कृति में यात्रा को आध्यात्मिकता का रूप दिया गया है। जैन भिक्षु व भिक्षुणियों के लिए धर्म प्रचार का और जन-जीवन को ऊँचा बनाने का प्रधान साधन यात्रा है। इसे जैन परिभाषा में 'विहार' कहते हैं। उग्र-विहारी होना जैन श्रमण और श्रमणियों का प्रधान कर्तव्य है। चातुर्मास के अतिरिक्त साधुओं के लिए 29 रात्रि से अधिक और साध्वियों के लिए 58 रात्रि से अधिक एक जगह बिना किसी कारण के ठहरना शास्त्रों में निषिद्ध है। विहार करने से ही संयम व स्वास्थ्य की रक्षा हो सकती है। विशेषावश्यक भाष्य में लिखा है कि साधु को एक ही एक देश में विचरने वाला नहीं होना चाहिए। उसे किसी एक ही देश या नगर, ग्राम में आसक्ति रखकर बैठना नहीं चाहिए।

यात्रा का सबसे बड़ा लाभ आध्यात्मिक विकास

है। एक स्थान से दूसरे स्थान पैदल भ्रमण करने से अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ सामने आती हैं। कहीं पहाड़ आते हैं। कहीं कल-कल करती हुई नदियाँ प्रवाहित होती हैं। कहीं हरे-भरे खेत और कहीं बीहड़ जंगल। कहीं सघन वृक्षावली और कहीं सूखा रेगिस्तान। कहीं श्रद्धाभक्ति के भार से झुके हुए भद्र ग्रामीण स्वागत के लिए उद्यत मिलते हैं। कहीं क्रूरकर्मा डाकू लूटने के लिए तैयार रहते हैं। कहीं सिंह, व्याघ्र आदि हिंसक प्राणियों का सामना करना पड़ता है तो कहीं क्रीड़ा करते हुए भोले-भाले मृग दृष्टिगोचर होते हैं। यह सब देखकर प्रकृति का विशाल अध्ययन किया जा सकता है और समभाव की वृत्ति रखने का अभ्यास बढ़ाया जा सकता है।

बिलाड़ा चातुर्मास के पश्चात् साध्वीवर्याएँ विहार मार्ग के गाँवों में धर्म की भावनाएँ जगाती हुई जावरा पहुँची। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. विहार करती हुई प्रकृति का बड़ी बारीकी से अवलोकन करते उससे मिलने वाली शिक्षा का विचार किया करतीं। कहीं फलों से लदे हुए सुंदर वृक्ष मिलते तो आपके मन में विचार आता- "अहो! यह वृक्ष फलों के भार से झुक गया है, मनुष्य को भी ऐसी वृत्ति अपनानी चाहिए। जब उसके

पास ज्ञान व चारित्र की सामग्री काफी हो जाए तो उसे नम्र व विनयवान बनना चाहिए। वृक्षों को फल संपत्ति प्राप्त हुई है लेकिन वे इसका उपभोग स्वयं नहीं करते। किंतु दूसरों की भूख व प्यास मिटाकर तृप्ति करते हैं।

कहीं-कहीं देहातों में जाते तो आपको ग्रामीण जनता का विनय और भव्य भावनाओं से परिपूर्ण हृदय देखने को मिलता। आप विचार करतीं कि इनके मन में कितनी श्रद्धा है! कैसी सुंदर भावना है! सचमुच ये लोग भाग्यशाली हैं। मेरा हृदय भी विनय और श्रद्धा से भर जाए तो कितना अच्छा हो!

साध्वीवर्याएँ जावरा पधारीं। जावरा मालवा का एक विशिष्ट क्षेत्र है। यहाँ नवाबी-राज्य था। फिर भी जैनियों के यहाँ काफी घर हैं। जावरा संघ में साध्वीवृंद के आगमन का समाचार सुनकर हर्ष का सागर उमड़ने लगा। नवदीक्षिता महासती को देखकर लोगों में उत्सुकता का पार न रहा। जावरा संघ ने आपकी अगवानी की। यहाँ नवदीक्षिता महासती जी की दादा-गुरुणी जी वयोवृद्धा महासती श्री चंपा जी म.सा. वृद्धावस्था के कारण कई महीनों से विराज रही थीं। नवदीक्षिता महासती श्री आनंद कुमारी जी म.सा. की भद्रता, विनयभाव एवं सेवावृत्ति देखकर सभी साध्वियों ने प्रसन्नता प्रकट की। वयोवृद्धा महासती श्री चंपा जी म.सा. तो आपकी विलक्षण ज्ञानपिपासा व श्रद्धाशीलता देखकर बहुत ही आकर्षित हुईं।

आपकी प्रकृति में विनय की मात्रा बहुत अधिक थी। एक दिन किन्हीं महासती जी को दवा के लिए सांभर का सींग घिसना था। आपको कहा गया। आप किसी कार्य के लिए 'ना' कहना तो सीखी ही नहीं थीं। शरीर चाहे स्वस्थ हो या अस्वस्थ, हर एक काम में जुट पड़ती थीं। आहार-पानी लाना हो, पगचंपी करना हो, यहाँ तक कि बड़ी-नीत परठने आदि का काम भी होता तो नवदीक्षिता आनंद कुमारी जी एक धाय माता की तरह अपने आपको सेवा में हर समय तैयार रखती थीं। आपकी वाणी में अपूर्व माधुर्य था। आप नपी-तुली भाषा में बोलतीं और कभी मर्यादा से बाहर नहीं होती

थीं। यही कारण था कि आपने विनय का मंत्र पाकर अपने को ऊँचा उठाया। आपने अपने विनयशील स्वभाव के अनुसार वह सांभर का सींग घिसना शुरू किया। आपने पहले कभी घिसा नहीं था और न ही तरकीब जानती थीं। फिर भी घिसती गईं। हाथों में छाले पड़ गए, गाँठे-सी हो गईं, फिर भी आपने घिसना न छोड़ा। धीरे-धीरे घिस रही थीं। इतने में किसी साध्वीजी ने आकर आप से पूछा कि क्या बात है? मालूम होता है घिसते-घिसते हाथों में छाले पड़ गए हैं। तुमने कहा क्यों नहीं? हम घिस लेतीं। अब छोड़ दो।

यह सुनकर आप मौन हो गईं। कुछ भी जवाब न दिया और उन सतीजी महाराज के ज्यादा कहने पर घिसना छोड़ा।

आपका यह विनयभाव आज की नवदीक्षिता साध्वियों के लिए अनुकरणीय है। विनय के अभाव में कोई भी साधक ज्ञान का रसास्वादन नहीं कर सकता। पानी का स्वच्छ सरोवर हो और यदि प्यासा यात्री पानी पीने के लिए झुके नहीं बल्कि वह तना हुआ ही खड़ा रहे तो क्या कभी प्यास बुझ सकती है? नहीं, तीन काल में भी नहीं। इसी प्रकार ज्ञानी गुरुदेव ज्ञान के सरोवर हैं। उनके श्रीचरणों में ज्ञान की प्यास बुझानी हो, ज्ञान-जल प्राप्त करना हो तो पूर्णतः विनयभाव से झुक कर रहना चाहिए। अहंकारी शिष्य कभी सच्चा ज्ञान नहीं पा सकता। आज के साधक को यदि योग्य बनना हो तो **'मूलं धम्मस्स विणओ'** का मूल मंत्र अपनाना चाहिए।

मनुष्य की महत्ता इसी में है कि वह जहाँ कहीं, जिस किसी के पास रहे, अपने दिल को घुला-मिलाकर रहे। उसके ऊपर अपनी विनयशीलता का प्रभाव डाले और अपना व्यक्तित्व बढ़ावे। नवदीक्षिता महासती श्री आनंद कुमारी जी भी इन्हीं संस्कारों में पली थीं। उन्होंने अपने अहंकार व आलस्य तो इतनी दूर फेंक दिए कि वे कभी पास में न फटकते। बड़ी-बुढ़ी व नई उम्र की सभी साध्वियाँ आपकी प्रकृति से प्रसन्न रहतीं। धन्य है आपकी विनय की परिणति को!

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी
-क्रमशः 🍀🍀🍀



जय जिनेंद्र!

Jai Jinendra!

‘बालमन में उपजे ज्ञान’ में अब तक चारों बच्चों ने देखते ही देखते सामायिक सूत्र के कई पाठ याद कर लिए हैं, साथ ही साथ कई जीवन परिवर्तनकारी सिद्धांत भी सीख रहे हैं। आज के धारावाहिक में आप जानेंगे कि बच्चों ने क्या नया ज्ञान सीखा!

In ‘Baalman me Upje Gyan’ till now all the four children have learned many pairs of Samayik Sutra, along with it they are acquiring knowledge of life changing principles. In today’s episode you will come to know, what new lesson the children have learnt.

(शाम को सारे बच्चे एक साथ सौरभ के घर एकत्रित हुए)

(In evening all the four children have gathered at Sourabh’s home)

सौरभ की माताजी- जय जिनेंद्र, बच्चो! हम जो भी याद करते हैं उसे समय-समय पर दोहराना बहुत जरूरी है। इसलिए सभी याद किए पाठों को आप रोज दोहराएँ।

Sourabh’s Mother: Jai Jinendra, children! whatever we have learned, it is very important to revise it from time to time. Therefore, everyday revise the lessons that you have learned.

नितिन- आंटी! आप आज कौनसा पाठ सिखाने वाली हैं?

Nitin: Aunty! what lesson are you going to teach today?

सौरभ- आज हम णमोत्थु णं का पाठ सीखेंगे।

Nitin: Today we are going to learn the Sutra called ‘Namotthu nam’.

सौरभ की माताजी- कई पाठों के एक से अधिक नाम भी होते हैं। इस पाठ को ‘शक्रस्तव स्तुति’

भी कहा जाता है।

Sourabh's Mother: Many sutras have more than one name. Namotthu nam is also known/called as 'Shakrastav Stuti'.

नीलिमा- पाठ का नाम ही इतना मुश्किल है तो पाठ भी बहुत कठिन होगा। हम कैसे याद कर पाएँगे ?

Neelima : The name of the lesson itself is so different so the lesson will also be. How will we remember?

सौरभ- यह पाठ पूरे सामायिक सूत्र का सबसे बड़ा पाठ है।

Sourabh : This text/lesson is the largest in the entire Samayik Sutra.

पंकज- आंटी! क्या सौरभ सही कह रहा है ?

Pankaj : Aunty! Is Sourabh saying right?

सौरभ की माताजी- बच्चो! सौरभ बिलकुल सही कह रहा है। णमोत्थु णं का पाठ सबसे बड़ा पाठ है लेकिन याद नहीं होगा ऐसा कुछ नहीं है। आप सभी अपने पाठ्यक्रम के प्रश्नों के बड़े-बड़े उत्तर याद कर लेते हो तो ये भी बड़ी आसानी से याद हो जाएगा।

Sourabh's Mother: Children! Sourabh is absolutely right. Namotthu nam Sutra is the largest, but that doesn't mean it can't be learned. You all do remember such big answers in school then this will also be easy to remember.

नीलिमा- आप बिलकुल सही कह रही हैं आंटी!

Neelima : You are absolutely right Aunty!
(सौरभ की माताजी सभी बच्चों को णमोत्थु णं के पाठ का उच्चारण करवाती है)
(Sourabh's mother teaches the pronunciation of Namotthu nam Sutra to all the children)

प्रणिपात सूत्र

(PRANIPATA SOOTRA)

(णमोत्थु णं, शक्रस्तव) का पाठ

(NAMOTTHU NAM, SHAKRASTAV) KAA PAATH

णमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं,

Namotthu nam arihantaanam bhagavantaanam,

आइगराणं तित्थयाराणं सयंसंबुद्धाणं,

aaigaraanam tithayaraanam sayamsambuddhaanam,

पुत्रिसुत्तमाणं पुत्रिसस्त्रीहाणं पुत्रिस-वर-
 purisuttamaaṇam purisaseehaaṇam purisa-vara-
 पुंड्रिआणं पुत्रिस-वर-गंध-हत्थीणं,
 puṇḍariaaṇam purisa-vara-gandha-hattheeṇam,
 लीगुत्तमाणं लीगणाहाणं लीगहिआणं
 loguttamaaṇam loganaahaṇam logahiaaṇam
 लीगपईवाणं लीगपज्जीअगआणं, अभयदयाणं
 logapaevevaaṇam logapajjoagaraaṇam, abhayadayaāṇam
 चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं,
 chakkhudayaāṇam, maggadayaāṇam saraṇadayaāṇam,
 जीवदयाणं, बोहिदयाणं धम्मदयाणं,
 jeevadayaāṇam, bohidayaaṇam dhammadayaāṇam,
 धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं
 dhammadesayaāṇam, dhammanaayagaāṇam
 धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरन्त
 dhammasaaraheeṇam dhammavara-chauranta-
 चक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरणं गइ पइड्डा
 chakkavaṭṭeeṇam deevo taāṇam saraṇam gai paitṭhaa
 अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं विअट्ट-
 appaḍihaya-vara-naaṇa-dansaṇa-dharaaṇam viaṭṭa-
 छउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिण्णाणं
 chhaumaāṇam jinaaṇam jaavayaāṇam, tiṇṇaaṇam
 तादयाणं बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं,
 taarayaāṇam buddhaaṇam bohayaāṇam, muttaaṇam,
 मोयगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-
 moyagaāṇam, savvanṇooṇam savvadariseeṇam, siva-
 मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-
 mayala-marua-maṇanta-makkhaya-mavvaabaaha-
 मपुणरावित्ति सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाणं
 mapuṇaraavitti siddhi-gai-naamadheyam ṭhaaṇam
 संपत्ताणं (संपाविउकामाणं) णमो
 sampattaaṇam (sampaaviukaamaaṇam) ṇamo
 जिणाणं जिअभयाणं।
 jīṇaaṇam jiabhayaāṇam.

सौरभ की माताजी- बच्चो! कुछ दिनों बाद कक्षा थोड़ी जल्दी होगी।

Sourabh's Mother: Children, after a few days the class will be a little early.

नीलिमा- हमें पता है आंटी! क्योंकि चातुर्मास लगने वाला है।

Neelima: We know aunty that chaturmas is about to start.

नितिन- आप सभी चौविहार करते हैं?

Nitin: Do all of you do chauvihaar?

पंकज- फिर प्रतिक्रमण करते हैं?

Pankaj: Then Pratikraman?

(सभी बच्चे एक स्वर में बोलते हुए)

(All children say this together)

सौरभ- मम्मी! इस बार ये सभी भी रात्रिभोजन त्याग करेंगे।

Sourabh: Mummy! This time they will also do 'Ratribhojan Tyag' (abstain from eating in night).

सौरभ की माताजी- शाबास बच्चो, बहुत अच्छी बात है।

Sourabh's Mother: Well done children, this is very good thing.

(सभी बच्चों को घर जाने से पहले सौरभ की माताजी निम्न प्रतिज्ञाएँ करवाती हैं)

(Before all the kids go home, Sourabh's mother makes them do following pledges)

प्रतिज्ञा (PLEDGE)

1. अनुकूलता होने पर चार महीने रात्रिभोजन त्याग करें।

If favourable, do 'Ratribhojan Tyag' (don't eat after sunset) for all the four months.

2. सप्ताह में एक दिन मोबाइल का त्याग करें।

Abandon the use of mobile phone for one day in a week.

3. प्रतिदिन 10 मिनट पुराना धार्मिक पठन-पाठन दोहराएँ और एक नया सूत्र याद करने का लक्ष्य रखें।

Spend 10 minutes every day revising old religious readings and aim to memorize one new Sutra.





जैव दर्शन में पाँच शरीर : सिद्धांत व साधना

-डॉ. बी. रमेश गार्दिया, बेंगलुरु

औदारिक शरीर

वैक्रिय शरीर

आहारक शरीर

तैजस शरीर

कार्मण शरीर

आत्म-तत्त्व को जानने-समझने से पहले स्थूल शरीर को जानना समझना जरूरी है। जड़-चेतन का भेद-विज्ञान करना हर एक साधक का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य होता है। जैन आगम शास्त्र श्री प्रज्ञापना सूत्र के 21वें पद के 267 सूत्र में पाँच शरीर का विश्लेषण किया गया है। जैन दर्शन के अनुसार शरीर पाँच बताए गए हैं। यथा - (1) औदारिक शरीर - जो रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि आदि स्थूल पुद्गलों से बना हो, उसे औदारिक शरीर कहते हैं। (2) वैक्रिय शरीर - जो हाड़-मांस से रहित और जिससे विशेष प्रकार की क्रियाएँ होती हैं। यह लब्धि और भव प्रत्यय दो प्रकार का होता है। (3) आहारक शरीर - विशेष लब्धि धारी मुनि को आहारक शरीर प्राप्त होता है। (4) तैजस शरीर - भोजन को पचाने में सहायक शरीर को तैजस शरीर कहते हैं। विशेष साधना व तपस्या से तेजोलब्धि प्राप्त होती है। यह शीत व उष्ण दो प्रकार की बताई है। (5) कार्मण शरीर - कार्मण वर्गणाओं (पुद्गलों) से बना शरीर होता है। पाँच शरीर में यह सबसे सूक्ष्म व प्रमुख होता है। वास्तव में देखा जाए तो कार्मण शरीर ही सभी शरीरों का मूलभूत कारण है। कर्म सिद्धांत के अनुसार छठा कर्म है - नाम कर्म। उसकी एक उप-प्रकृति है - शरीर नाम कर्म। इस कर्म प्रकृति के उदय से सांसारिक जीवात्मा को औदारिक आदि पाँच शरीर प्राप्त होते हैं। इसके अलावा संहनन, संस्थान आदि भी मिलते हैं। जीव को कौनसा शरीर

किन वर्गणाओं से मिलेगा इसका निर्धारण कार्मण शरीर ही करता है। जैन विद्वानों की अवधारणा है कि औदारिक शरीर, अन्न व जल से बना है। इस शरीर को बनाए व टिकाए रखने में अन्न-जल के साथ-साथ श्वासोच्छ्वास की भी बहुत बड़ी भूमिका है। सब जानते हैं कि बिना आहार खाए जीवात्मा सालभर जीवित रह सकते हैं। बिना पानी के कुछेक हफ्ते जीवित रह सकती है। लेकिन बिना श्वासोच्छ्वास के तो एकाध घंटे जीवित रहना मुश्किल है। जैन दर्शन में पाँच शरीर पर बहुत कुछ कहा है। सो यहाँ पर इसके सिद्धांतों पर ज्यादा नहीं बताया गया है। श्री प्रज्ञापना सूत्र के अलावा अन्य सूत्रों में भी विस्तार से विवेचन किया गया है। जैसे जैन समुदाय में बहुत प्रसिद्ध व प्रचलित एक लघु पुस्तिका है - 25 बोल संग्रह। इसके सातवें बोल में पाँच शरीर पर कहा गया है। बहुत कम जैनियों को यह जानकारी होगी कि जैन धर्म के अलावा हिंदू दर्शन (वैदिक) में भी पाँच शरीर का वर्णन मिलता है। वहाँ उस शरीर न कहकर पंचकोष कहा गया है। जहाँ जैन धर्म में साधना का लक्ष्य अपनी शुद्ध आत्मा को जानने-समझने पर नितान्त जोर दिया गया है, उसी तरह वैदिक दर्शन में भी आनंदमयी कोष को जानने-समझने पर बल दिया गया है। जैन दर्शन अनुसार कार्मण शरीर की पूरी तरह निवृत्ति (अ-कर्म), के बाद में ही निजात्म स्वरूप की प्राप्ति संभव है। दोनों दर्शनों में एक तत्त्व समान है कि आत्म-साक्षात्कार की उपलब्धि हासिल

करने से पहले ज्ञान-आराधना व ध्यान-साधना नितांत आवश्यक है। आज का विज्ञान औदारिक शरीर की जड़ों तक भी नहीं पहुँच पाया। वैक्रिय, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर को खोज पाना बहुत मुश्किल है। आधुनिक विज्ञान शरीर की सबसे सूक्ष्म कोशिकाओं में डी.एन.ए. की खोज में लगा हुआ है। गहरी ध्यान साधना में डी.एन.ए. व कार्मण वर्गणाओं के बीच की समानता व असमानता का साधक भेद विज्ञान कर सकता है। वास्तव में शरीर में उठने वाले सूक्ष्म स्पंदन को साधक अनुभव करता है वहीं कर्म

वर्गणाओं के पुद्गल हैं। जैन दर्शन यह मानता है कि सांसारिक आत्मा की कर्म वर्गणाएँ निरंतर स्पंदित होती रहती हैं। यह बहुत गहराई का विषय है। विदंबना है कि जैन धर्म जो कभी विज्ञान का विषय रहा, एक सैद्धांतिक रूप में बचा रह गया। इसका प्रयोगात्मक पक्ष विलुप्त-सा हो गया। तैजस शरीर पर वेदों व उपनिषदों में बहुत गहराई से विश्लेषण किया गया है। जैन पूर्वाचार्यों ने भी भगवती, आचारांग आदि अनेक आगम शास्त्रों में इसका बड़ा उल्लेख किया है।



बिना देह का यथावत् पालन किए संयम-साधना भी संभव नहीं है। कहा भी गया है – ‘शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्’ अर्थात् शरीर धर्माराधना का प्रथम साधन है। इस प्रकार देह-साधन के बिना धर्म-साधन नहीं हो सकता। यह देह-साधन आहार के बिना संभव नहीं है और आहार के लिए उपासक को गृहस्थजनों पर आश्रित रहना पड़ता है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

// जय गुरु नाना //

// जय महावीर //

// जय गुरु राम //

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

समता छात्रवृत्ति योजना
(कक्षा 1 से 12 तक)

– साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए –

- * जैन संस्कार पाठ्यक्रम की प्रमाण-पत्र की प्रति।
- * जैन साधुमार्गी ग्लोबल कार्ड बना हुआ होना अनिवार्य है।
- * छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हो।
- * छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के विद्यालय के खाते में प्रदान की जाएगी, इसलिए विद्यालय के बैंक खाते का विवरण उपलब्ध करवाएं।

संपर्क सूत्र : 6375633109

तीनों इकाई के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण एवं स्थानीय अध्यक्ष/मंत्री से करबद्ध निवेदन है कि अपने क्षेत्र में समता छात्रवृत्ति की प्रभावना करें, जिससे ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी लाभान्वित हो सकें।

पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि श्रीसंघ व महिला समिति की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

फॉर्म के लिए यहाँ स्कैन करें

Please Scan



महत्तम उद्देश्य :

महापुरुष का निर्माता

-पद्मचन्द गाँधी, जयपुर



समुद्र सब के लिए एक है। कोई मोती चुनता है, कोई मछली ढूँढ़ता है, कोई चरण धोता है और कोई लहरों का आनंद प्राप्त करता है। ऐसा ही हमारा जीवन है। लक्ष्य हमारी प्रबल इच्छाओं की अभिव्यक्ति है और उसे पूरा करने के लिए जो क्रियाएँ हैं, वह उसका उद्देश्य। कोई व्यक्ति दार्शनिक, व्यापारी, अध्यापक, वकील, प्रशासक, संयमी साधक, आराधक या अरिहंत बनना चाहता है। सोचना व्यक्ति को है कि उसका उद्देश्य क्या है। बहुत सारे उद्देश्यों की एक बास्केट व्यक्ति के जीवन में रहती है लेकिन महत्तम उद्देश्य, प्रथम प्राथमिकता किसे चुनता है, यह व्यक्ति पर निर्भर है। जो वह बनना चाहता है उसकी क्षमता कितनी है, सामर्थ्य कितना है, इसका आकलन जरूरी होता है। इसके लिए अपने गुणों की मानसिक सूची बनाकर अपने जीवन में उतारना जरूरी है। ये गुण हैं - परिश्रम, उत्साह, लगन, आध्यात्मिकता, ईमानदारी, सहिष्णुता, सृजनात्मकता, प्रसन्नता, धार्मिकता आदि।

कल्पना करो कि तुम क्या गुण अपने आपमें उतारना चाहते हो। करते जाओ कल्पना और तुम पाओगे कि तुम्हारे जीवन में एक चमत्कार घट जाएगा तथा आकांक्षा पूर्ण होगी।

- विलियम शेक्सपियर

ऊँचा लक्ष्य रखो तो तुम पाओगे कि प्रकांड शक्तियाँ तुम्हारी अनुगामी बन जाएँगी।

- नॉर्मन विंसेंट

महत्तम उद्देश्य का स्वरूप

महत्तम उद्देश्य प्राप्ति हेतु बहुत बड़े सपने देखना आवश्यक है, कल्पना करना आवश्यक है। ऐसे व्यक्ति की तसवीर अपने मानस पटल पर अंकित करना जरूरी है, जो आप बनना चाहते हैं। यह तसवीर ऊँची उड़ान का प्रतीक हो। जो यथार्थवादी भी हो। मन की उड़ान भरे, सिद्ध करे, सपनों की उड़ान के लिए आकाश भी छोटा पड़ जाए। विलियम शेक्सपियर ने लिखा है - “कल्पना करो कि तुम क्या गुण अपने आपमें उतारना चाहते हो। करते जाओ कल्पना और तुम पाओगे कि तुम्हारे जीवन में एक चमत्कार घट जाएगा तथा आकांक्षा पूर्ण होगी।” नॉर्मन विंसेंट की जबरदस्त राय है - “ऊँचा लक्ष्य रखो तो तुम पाओगे कि प्रकांड शक्तियाँ तुम्हारी अनुगामी बन जाएँगी।”

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा - “सपने वो नहीं जो आप सोते समय देखते हैं, सपने वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते। अपने मिशन में कामयाब होने के लिए आपको उद्देश्य पूर्ति हेतु एकाग्रचित्त होकर निष्ठावान बनना होगा। यदि सूर्य की तरह चमकना है तो सूर्य की तरह तपना भी पड़ेगा।” जब सपना निश्चय कर

लिया जाता है जो उसे साकार करने के लिए आवश्यक उसका भौतिक स्वरूप क्या है अर्थात् उसे प्राप्त करने के लिए आपके पास क्या साधन है, आपकी क्षमता कितनी है। दूसरा चरण है मानसिक स्तर अर्थात् आपको अपना सपना पूरा करना है। मन से देखें आप उसे पूरा कर रहे हैं अर्थात् सकारात्मक सोच व दृढ़ता जरूरी है। तीसरे चरण में उसे भावना से जोड़ना है, उस खुशी का अहसास करना है जो आपको प्राप्त हो रही है। आपको एक सफल पात्र का अनुभव करना है। चौथा चरण ऊर्जा के संरक्षण का है अर्थात् जो परिणाम है, सफलता है, उसको अनुभव करता है।

परमहंस योगानंद जी ने कहा है - “आपके पास जो कुछ है, वह अपने लक्ष्य पर लगा दीजिए और फिर देखिए कि अदृश्य शक्ति आपकी कैसे मदद करती है। यही ऊर्जा आपके सपने को साकार करती है। यही ऊर्जा परिवर्तन का सिद्धांत है।”

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा - “एक विचार कर लो, उस विचार को अपना जीवन बना लो, उसके बारे में सोचो, उसके सपने देखो, उस विचार को जीओ, अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों व शरीर के हर हिस्से को उन विचारों में डूब जाने दो और बाकी सभी विचारों को किनारे रख दो, यही सही रूप से सफल होने का तरीका है।”

जीवन के उद्देश्य को कैसे ढूँढ़ें

उद्देश्य कोई रेडिमेड वस्तु नहीं है, जो कहीं पर भी मिल जाए। हर व्यक्ति को अपना उद्देश्य निर्मित करना होता है। जीवन तो एक कैनवास की तरह है, जिसमें

सपने वो नहीं जो आप सोते समय देखते हैं, सपने वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते। अपने मिशन में कामयाब होने के लिए आपको उद्देश्य पूर्ति हेतु एकाग्रचित्त होकर निष्ठावान बनना होगा। यदि सूर्य की तरह चमकना है तो सूर्य की तरह तपना भी पड़ेगा।

— डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

आपके पास जो कुछ है, वह अपने लक्ष्य पर लगा दीजिए और फिर देखिए कि अदृश्य शक्ति आपकी कैसे मदद करती है। यही ऊर्जा आपके सपने को साकार करती है। यही ऊर्जा परिवर्तन का सिद्धांत है।

— परमहंस योगानंद जी

हमको ही रंग भरकर चित्र उभारना है। मनुष्य इसके लिए स्वतंत्र है। वह महापुरुष भी बन सकता है, महानायक व खलनायक भी। अतः हे साधक! सृजनात्मक बन, कुछ रचना कर और उसमें आनंद प्राप्त कर अपनी स्वतंत्रता का उपयोग कर। ओशो ने कहा - “जीवन तो कोरा कागज है। जो लिखोगे, वही पढ़ोगे।” उस पर गीत लिख सकते हो, उस पर गालियाँ लिख सकते हो। दोनों ही एक वर्णमाला के अक्षरों द्वारा लिखा गया है। वर्णमाला तो निष्पक्ष है, निरपेक्ष है। कलम भी निष्पक्ष है तथा निरपेक्ष है। जीवन का महत्तम उद्देश्य क्या है? कैसे जीना है, यह महत्त्वपूर्ण है। प्रभु महावीर, बुद्ध, ईशु, मोहम्मद, राम, कृष्ण ऐसे ही महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन का महत्तम उद्देश्य ढूँढ़ा। उन्होंने जीवन की दुर्गंध को सुगंध में बदला। प्रभु महावीर ने कहा - “तुम्हारे भीतर अनंत शक्ति है, अनंत क्षमता है।” उसे उजागर करने का सम्यक् पुरुषार्थ करें तथा कार्य का परिणाम नियति पर छोड़ दें। क्योंकि क्रिया से फल की उत्पत्ति होती है और क्रिया उद्यम (पुरुषार्थ) के अधीन। सूत्रकृतांगसूत्र 2.2.1 में कहा है - “हे वीर पुरुष! भाग्य के भरोसे मत रहो। पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थ करने पर भी कार्य सिद्ध नहीं होता है तो फिर से विचार करो कि मेरे पुरुषार्थ में कहाँ पर कमी रही, उसे निकालकर फिर से पुरुषार्थ करो।” ये पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं -

**तू ही मूर्तिकार स्वयं का, तू ही है पाषाण।
तू ही छैनी और हथौड़ा, कर खुद का खुद निर्माण।।**

महत्तम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पदचिह्नों पर चलना नहीं, स्वयं के पदचिह्न बनाने पड़ते हैं।

प्रस्थान बिंदु से लक्ष्य बिंदु तक की यात्रा स्वयं को ही करनी पड़ती है।

जीवन का महामंत्र

जीवन का महामंत्र है - लक्ष्य प्राप्ति के बाद जीवन का **श्रेष्ठतम उपयोग**, जो जीवन प्रबंधन द्वारा किया जा सकता है। आई.ए.एस. बनना लक्ष्य हो सकता है लेकिन इस सेवा का श्रेष्ठतम उपयोग ईमानदारी, वफादारी, जनकल्याण, सर्वहित होना, उसके जीवन का उद्देश्य होता है। यदि भ्रष्टाचारी बनता है तो लक्ष्य पर भी महत्तम उद्देश्य तक नहीं पहुँच पाता। अतः यदि लक्ष्य में आत्मा हो तथा उद्देश्य में व्यवहार व कल्याण हो तो जीवन के महामंत्र को कारगर कर सकते हैं। जीवन महामंत्रों की साधना करके ही जीवन के रहस्यों को जाना जा सकता है, दुर्बलताओं पर विजय पाई जा सकती है तथा चेतना की शिखर यात्रा संभव कर सकता है। जीवन एक तपोभूमि है। जीवन वही निखारता है जो तपता है। जो कष्टों, कठिनाइयों व संघर्षों से लड़ सकता है, प्रतिकूलता में भी अनुकूलता का आनंद प्राप्त करता है। वही व्यक्ति संसार में श्रेष्ठ बनता है जो कठिनाइयों में हँसना जानता है, जो तपस्या में भी आनंद मानता है, जो जीवन के मूल्यों में अभिवृद्धि करता हुआ आगे बढ़ता है। जीवन के महत्तम उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए साधना, पात्रता को जागृत करना एवं सतत अभ्यास की आवश्यकता है।

एक विचार कर लो, उस विचार को अपना जीवन बना लो, उसके बारे में सोचो, उसके सपने देखो, उस विचार को जीओ, अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों व शरीर के हर हिस्से को उन विचारों में डूब जाने दो और बाकी सभी विचारों को किनारे रख दो, यही सही रूप से सफल होने का तरीका है।

— स्वामी विवेकानंद जी

जीवन तो कोरा कागज है। जो लिखोगे, वही पढ़ोगे।

— ओशो

हमारा जीवन ऊर्जा का महासागर है। जीवन की सफलता परमात्मा की अनंतता को पाने में है। बीज जब तक वटवृक्ष बने नहीं, आकाश की विशालता को मापे नहीं तथा समुद्र की गहराई को छुए नहीं, जीवन की अनंतता अधूरी है। जीवन के हर मोड़ पर चुनौती है। जो इसे आशीर्वाद में परिवर्तन कर लेता है, महान बन जाता है। हमारा जीवन कर्मप्रधान है। कर्म ही हमारे जीवन का परिचय देने वाला है तथा कर्म से ही जीवन परिभाषित होता है। राग व द्वेष के मायाजाल में जीवन यापन करने वाले अपने उद्देश्य तक नहीं पहुँच पाते क्योंकि कर्मों का बंध इन्हीं से होता है। उत्तराध्ययन सूत्र अ. 32 स्पष्ट करता है - “राग बंधन है, जेल है। द्वेष व्यक्ति को इनसान बनने नहीं देता और राग व्यक्ति को भगवान तक पहुँचने नहीं देता। जो भँवरा काठ को काटकर आर-पार हो जाता है, वही भँवरा फूल के पराग की राग में बंद हो जाता है।” व्यक्ति को तीन प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हैं, जानने की (सम्यग्ज्ञान), संवेदन करने की (अनुभव सम्यग्दर्शन) तथा क्रिया करने की (सम्यग्चारित्र), इन तीनों शक्तियों का दुरुपयोग बंधन तथा इन तीनों का सदुपयोग मुक्ति व वीतरागता है, जिसे अपनाकर व्यक्ति समस्त दुःखों से मुक्त बन सकता है।

महत्तम उद्देश्य प्राप्ति के आयाम

साधक तीन प्रकार के चिंतन से अपना उद्देश्य प्राप्त कर सकता है -

(1) दृष्टि चिंतन - संसार में रहता है लेकिन भीतर में संसार बसता नहीं। बाजार से गुजरता हूँ लेकिन बाजार खरीदता नहीं। राजा नमिराज को केवल चूड़ियों की खनक से बोध मिल गया। जब समझ में आ गया - जहाँ अनेक हैं, वहाँ संघर्ष है। जहाँ एक है, वहाँ शांति है, एकत्वभाव है। निर्लिप्तता का भाव व

समरसता का होना जरूरी है।

(2) **दृश्य चिंतन** - संसार एक दृश्य है, जो नश्वर है। क्षणिक आँख बंद होते ही समाप्त हो जाता है। अतः इसे जो समझता है, जो दृश्य है, वह नश्वर है। ऐसे चिंतन से वह अपने उद्देश्य से भटक नहीं सकता।

(3) **देशना चिंतन** - अपना महत्तम उद्देश्य वीतरागता को पाने के लिए राग का त्याग जरूरी है। स्थूलभद्र का उदाहरण स्पष्ट करता है कि वह कोशा नामक गणिका के यहाँ चातुर्मास करके भी रागमुक्त व वीतरागी बने रहे। सच्चा साधक निमित्त मिलने पर भी विकारों से घिरता नहीं है। अतः हमें अपने विकारों

**हे वीर पुरुष! भाग्य के भरोसे मत रहो।
पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थ करने पर भी कार्य सिद्ध नहीं
होता है तो फिर से विचार करो कि मेरे पुरुषार्थ में
कहाँ पर कमी रही, उसे निकालकर फिर से
पुरुषार्थ करो।**

- सूत्रकृतांग सूत्र 2.2.1

**राग बंधन है, जेल है। द्वेष व्यक्ति को
इनसान बनने नहीं देता और राग व्यक्ति को
भगवान तक पहुँचने नहीं देता। जो भँवरा काठ
को काटकर आर-पार हो जाता है, वही भँवरा
फूल के पराग की राग में बंद हो जाता है।**

- उत्तराध्ययन सूत्र अ. 32

पर विजय पाना है। महापुरुषों ने सदैव इसी की देशना दी है। मेघमुनि जब ठोकरों से व्यथित हो जाते हैं, तब महावीर की देशना से अपने भव को सुधार लेते हैं। श्रीमद् अंतकृद्देशांग सूत्र के 90 साधक देशना चिंतन से ही जीवन के महत्तम उद्देश्य को पाकर धन्य हुए, सिद्ध-बुद्ध व मोक्षगामी बने।

इस प्रकार स्पष्ट है जीवन में महत्तम उद्देश्य यदि है तो लक्ष्य तक पहुँचने के बाद अपने उद्देश्य को किस तरह मंगलमयी बनाते हैं। उसे और कितना बेहतर कर सकते हैं। इसी धारणा से महापुरुषों का निर्माण होता है।

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'महत्तम परिवर्तन'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव व संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नंबर हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक व सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ - लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम



9314055390



news@sadhumargi.com



सम्यक्त्व की प्रगाढ़ता : एक महती आवश्यकता



-गणेश इंगरवाल, चित्तौड़गढ़

सम्यक् शब्द का अर्थ है - यथार्थ, परिपूर्ण, सही, सत्य, अच्छी तरह आदि। सम्यक्त्व को सम्यक् दर्शन, सम्यक् दृष्टि, समकित और बोधि भी कहा गया है। जैन दर्शन में इसे दो दृष्टियों में समझाया गया है - व्यवहार दृष्टि और निश्चय दृष्टि।

व्यवहार दृष्टि से - वीतराग तीर्थंकर व उनके द्वारा प्ररूपित जीवादि 9 तत्त्वों (धर्म) पर पूर्ण आस्था व श्रद्धा होना सम्यक् दर्शन है। यह आस्था सभी इंद्रियों व मन की पूर्ण साक्षी से होनी चाहिए। अंतःकरण के दृढ़ संकल्प के साथ प्रगाढ़ श्रद्धा होनी चाहिए।

निश्चय दृष्टि से - पर द्रव्यों से परे 'आत्मरुचि' होना सम्यक् दर्शन है। आत्मा व पुद्गल, स्व व पर में भेद-विज्ञान करना सम्यक्त्व है। मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ। ऐसी प्रतीति पर पूर्ण विश्वास करना ही सम्यक् दर्शन है।

एक साधक में उपरोक्त दोनों प्रकार के सम्यक् दर्शनों का प्रगाढ़ रूप में होना परमावश्यक है।

❖ महत्त्व

'सम्यक्त्व' जैन दर्शन का प्राण है। इसके महत्त्व को जाने बिना और इसे पाए बिना जैन दर्शन को समझना संभव नहीं है। आरंभ से लेकर अंत तक एक साधक के पुरुषार्थ-पराक्रम का केंद्र बिंदु यह सम्यक्त्व ही है। इसका साथ न हो तो आध्यात्मिक उन्नति के जीवस्थानों (गुणस्थानों) के पायदानों पर एक कदम भी

आगे बढ़ना संभव नहीं होता।

भक्तामर स्तोत्र में आचार्य मानतुंग ने पहली गाथा में 'सम्यक् प्रणम्य जिन-यादयुगं युगादा' कहकर प्रणाम-वंदन के भी सम्यक् होने का संदेश दिया है। गाथा 23 में 'सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं' कहकर प्रभु को सम्यक् रूप में पाकर ही मृत्यु पर विजय का प्राप्त होना बतलाया है। पुच्छंसु णं स्तोत्र की गाथा 29 भी यही फलित बतलाती है कि "जो जीव अरिहंत भाषित धर्म पर श्रद्धा (सम्यक् श्रद्धा) करते हैं, वे या तो मोक्ष को प्राप्त होते हैं या देवताओं के अधिपति इंद्र होते हैं।"

वस्तुतः सम्यक् श्रद्धा से हेय, जेय व उपादेय तत्त्वों का विवेक जागृत होता है, जिसके बिना सम्यक् ज्ञान संभव नहीं होता। सम्यक् ज्ञान के बिना सम्यक् चारित्र की प्राप्ति नहीं हो पाती। सम्यक् चारित्र के बिना मोक्ष (कर्म क्षय) नहीं हो सकता और मोक्ष के बिना निर्वाण नहीं होता। (उत्तराध्ययन सूत्र 28/30)

इस प्रकार हमारी सारी आध्यात्मिक साधना के मूल में सम्यक्त्व ही है। उत्तराध्ययन सूत्र अध्याय 29 'सम्यक् पराक्रम' में भी सम्यक्त्व से ही परिनिर्वाण की प्राप्ति बतलाई गई है।

❖ संघ के लिए महत्त्व

सम्यक्त्व 'साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका' रूप तीर्थ का भी आधारभूत है। सम्यक्त्व से च्युत होते ही

साधक न केवल मिथ्यात्व का अधिकारी बनता है वरन् समूह में तो वह तीर्थ रूपी धर्मसंघ के लिए भी अनर्थ कर बैठता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि समूह में सम्यक्त्व से च्युत होते ही संघ-विच्छेद की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है। 'दशाश्रुत-स्कंध' में तीर्थ-संघ में अशांति पैदा करने वालों को 'महामोहनीय कर्मबंध-कर्ता' बतलाया गया है। अतः हमारा यह दायित्व बनता है कि हम अपने सम्यक्त्व को इतना गाढ़ा बना लें कि कभी भी अवनति की स्थिति न बन सके।

आचार्यों द्वारा संरक्षित व संवर्द्धित प्रभु महावीर के इस पवित्र शासन का हमारे जीवन पर अनंत-अनंत उपकार हैं। इसी की निर्मल छाँव में हमारी ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप रूपी आराधना विकसित हो रही है। अतः हमें स्वयं के सम्यक्त्व का आत्म-समीक्षण करते हुए इसे प्रगाढ़ बनाना है। इसको एक 'महत्तम उद्देश्य' के रूप में स्वीकार करना है।

❖ सम्यक्त्व की प्रगाढ़ता के उपाय •••

सम्यक्त्व के महत्त्व को जान लेने के बाद मुमुक्षु जिज्ञासुओं के मन में यह शंका उत्पन्न हो सकती है कि 'मैं सम्यक् दृष्टि हूँ या नहीं?' सम्यक्त्व की पूर्णता व प्रगाढ़ता के अभाव में ऐसी शंका हो जाना स्वाभाविक है। पूर्ण व विशुद्ध सम्यक् दर्शन प्राप्त करने के लिए नियमित अभ्यास एवं आत्म-समीक्षण करते रहने की आवश्यकता है, जिसकी विधि निम्न प्रकार बतलाई गई है -

1. गुरु शरण - शंकाओं का सहज, सरल व सटीक समाधान गुरु के सान्निध्य तथा सामिप्य से ही संभव होता है। 'इंद्रभूति-वेदज्ञ' को तो आत्मा के अस्तित्व पर ही शंका थी। जैसे ही प्रभु महावीर ने उन्हें संबोधित किया कि हे गौतम! जिसको यह शंका हो रही है, वही तो तुम्हारी आत्मा है। समाधान पाते ही उनके सम्यक्त्व की विशुद्धि हुई और वे अपने 500 शिष्यों सहित प्रभु से दीक्षित हो गए। गुरु राम 'तीर्थकर नहीं पर तीर्थकर सरीखे' हैं। यही वजह है कि उनकी वाणी में वो अतिशय है कि जीवन की समस्त शंकाओं का सहज व

सरल समाधान स्वतः मिल जाया करता है।

2. गुरु व संघ समर्पणा - ये दो ही वो मूल तत्व हैं जो सम्यक्त्व को प्रगाढ़ बनाने में प्रत्यक्ष सहयोगी बनते हैं। अतः हमें निम्न बिंदुओं पर गौर करना है -

- गुरु व संघ के प्रति अपने कर्तव्यों को प्राण प्रण से निभाना है।
- निष्ठा से प्रतिष्ठा आती है। संघनिष्ठ बन संघ-प्रतिष्ठा को सोने से ज्यादा चमकाना है।
- गुरु आज्ञा सर्वोपरि है। अतः आज्ञा पालन में अपील का अवकाश/स्थान न हो। गुरु के इशारे पर बिना विचारे तुरंत कदम बढ़े तो समझना सम्यक्त्व विशुद्धि की राह पर है।
- गुरु समर्पणा उत्कृष्ट भक्ति भावों से परिपूर्ण होती है। अतः समर्पणा में कभी भी सवाल/शर्त का अवकाश/स्थान न हो। सहज समर्पणा ही सम्यक्त्व का आधार है।

3. महापुरुषों की स्तुति व गुणगान -

स्थानांग सूत्र, स्थान 5 में सम्यक्त्व को स्थिर, निर्बाध व प्रगाढ़ बनाए रखने के लिए निम्न 5 उपाय बतलाए गए हैं -

| क्रम | ये करें | ये न करें |
|------|---|-----------------------|
| (1) | अरिहंतों की स्तुति और गुणगान | अवर्णवाद (निंदा/अपयश) |
| (2) | अरिहंत प्ररूपित धर्म की स्तुति और गुणगान | अवर्णवाद |
| (3) | आचार्यों व उपाध्यायों की स्तुति और गुणगान | अवर्णवाद |
| (4) | चतुर्विध संघ की स्तुति और गुणगान | अवर्णवाद |
| (5) | सम्यक् दृष्टि देवों की महिमा का गुणगान | अवर्णवाद |

उपरोक्त गुणगान करते-करते आँखों से आँसू बह जाएँ तो समझना मैं सम्यक् दृष्टि हूँ। पूरे अहोभाव से स्तुति करें, सम्यक्त्व में स्थिरता-प्रगाढ़ता अवश्य प्राप्त होगी।

4. स्वरूप का चिंतन व दोषों की आलोचना-

A. 'आवश्यक सूत्र' आधारित -

- 'देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रथ व केवली प्ररूपित धर्म' इन तीन तत्त्वों को ही सार समझें व संसार को असार। (अरिहंतो मह देवो....)
- परमार्थ (जीवादि 9 तत्त्व) का गाढ़ परिचय प्राप्त करें। इसी परमार्थ के सम्यक् द्रष्टा पुरुषों (साधुओं) की सेवा करें तथा मिथ्यात्वियों के संसर्ग से बचें। (परमत्थसंथवो वा....)
- सम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्था इन लक्षणों को धारण करें। (अंतिम पाठ)
- सम्यक्त्व के इन 5 अतिचारों की अंतःकरण से आलोचना करें। जिन वचन में शंका, परदर्शन की आकांक्षा, धर्म के फल में संदेह (विचिकित्सा), परपाखंडी की प्रशंसा व परपाखंडी का परिचय। (सम्यक्त्व विशुद्धि पाठ)

B. 'उत्तराध्ययन सूत्र' आधारित -

अध्ययन 28, गाथा 31 में सम्यक् दर्शन के 8 'आचारात्मक अंग' बताए गए हैं। ये हैं - निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढ़ (मोह रहित) दृष्टि, उपबृंहण (गुणपरक दृष्टि), स्थिरीकरण, वात्सल्य (साधुर्मी) और प्रभावना। इन सभी अंगों पर भी अपने आपको परखें।

C. 'निश्चय दृष्टि' आधारित -

- आत्मा के शुद्ध-स्वरूप को पहचान कर उसी को पाने की भावना भावों। इस हेतु नित उठ भावविभोर हो 'सिद्ध स्तुति' गावें। जैसे 'जय जय जय भगवान', 'नमो सिद्ध निरंजन' आदि।
- नित उठ यह प्रार्थना करें कि चौबीसी भगवान मुझे 'आरुग्गबाहिलाभं' देवें अर्थात् मुझे मोक्ष प्राप्ति हित आत्मिक आरोग्य रूप सम्यक्त्व का लाभ देवें। (लोगस्स...)

5. मोहनीय कर्म की अपेक्षा से परखें -

मोहनीय कर्म की प्रथम सात प्रकृतियों का संबंध सम्यक्

दर्शन से ही है। ये हैं - मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय, सम्यक्त्व मोहनीय तथा अनंतानुबंधी चतुष्क (तीव्रतम क्रोध, मान, माया व लोभ)।

इन सातों के क्षयोपशम आदि से ही सम्यक् दर्शन पूर्णता को, प्रगाढ़ता को प्राप्त होता है। अतः समीक्षा करना है कि तीव्रतम क्रोध, मान, माया, लोभ की अनुपस्थिति हो पा रही है या नहीं? इसके परिणामस्वरूप भय कम हो रहा है या नहीं? राग-द्वेष कम हो रहा है या नहीं? समभाव आ रहा है या नहीं?

6. सम्यक्त्व के 67 बोलों पर आकलन -

पूर्वाचार्यों ने सम्यक्त्व-पथ पर शुद्धता के साथ आगे बढ़ने के लिए 67 बोलों का प्रतिपादन किया है। इन्हें विषयवार 12 बिंदुओं में वर्गीकृत किया गया है। इन 12 बिंदुओं को 12 द्वार समझते हुए कुल 67 कदम चलें, सम्यक्त्व रूपी रत्न अवश्य ही प्राप्त होगा। ये द्वार हैं - श्रद्धान-4, लिंग-3, विनय-10, शुद्धि-3, दूषण त्याग-5, प्रभावना-8, भूषण-5, लक्षण-5, यतना-6, आगार-6, भावना-6 और स्थान-6। विस्तार से इन पर चिंतन-मनन, आकलन करते रहें। सम्यक् दर्शन की प्रगाढ़ता आपके अधिकार की वस्तु बनेगी।

विशुद्ध (प्रगाढ़) सम्यक् दर्शन वह पारस पत्थर है, जिससे अज्ञान सुज्ञान में, अचरित्र सुचारित्र में और अतप सुतप में परिवर्तित होता है। व्यक्ति की दृष्टि सम्यक् होते ही उसकी सृष्टि भी सम्यक् हो जाती है। आधुनिक युग में जो विकृतियाँ, अपराध वृत्तियाँ, अशांति व अव्यवस्था समाज में दृष्टिगत हो रही हैं, उन सभी के मूल में मिथ्यादृष्टि ही है। सम्यक्त्व की प्रगाढ़ता मानव जीवन की पहली, मौलिक एवं महान आवश्यकता है। अतः नित उठ अपने सम्यक्त्व की समीक्षा करें, सम्यक्त्व-समीक्षण ध्यान धरें।

ध्यान रहे कि भक्ति की शक्ति से ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। भक्ति में सबसे बड़ी भक्ति होती है गुरुभक्ति। अतः हमेशा गुरु की शरण में, गुरु की आज्ञा में रहें। ये भक्ति और सम्यक्त्व की प्रगाढ़ता ही एक दिन मुक्ति दिलाने वाली बनेगी।





कैसा हो आदर्श युवा?



-कांता बैद, गाजियाबाद

उद्देश्य का अर्थ सामान्य भाषा में कहें तो कार्य करने का एक लक्ष्य निर्धारित करना यानी रूपरेखा तैयार करना है। महत्तम उद्देश्य में हमारा लक्ष्य युवा पीढ़ी की ओर हो तो कैसा रहेगा? इन्हीं भावों का चिंतन-मनन करने पर विचार आया 'कैसा हो आदर्श युवा'।

सशक्त समाज के लिए सशक्त युवा संगठन की जरूरत होती है। आज का आदर्श युवा भविष्य का निर्माणकर्ता, सृजनकर्ता होगा। भविष्य उज्ज्वल हो इसलिए हमें भगवान महावीर के पाँच मूलभूत सिद्धांतों व अन्य गुणों पर ध्यान देना होगा।

एक आदर्श युवा में भगवान महावीर के पाँच मूलभूत सिद्धांत - (1) अहिंसा (2) सत्य (3) अचौर्य (4) ब्रह्मचर्य (5) अपरिग्रह अवश्यमेव हों। इन गुणों के साथ-साथ निम्नोक्त गुण भी हों - अध्ययनशील, आशावादी, दृढ़निश्चयी, बलिष्ठ, विवेकवान, क्रियावान, शांत-प्रकृति, समतामय, निरभिमानी, सेवाभावी, हितचिंतक, महत्वाकांक्षी, स्वावलंबी, परोपकारी आदि।

संक्षिप्त बिंदुओं को विस्तार से समझना होगा, तभी भावों की अभिव्यक्ति में सुगंध आएगी। भारतीय संस्कृति में ऋषि-मुनियों व साधु-संतों ने अनुभवी प्रौढ़ों के साथ युवा शक्ति को सदैव ही बराबरी का दर्जा दिया है। महत्तम उद्देश्य में भी हमें वही कार्य करना है।

1. अहिंसावान - सभी जीवधारियों को आत्मवत् देखने वाली युवा पीढ़ी अहिंसावान हो। सबके साथ मैत्री का व्यवहार करने वाली हो। संसार में प्रेम और शांति

का स्रोत प्रवाहित करने वाली हो। 'मिति में सबभूषु, वेरं मज्झं न केणई'

2. सत्यवान - अहिंसा की उर्वरा भूमि में सत्य का पौधा पनपता है। आदर्श युवा सत्यनिष्ठ हो। 'सत्यमेव जयते'

3. अचौर्यवान - बिना अनुमति के किसी भी चीज को न लेना। द्रव्य चोरी व भाव चोरी दोनों वर्जनीय हैं। आदर्श युवा पीढ़ी में यह गुण होना वर्तमान परिपेक्ष्य को देखते हुए जरूरी है।

4. ब्रह्मचर्यवान - सब इंद्रियों व संपूर्ण विकारों पर अधिकार कर लेना ब्रह्मचर्य व्रत को पूर्ण करता है। यह सर्वोत्तम मंगलमार्ग है। सर्वोत्तम तप है। मन की पवित्रता इसी व्रत से सधती है। मोक्षमार्ग का भूषण ब्रह्मचर्य व्रत आदर्श युवा में होना चाहिए। सूयगडांग सूत्र - 'तवेषु वा उत्तमं बंधवेरं'

5. अपरिग्रही - अपरिग्रही युवा मानव समाज में शांति स्थापना में नींव का पत्थर साबित हो सकता है। आदर्श युवा में तृष्णा रूपी सहस्रबाहु को पराजित करने की शक्ति होनी चाहिए।

मूल गुण के साथ उत्तर गुण भी युवा में समा जाएँ तो सोने पर सुहागा हो जाए। अब हम एक दृष्टि उत्तर गुणों पर डालते हैं -

- **अध्ययनशील** - युवा पीढ़ी अध्ययनशील हो तथा उसमें सदैव ही कुछ नया करने का, नया जानने का उत्साह हो।

- **आशावादी** – सकारात्मक, विधेयात्मक सोच वाला युवा हमेशा उत्तरोत्तर आगे बढ़ता चला जाता है।
- **दृढ़-निश्चयी** – युवाओं का मन दृढ़, मजबूत व सही कार्य को सही समय पर करने का दृढ़ता से पालन करने वाला हो।
- **विवेकवान** – मनुष्य जन्म व विवेक गुण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इस गुण के बिना मनुष्य पशुतुल्य है।
- **ज्ञानवान** – जहाँ ज्ञान है वहाँ प्रकाश ही प्रकाश। आदर्श युवा के ज्ञानचक्षु सदैव खुले और जागृत होने चाहिए।
- **क्रियावान** – किसी भी क्रिया को करने से पहले रूपरेखा बनाकर यह तय करें कि किस कार्य को कब, कहाँ और कैसे पूर्ण करना है, ताकि परिणाम सकारात्मक व यथासमय मिले।
- **शांत प्रकृति** – आदर्श युवा मधुरभाषी हो। क्रोध उससे कोसों दूर हो। जिससे वो परिवार, संघ, समाज व राष्ट्र का उत्थान कर सके।
- **समतामयी** – आदर्श युवा में समता गुण होगा तो ही वो हर परिस्थिति में जीना सीख पाएगा। आचार्य श्री नानेश का समता गुण युवा पीढ़ी के रग-रग में समाया हो।
- **स्वावलंबी** – एक आदर्श युवा कल का कार्य आज और आज का कार्य अभी करने का लक्ष्य लेकर चलने वाला हो।
- **निरभिमानी** – युवाओं में अपने कार्य व गुणधर्म पर कभी घमंड न हो। 'नेकी कर दरिया में डाल' वाली कहावत उनके व्यक्तित्व से चरितार्थ होनी चाहिए।
- **सेवाभावी** – माता-पिता, गुरुजन व दिन-दुःखी, सबकी सेवा में रहने वाला आदर्श युवा कहलाता है। युवा सेवा में ही अपना धर्म समझने वाला हो।
- **हितचिंतक** – सबके हित में अपना हित समझें, सबके दुःख को अपना दुःख समझें।

- **महत्वाकांक्षी** – भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल, परिस्थितियों को समझकर निर्णय लेने में तत्पर हो।
- **परोपकारी** – निज स्वार्थ को तजकर सबका भला चाहने वाला तथा सृष्टि के सभी जीवों को साता पहुँचाने वाला ही आदर्श युवा हो सकता है।

*तुझको देखकर जग मुस्कराए
तेरी अनुपस्थिति जग को खल जाए।
तेरी आत्मा है गुणों की खान,
इससे ज्यादा तेरी क्या पहचान।* ❀❀❀

भक्ति
रस

सम्यक्त्व की महिमा

—बी. शांतिलाल पोकरणा, विजयनगरम्

सम्यक्त्व का बीज ही कल्पवृक्ष बनता है,
सरल हृदय में ही बीज अंकुरित होता है।
देव, गुरु, धर्म पर विश्वास बहुत जरूरी है,
इसके बिना मुक्ति मार्ग की राह अधूरी है।
ज्ञान, दर्शन, चारित्र को जाने बिना हम,
मोक्ष मार्ग की सीढ़ियाँ चढ़ नहीं पाएँगे।
सम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्था के,
शुभ भावों से ही भवसागर तर पाएँगे।
आर्तध्यान व शौद्रध्यान में तल्लीन रहोगे तो,
चार गति चौदासी लाख जीवयोनि में भटकते रहोगे।
धर्मध्यान व शुक्लध्यान की शरण से ही,
सिद्धालय की यात्रा को सरल बना पाओगे।
जीव और अजीव के भेद-विज्ञान का ज्ञान जरूरी है,
इसको जाने बिना सम्यक्त्व की यात्रा अधूरी है।
में आया कहाँ से, कहाँ है मुझे जाना, यह सोच जरूरी है,
अपने मन को जीत लोगे तो सम्यक्त्व की यात्रा पूरी है।





संधारा

जीवन व साधना का सार

-अशोकचंद कोठारी, ब्यावर

संलेखना-संधारा उच्च कोटि का व्रत है। इसके लिए श्रावक-श्राविकाएँ, साधु-साध्वी जीवन का अंतिम समय शुद्ध भावना व श्रद्धा से आत्मीयभावों में रमण करने का लक्ष्य रखते हैं। संधारा में धर्म रूपी धन से बलवान बनी आत्मा परलोक के उत्तम भाता लेकर मृत्यु को महोत्सव के रूप में आमंत्रित करती है। ऐसी महान आत्मा जिसको मृत्यु की प्रतिक्षा रहती है, वह मृत्यु से भय नहीं खाती।

भले ही लाख उपाय कर लो लेकिन मृत्यु को एक पल भी टालना संभव नहीं है। मृत्यु तो अवश्यंभावी है। अतः उस पल का निडरता से स्वागत करना चाहिए और इसके लिए संलेखना-संधारा ही एकमात्र सही मार्ग है।

संलेखना-संधारा में स्व में स्थिर हुई आत्मा अपने आपको पूर्ण तैयार रखती है। ऐसी विरल आत्मा एक स्थान पर समाधिस्थ होकर शांतिपूर्वक समाधिभावों के साथ प्रसन्नचित्त रहते हुए पूर्ण चैतन्य अवस्था में मृत्यु का सत्कार करती हुई भावी के लिए गमन करने को तैयार रहती है। इसलिए भावों के अनुसार ऐसी आत्मा को सद्गति, उच्चगति व न्यूनतम देवगति प्राप्त होती है।

तीसरा मनोरथ - महानिर्जरा, महापर्यवसान, उत्तम मन, वचन, काया से उत्तम भावना भाता हुआ कर्मों का अंत करने के लिए दृढ़तापूर्वक व्रत का पालन करता हुआ, आहार-पानी के त्याग (चौविहार) के साथ शरीर व कषायों को कृश करते हुए जीवन-मरण की

इच्छा न करता हुआ, अठारह पापों का त्यागकर पूर्व दिशा की ओर आसन बिछाकर अरिहंत सिद्ध की साक्षी से संधारा संलेखना व्रत ग्रहण कर इसका पूर्ण मनोयोग व शुद्ध भावों के साथ पालन करने वाला साधक ही अपना तीसरा मनोरथ पूर्ण कर पाता है।

तीन करण तीन योग से संधारा ग्रहण करने के बाद भी तीन करण तीन योग से दीक्षा ग्रहण की जा सकती है। संधारा ग्रहण करना उत्तर गुण है, जबकि महाव्रत ग्रहण करना मूल गुण है। संधारा ग्रहण करने के बाद भी दीक्षा के माध्यम से संधारे के भावों को और उच्च कोटि का बनाया जा सकता है।

भाव संलेखना सुखद व सुख की सीढ़ी है। आत्म-गवेषकों के लिए तो यह सुधा है। अंतिम समय जब मृत्यु नजदीक होने के एहसास हो तब परभव को सुधारने की दृष्टि से अठारह पापों, चार आहारों तथा राग-द्वेष व मोह-माया आदि के त्याग की प्रतिज्ञा को संधारा कहा जाता है। वैदिक परंपरा में इसे 'प्रायोपवेशन', दिगंबर परंपरा में 'संलेखना संधारा' के नाम से जाना जाता है। संधारा साधना ही शांति का वास्तविक आधार है। साधना के बिना जिंदगी बेकार है। इच्छाओं की पूर्ति में यह संसार जल रहा है। साधना में व्यक्ति वीतराग देव से प्रार्थना करें कि "हे वीतराग देव! यह संसार दुःखमय, असार है। मेरी आत्मा ने संसार के प्रत्येक भव में दुःखमय, स्वार्थमय संबंधों का कटु अनुभव किया है। ऐसे संबंधों

से मुक्त होते हुए भावना से मैं विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि हे वीतराग देव! मुझे इस भव में चारित्र उदय में नहीं आया किंतु आगामी भवों में कम आयु में ज्ञान के साथ चारित्र का उदय हो, ऐसी कर जोड़ प्रार्थना करता हूँ।”

अंत समय नजदीक जानकर भी संधारे की ओर ध्यान न देकर दीनतापूर्वक परेशान होते हुए इधर-उधर भटकने, हाथ मलते हुए विलाप करने से केवल अशांति बढ़ती है। यदि ऐसी स्थिति में श्रद्धापूर्वक संधारा संलेखना की साधना की जाए तो व्यक्ति पूर्ण आत्मशांति प्राप्त कर सकता है। मरणासन्न जीव को संधारे द्वारा समाधि मिलने से आगामी भव सुधरने के साथ-साथ वर्तमान भव में अलौकिक शांति का अनुभव होता है।

अंतिम समय में जीव को गमनागमन से भारी वेदना का अनुभव होता है। डॉक्टर, दवाइयों, वैद्य, जाँचों आदि के लिए इधर-उधर ले जाना तथा सुई आदि से छेदन-भेदन करवाना अज्ञानता व विपाक कर्मोदय के कारण हैं।

जीवनभर परिजनों के साथ रहने के कारण मोहवश हम यह नहीं समझ पाते कि मरती बेला जीव को मोक्षमार्ग की ओर गमन कराना है, जबकि मरने वाले के साथ सहानुभूति के कारण उसे नया दुःख-दर्द दे देते हैं। जीव का जन्मोत्सव मनाया गया, शिक्षा, संस्कार व विवाह आदि के महोत्सव मनाए गए, बुजुर्ग होने तक उस जीव ने तन, मन, धन से सहयोग करते हुए अपना सर्वस्व लुटाते हुए अपनी संतति को योग्य, प्रतिष्ठित, सुखी बनाने में कसर नहीं छोड़ी। अतः अंतिम समय में परिजनों का भी कर्तव्य बनता है कि इतने वर्षों के एहसानों का कुछ प्रतिशत प्रतिसाद तो उस जीव के अंत समय में वापिस देवें और उसकी मृत्यु को महोत्सव बनाएँ। समर्पणा से संधारा-संलेखना करवाकर जीव के वर्तमान भव के साथ-साथ अगला भव भी सुधरे, ऐसा प्रयास करना प्रत्येक जीव का कर्तव्य है।

संधारा ग्रहण करते समय आलोचना, क्षमा, मृत्यु से निडरता, शौर्यता, वीरता, धैर्य व समाधि का भाव होना चाहिए। असातावेदनीय कर्म खपे तथा सद्गति प्राप्ति

हेतु आत्मचिंतन द्वारा भावों की शुद्धि करते हुए उत्तरोत्तर वृद्धि का लक्ष्य रहना चाहिए, तभी मृत्यु को महोत्सव बनाया जा सकता है।



भक्ति
रस

नाना गुरुदेव की स्मृति

—पायल वया, बंबोरा

चेहरे पर जिनके एक अद्भुत तेज था,
क्रोध से जिनका जैसे परहेज था।
समतामय जिनका हर एक अंग था,
प्रभु महावीर का साया हरदम जिनके संग था।।

वाणी उनकी कानों के लिए जैसे शहद थी,
भक्तों का भाव और उनका प्रभाव अनहद था।
ऐसे तेजोमय गुरुवर का जन्मदिन है आया,
लाखों भक्तों के हृदय द्रवित हो गए,
गुरुदेव हम सबके हृदय में जीवित हैं।।

राम गुरु के रूप में मिली हमें नानेश की परछाई,
इस अंधेरे में एक आशा की किरण जलाई।
समता का झरना थे गुरुदेव नाना,
करुणा का भंडार थे गुरुदेव नाना,
हम भक्तों के भगवान थे गुरुदेव नाना।।

जेठ सुदी बीज को अवतरण लिया,
मोड़ी कुल का मान बढ़ाया।
समता की भूरत की स्मृति शेष रह गई,
उनकी चिंतनमणियाँ जीवन का सार कह गईं।
बस गुरुदेव की स्मृति शेष रह गईं।।





महत्तम परिवर्तन

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

- म - महान् उद्देश्य को
- ह - हल करने के लिए
- त - तत्पर जो होते हैं
- म - महात्मा पद को प्राप्त कर
- प - परम तत्त्व की उपासना से
- रि - रिक्त होते
- व - विचारों से
- र्त - तृप्त होते अपने स्वभाव में
- न - नमन कर परमेष्ठी को

जीवन का परिवर्तन महत्तम उद्देश्य से होता है। उद्देश्य महान् हो तो परिवर्तन आता है। 'परि' का अर्थ होता है चारों ओर से और 'वर्तन' अर्थात् अपने भीतर उठने वाले विचारों व विकारभरी वृत्तियों को देखना। इनको देखते हुए भीतर में होने वाले परिवर्तन को जो देखता है वह अपने स्वभाव को प्राप्त करता है। 'स्वभाव शौर्यम् विजय' अर्थात् जो अपने स्वभाव को प्राप्त कर लेता है वह शूरवीर वास्तविक विजय का वरण करता है।

जीवन की सच्ची राह का वरण सम्यक् बोधपूर्वक होता है। बोध के अभाव में व्यक्तित्व की ग्रोथ नहीं होती। ग्रोथ नहीं होगी तो विकास परिवर्तन का क्रम नहीं होगा। परिवर्तन का क्रम सम्यक् बोध व विचारों से ही होगा। आत्मा जब तक सुप्त है तभी तक पंचेंद्रियों व मन की सत्ता जमी रहती है और आत्मा तभी तक सुप्त है जब तक वह स्वयं को न पहचान ले। जिस दिन 'मैं कौन हूँ'

का उत्तर खोज लेंगे, उस दिन मानव होने का असली लक्ष्य समझ आएगा।

पीड़ा व चिकित्सा के बीच की कड़ी चिकित्सक है तो मार्ग व मुकाम के बीच का सेतु मार्गदर्शक है और यही भूमिका साधक व साध्य के बीच जिनाज्ञा की है। नेविगेटर/पथ-निर्देशक आवश्यक है, जो देहालय से सिद्धालय का पथ दर्शाता है। जिनाज्ञा हमें विधि (Dos) व निषेध (Don'ts) का ज्ञान देती है और चिंतन व चेतना को ऊर्जावान बनाती है। साधना जीवन रूपी पुस्तक के पन्नों को विवेक की वायु से पलटाती है ताकि आलस्य व प्रमाद की दीमक न लगे। इस प्रकार साधक को गुणों के चयन तथा दोषों के विशोधन में जिनाज्ञा सफल नेविगेटर सिद्ध होती है। हमें यह नहीं भूलना कि सारे संबंध दिखावटी हैं, वास्तविक नहीं। वास्तविक संबंध में कभी फ्रैक्शन नहीं हो सकते। सारे संबंध तात्कालिक होने से टेंपररी मैनेजमेंट हैं। इसलिए जो स्नेह हमारा परिवार के प्रति है उसे समग्र विश्व में प्रवाहित करें ताकि वह विस्तृत होकर एक दिन वैराग्य में बदल जाए।

सूत्रकार कहते हैं- जीवन परिवर्तनशील है, प्रवाहमय है। वह सदा एक-सा नहीं रहता। सुखद बाल्यकाल व यौवन का सुनहरा प्रवाह जब बह जाता है तो बुढ़ापे की कालिमा उसे आ घेरती है। तब कोई भी स्नेही-साथी उसके दुःख को दूर करने या बाँटने में समर्थ नहीं होता। जीवन में धर्म ही एकमात्र सहायक है, जो आदि, मध्य व अंत हर अवस्था में कल्याणकारी होता है। धर्म तो मिसरी

की भाँति है। उसे जहाँ से चखो मुँह मीठा ही करेगा। समय को जानें, स्वयं को पहचानें। तात्पर्य यह है कि समय की गति बड़ी तीव्र है। प्रकाश, शब्द व विद्युत से भी अधिक तेज गति से समय भागता है। शब्द व विद्युत को चाहे पकड़ लो किंतु समय किसी की पकड़ में नहीं आता। न बीता समय लौटता है, न आने वाला समय रुकता है। अतः वर्तमान को जानें क्योंकि जो वर्तमान का सम्मान करता है, उसे समय मूल्यवान बना देता है। कल्पना करें कि एक ऐसा बैंक है जो आपके अकाउंट में प्रतिदिन 86,400 की राशि जमा करता है और हमें उसे सदुपयोग का अवसर प्रदान करता है। हम प्रतिदिन यह पूरी राशि उपयोग ले रहे हैं लेकिन इस उपयोग में से सदुपयोग व दुरुपयोग का प्रतिशत कितना है, यह चिंतनीय विषय है। इसी भाँति समय भी एक बैंक है, जो हमें प्रतिदिन 86,400 सैकंड का समय देता है। हम इस समय का सदुपयोग नहीं कर पाते तो नुकसान हमें ही भुगतना पड़ता है। इस हानि से बचने के लिए सूत्रकार चेतावनी देते हैं। पंडित वही है जो क्षण के मूल्य को जाने और प्रत्येक क्षण को शाश्वत की खोज में लगाकर उसे सार्थक करे।

जो एक क्षण को भी व्यर्थ नहीं खोता वह समय को जीत लेता है। जो समय को नष्ट करता है वह स्वयं नष्ट हो जाता है। पश्चिम के दार्शनिक इमर्सन का कथन है - **“मैं 360 वर्षों में होने वाला कार्य साठ वर्ष में कर सका, इसका राज मात्र इतना है कि मैं एक क्षण भी व्यर्थ नहीं करता।”** हमें याद रखना है कि समय देवता का रथ मुक्त हाथों से सोना लुटाता हुआ शीघ्रता से दौड़ रहा है। जो सजग होते हैं वे आलस्य व कठिनाइयों की दीवारों लाँघकर समय के रथ पर सवार हो जाते हैं और अतिशीघ्र अपने लक्ष्य को पा लेते हैं। एक बार भूतकाल, वर्तमानकाल व भविष्यकाल में संघर्ष छिड़ गया। सभी अपनी महत्ता का दावा कर रहे थे। आखिर निपटारे के लिए तीनों महाकाल के पास पहुँचे। भूतकाल ने अपनी महिमा का बखान करते हुए कहा - “मैंने क्रांतियों की आँधियाँ चलाई, जिनसे

न जाने कितनों के दिल बदल दिए और कितनों की बैसाखी का सहारा बना।” भविष्यकाल बोला - “अगर मैं न होता तो लोग सुनहरे सपने कैसे संजोते? कल्पनाओं के भव्य महल कैसे बनाते? चिंतन की लंबी उड़ान कैसे भरते?” वर्तमानकाल बोला - “चाहे मैं छोटा हूँ, पलजीवी हूँ किंतु काम बड़े-बड़े करता हूँ।” महाकाल ने तीनों की दलीलें सुनकर निर्देश दिया कि आप तीनों अपनी प्रस्तुति दो। यह सुन अतीत और अनागत मौन हो गए। क्योंकि अतीत का सिर नहीं और भविष्य के पैर नहीं, तो वे न सोच सकते हैं और न कुछ कर सकते हैं। इसलिए वर्तमान ने कहा कि मैं पूर्ण रूप से आपके सामने प्रस्तुत हूँ। मैं सब कुछ एक साथ करने में समर्थ हूँ। तब महाकाल ने निर्णय सुनाते हुए कहा - “कुछ कर गुजरने का साहस केवल वर्तमान में होने से वर्तमान ही महत्त्वपूर्ण है।” जो वर्तमान को पकड़ लेता है वह जन्म-मरण के महाफेरे को भी टाल सकता है। आश्चर्य है कि आज **‘नो टाइम’** की लाइलाज बीमारी के कीटाणु बड़ी तेजी से फैल रहे हैं। कुछ लोग बिना काम के व्यस्त हैं, तो कुछ समय की परिधि में बँधे समय को तलाश रहे हैं। याद रहे कि समय को व्यर्थ भी किया जा सकता है और इसका सदुपयोग कर परिवर्तन भी लाया जा सकता है। खोई हुई धन-संपदा को परिश्रम से दोबारा पाया जा सकता है। विस्मृत ज्ञान भी पुनरावर्तन से पुनः हासिल किया जा सकता है। अस्वस्थता को औषधि से पुनः लौटाया जा सकता है। परंतु समय को लौटाने का कोई उपाय नहीं है। इसलिए समय की सूई का संदेश है - **उठो, जागो, प्रमाद मत करो।** जो समय को बोता है वह धर्म में टिका रहता है। जो समय को महत्त्व देता है, समय भी उसका अंकन करता है। इसलिए जो समयज्ञ है, वह सर्वज्ञ बनने की संभावना लिए हुए है।

**लघुता का चंदन लगाकर,
कामना का क्रंदन कम करे तो,
अपेक्षाओं का आक्रंदन स्वतः थम जाएगा।
आत्मनिग्रह साधने का एडमिशन मिल जाएगा।।**



श्रावक को
जीव-अजीव का
ज्ञाता होना चाहिए
- आचार्य भगवन्
हमारी नजर
चैतन्य की ओर हों
- उपाध्याय प्रवर

गाँव-गाँव
हो रहा पावन,
अमृत वचनों से
हो गया सावन।

बेगूँ, काटुंदा, बिछोर,
पारसोली, कंवरपुरा,
मनकड़ी, मुरलिया,
आमां, सियार, मंगरोप,
भोली; भीलवाड़ा।

- युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सात्त्विक में सात नवदीक्षित चारित्रात्माओं की बड़ी दीक्षा उल्लासमय वातावरण में संपन्न
- आचार्यदेव व उपाध्याय प्रवर के भव्य चातुर्मासिक प्रवेश से भीलवाड़ा की धरती हुई पावन
- मुमुक्षु लोकेश जी चौपड़ा की दीक्षा 28 जुलाई
- मुमुक्षु नीरज जी पोरवरना व मुमुक्षु बसंती जी पोरवरना की जैन भागवती दीक्षा 14 अगस्त
- मुमुक्षु करुणा जी गुलेच्छा की दीक्षा 7 अक्टूबर के लिए घोषित

जन-जन में सदाचार, व्यसनमुक्ति, सच्चाई, ईमानदारी की अलख जगाने वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, ज्ञान व क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के मेवाड़ के गाँव-गाँव, नगर-नगर में प्रभावी विचरण से कण-कण पावन-पवित्र हो गया है।

महापुरुषों की कठोर संयम साधना को देखकर जैन-जैनेतर जनता आश्चर्यचकित होकर नतमस्तक हो रही है। व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण के कार्यक्रम निरंतर जारी हैं। बेगूँ में नवदीक्षित चारित्रात्माओं की बड़ी दीक्षा श्रद्धा, भक्ति

व उल्लासमय वातावरण में संपन्न हुई। आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की निर्मल संयम साधना से प्रभावित होकर मुमुक्षु लोकेश जी चौपड़ा (शिंदखेड़ा), युवा दंपत्ति मुमुक्षु नीरज जी मुमुक्षु बसंती देवी पोखरना (ब्यावर/मायावरम्), मुमुक्षु करुणा जी गुलेच्छा (जोधपुर) की जैन भागवती दीक्षा क्रमशः 28 जुलाई, 14 अगस्त व 7 अक्टूबर के लिए घोषित होने से पूरे देश में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। आगे और भी दीक्षाएँ संभावित हैं।

नवदीक्षित चारित्रात्माओं की बड़ी दीक्षा सोल्लास संपन्न

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण।
धन्य-धन्य कह रहा है हर मन।।

16 जून 2024, ओसवाल पंचायती नोहरा, बेगूँ। दीक्षा आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनने का राजमार्ग है। इसी कड़ी में युगनिर्माता, युगपुरुष आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में नवदीक्षित श्री रामसौरभ मुनि जी म.सा., नवदीक्षित श्री रामसूर्य मुनि जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामाशा श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामायुषी श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामप्रणिता श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामशैली श्री जी म.सा. व नवदीक्षिता साध्वी श्री रामत्रया श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) श्रद्धा, भक्ति व उल्लास के साथ चतुर्विध संघ की उपस्थिति में संपन्न हुई। प्रारंभ में नवकार महामंत्र का जाप किया गया।

साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि “**किसको मन में प्रवेश देना, न देना, यह सोच लो। जिसमें आत्महित है उसे ही प्रवेश दूँगा, दूसरे विचार को प्रवेश होते ही निकाल दूँगा। जो विचार भीतर में दृढ़ करते हैं, वे विचार हमें भीतर नहीं रखवने चाहिए। आत्महित व साधना में बढ़ने की बात छोटा बच्चा भी कहे तो उसकी सुनता हूँ। यह नाना गुरु का कथन था। मेरी प्रसन्नता सदा रहनी चाहिए और प्रसन्नता धर्म से आएगी। जितना धर्म में गहरा उतरूँगा उतनी ही प्रसन्नता गहरी होगी। आत्महित की बात अंतर में उतरूँगा तो दुःख आएगा तो भी ज्यादा समय नहीं रहेगा।”**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने बड़ी दीक्षा की विधि प्रातः 9:10 पर प्रारंभ की। सर्वप्रथम दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए तीन करण तीन योग से नवदीक्षितों को हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन व परिग्रह का त्याग करवा पूर्ण रूप से अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन पंच महाव्रतों में आरूढ़ करवाकर प्रतिज्ञाबद्ध करवाया। रात्रिभोजन त्याग का संकल्प करवाया गया।

श्री किशोर मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री प्रणत मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा. व श्री नमन मुनि जी म.सा. आदि संतों ने ‘**अंतर में एक ही गूँज उठे, हम राम बनें हम राम बनें**’ भाव गीत प्रस्तुत किया, जिसे गुनगुनाते हुए सम्पूर्ण सभा भावविभोर हो गई।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा., साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ‘**राम गुरु के चरण पाए, बधाई गीत सब मिलकर गाएँ**’ भाव गीत प्रस्तुत किया।

नवदीक्षित संतों एवं साध्वीवर्याओं ने अपना संकल्प-पत्र पठन करते हुए फरमाया कि हे भगवन्! आपने हमें महाव्रत, संयम रत्न दिया है। आपके द्वारा दिए गए संयम, पाँच महाव्रतों व पाँच समिति, तीन गुप्ति का हम सदैव ध्यान

रखेंगे। आपकी आज्ञा पालन में ही हमें परम आनंद है। हमें सेवा का महान अवसर मिले, हम कषाय-इंद्रियों पर विजय प्राप्त करें।

नवदीक्षित संतों ने 'भक्ति में हो मगन हमें नाम व गुरु राम मिल गया' गीत प्रस्तुत किया। नवदीक्षिता महासतियों ने 'धन्य धन्य बना मनुष्य जन्म हमारा, म्हाने लागी लगन गुरु तारो' गीत प्रस्तुत किया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार के प्रति उदासीनता सच्चा संयम है। जहाँ हमें चाह है वहीं फिर पैदा होंगे। शरीर की चिंता अनंत बार की है। अब हम संयम पर ध्यान केंद्रित करें। अपने आप पर पीएच.डी. करें कि कौन मेरा है। इस जगत् में कोई मेरा नहीं है।

बेगू संघ अध्यक्ष व महेश नाहटा ने वीर परिवारों के आदर्श त्याग की सराहना की। महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत 9 नवकार मंत्र, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु ण व 9 बार गुरु वंदना करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। विभिन्न तप-त्याग के प्रत्याख्यान हुए।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित सातों वीर परिवारों व देश के अनेक स्थानों से आगत श्रद्धालु भाई-बहन भारी संख्या में उपस्थित थे। एक अलग कार्यक्रम में सातों वीर परिवारों का शानदार आत्मीय बहुमान श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेगू द्वारा किया गया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

श्रावक को जीव-अजीव का जानकार होना चाहिए

17 जून 2024, महात्मा गांधी उच्च माध्यमिक विद्यालय, काटुंदा। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-13 का बेगू का ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव तथा बड़ी दीक्षा प्रसंग संपन्न करने के पश्चात् काटुंदा मोड़ में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने दर्शन सेवा का लाभ लिया। परम गुरुभक्त श्री किशनलाल जी भूरा (देशनोक) के संधारामपूर्वक देवलोकगमन पर शिखर सदस्य मंजू जी शाह, शाहिल शाह आदि परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

श्री किशोर मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्रावक को जीव-अजीव का जानकार होना चाहिए। जीवों के प्रति हमारी संवेदना कम होती जा रही है। हमारी कोई भी प्रवृत्ति ऐसी न हो जिससे जीवों को कष्ट-तकलीफ पहुँचे। हम जो कर्म करेंगे उसका फल निश्चित रूप से प्राप्त होगा। आपश्री जी ने पाँच इंद्रियों की विस्तृत व्याख्या फरमाई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ फरमाया।

स्मरण शक्ति कमजोर होने के कारणों को जानें

18 जून 2024, तेजपुर। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का प्रातःकालीन दैनंदिनी पश्चात् काटुंदा मोड़ से जय-जयकारों के साथ विहार हुआ। चातुर्मास काल के लिए भीलवाड़ा की ओर बढ़ रहे महापुरुषों के चरणों की पावन धूल से मार्गवर्ती अनेक क्षेत्र पावन हो रहे हैं। आपश्री जी का जय-जयकारों के साथ राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, तेजपुर में मंगलमय प्रवेश हुआ। यहाँ पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से आगत श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

आत्महित व साधना में
बढ़ने की बात
छोटा बच्चा भी कहे तो
उसकी सुनता हूँ
-आचार्य श्री नानेश

दोपहर में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए स्मरण शक्ति कम होने के कारणों का विवेचन करते हुए फरमाया कि हमें हर कार्य में यतना व विवेक का ध्यान रखना चाहिए। धैर्य और पुरुषार्थ से सफलता निश्चित प्राप्त होती है।

माह में एक दिन मोबाइल त्याग करने तथा रात को 10 बजे के बाद मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। परम गुरुभक्त श्री रेखचंद जी सांखला, खैरागढ़ के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। बेगू संघ की सेवाएँ सराहनीय रहीं।

चरैवेति-चरैवेति के साथ मुमुक्षुओं का गुरुचरणों में समर्पण

19 जून 2024, गोपाल जी सुथार का निवास, बिछोर। व्यसनमुक्ति के प्रणेता आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-5 का तेजपुर से विहार कर बिछोर के गोपाल जी सुथार के निवास पर जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का गंगपुर की ओर, शासन दीपक श्री हर्षित मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 का भीलवाड़ा की ओर, शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का कोटा की ओर, शासन दीपक श्री राजन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का भीलवाड़ा की ओर, शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा. का साँवलिया जी की ओर, शासन दीपिका श्री खंतीप्रिया श्री जी म.सा. का भीलवाड़ा की ओर विहार हुआ है। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. आदि ठाणा बेगू में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं।

युगनिर्माता आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर की अपूर्व संयम साधना से प्रभावित होकर ब्यावर/मायावरम् के युवा दंपति ने सांसारिक सुख-भोगों को छोड़कर त्याग मार्ग की ओर अग्रसर होने का संकल्प लिया। 45 वर्षीय मुमुक्षु श्री नीरज जी पोखरना सुपुत्र महेंद्र सिंह जी विमला देवी पोखरना, ब्यावर/मायावरम् तथा उनकी धर्मसहायिका 44 वर्षीय मुमुक्षु श्रीमती बसंती देवी पोखरना की जैन भागवती दीक्षा हेतु परिजनों-महेंद्र सिंह जी विमला देवी पोखरना, सरोज जी पोखरना, उत्तमचंद जी ओस्तवाल, विद्या देवी ओस्तवाल आदि ने अनुज्ञा-पत्र एवं मुमुक्षु नीरज जी बसंती देवी पोखरना ने अपना प्रतिज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया। 'हर्ष-हर्ष, जय-जय' की ध्वनि तथा 'राम गुरु विराट हैं दीक्षाओं का ठाठ है' आदि जयकारों से संपूर्ण माहौल गुंजायमान हो गया। दोनों की दीक्षा 14 अगस्त 2024 को भीलवाड़ा के लिए स्वीकृत हुई है। आचार्य भगवन् के अतिशय तथा इस आदर्श दंपति के आदर्श त्याग की चहुँओर सराहना की जा रही है। एक अलग कार्यक्रम में संघ पदाधिकारियों व अनेक लोगों ने तिलक, माला, शॉल आदि से मुमुक्षुओं व परिजनों का स्वागत-बहुमान किया। युवा दंपति ने आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए कहा कि अब शेष जीवन को विशेष बनाना है। मुमुक्षुओं का आत्मिक परिचय महेश नाहटा ने दिया।

दोपहर में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि ज्ञान बढ़ाने के लिए पुरुषार्थ करें, नींद तजे, ऊनोदरी तप करें, अल्प बोलें, पंडित पुरुषों की संगति करें, ज्ञानी से ज्ञान सीखें, विनय रखें, माया-कपट रहित तप करें, इंद्रियों को वश में रखें, संसार को असार जानें। आपश्री जी द्वारा जिज्ञासाओं का सुंदर समाधान भी किया गया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

जड़ पदार्थों में सुख नहीं

20 जून 2024, पितलिया वाटिका, पारसोली। महान अध्यात्म योगी आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-5 बिछोर से विहार कर मार्ग के दोनों ओर खड़े सैकड़ों जैन-जैनेतर गुरुभक्तों को दर्शनों से पावन करते हुए गौतमचंद्र जी पितलिया वाटिका में जय-जयकारों के साथ मंगलमय प्रवेश हुआ।

विहार यात्रा पितलिया वाटिका में पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। इस धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी शास्त्रोक्त वाणी में फरमाया कि “जड़ पदार्थों में सुख नहीं है। जड़ पदार्थों में मन लगा रहेगा तो हम दुःखी ही रहेंगे। श्रावक के भीतर फक्कड़ता होनी चाहिए। हमारी सोच अंदर से बदले। हमारा विज्ञान क्लियर होना चाहिए। मैं अपने आपको आत्मा की दिशा में ले जाऊँ, विचारों का ऐसा शुद्धिकरण जरूरी है। शरीर भिन्न है, आत्मा भिन्न है। इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। जड़ पदार्थों से नहीं अपितु अंदर आत्मा से शांति व समाधि मिलनी चाहिए। मेरा शरीर भी मेरा नहीं है। मिथिला के जलने से मेरा कुछ नहीं जलता है। जितना हम भीतर से अलग होंगे, उतना ही हम सुखी होंगे। हर घटना से हमारी नजर चैतन्य की ओर होनी चाहिए। दिन-रात धन के बारे में सोचना यानी दुःख को बढ़ाना है। हम अपनी खोज करें। हम अपने आपको मजबूत बनाएँ।”

श्री मयंक मुनि जी ने फरमाया कि तीर्थंकरों ने जो मार्ग बताया है, उस मार्ग पर जीना प्रारंभ करें। आज धन की अंधी दौड़ लगी हुई है। नाम चाहिए, पैसा चाहिए लेकिन जीवन उन्नयन के लिए नहीं सोचेंगे। विरक्ति का सुख जीवन में जरूर लें।

महिला मंडल ने ‘धन्य भाग हमारे गुरु राम पधारे’ सुंदर गीत प्रस्तुत किया। एक वर्ष में 12 एकासन, 12 आर्यबिल, 12 उपवास करने तथा अनावश्यक मोबाइल का उपयोग नहीं करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

दीक्षा मोक्ष का प्रजेंट

दीक्षा अंधकार से प्रकाश की यात्रा है और भविजन इस यात्रा में जुड़ रहे हैं। युगनिर्माता आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के पावन चरणों में 30 वर्षीय मुमुक्षु श्री लोकेश जी चौपड़ा सुपुत्र वर्षा जी राजेंद्र जी चौपड़ा, शिंदखेड़ा (जिला धुलिया, महा.) की दीक्षा हेतु परिजनों ने अनुज्ञा-पत्र तथा मुमुक्षु भाई लोकेश जी चौपड़ा ने प्रतिज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया। ‘हर्ष-हर्ष, जय-जय’ व ‘जयवंता-जयवंता’ गीतों से संपूर्ण माहौल वैराग्य के भावों से भर उठा। आचार्य भगवन् ने जैसे ही मुमुक्षु श्री लोकेश जी चौपड़ा की दीक्षा 28 जुलाई के लिए उद्घोषणा की, पूरा पांडाल ‘राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है’ जैसे उद्घोषों से गूँज उठा। एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षुओं व उनके परिवारों का पारसोली व बेगू संघ द्वारा सम्मान किया गया। लगातार दीक्षाएँ खुलने का क्रम जारी है। आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का अद्भुत अतिशय देखने को मिल रहा है।

सभी जगह हमारा व्यवहार कैसा हो

21 जून 2024, पितलिया वाटिका, पारसोली। प्रातः मंगलमय प्रार्थना में प्रभु व गुरुभक्ति से ओत-प्रोत भजनों के माध्यम से उपस्थित जनों ने अपना जीवन धन्य बनाया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में उपस्थित गुरुभक्तों को जिनवाणी का अमृतरस पान कराते हुए फरमाया कि “अकेला बर्तन कभी नहीं बजता। बहुत सारे होते हैं तो ही आवाज आती है। दो घोड़ों की सवारी करना बहुत कठिन है। काम नहीं करेंगे तो शरीर की शक्ति कमजोर हो जाएगी। धार्मिक क्रियाएँ करना अलग बात है

लेकिन जीवन में कभी किसी से शिकायत नहीं होने का संकल्प होना चाहिए। काम करेंगे तो शक्ति बढ़ेगी। अपनी दृष्टि व आवश्यकताओं को सीमित करें। आवश्यकताएँ जितनी सीमित होती हैं, मन उतना ही शांत-प्रशांत रहता है। हमारे मन में परिवर्तन आया कि नहीं? घर-परिवार, ऑफिस में हमारी सार्व कैसी है? हमारा व्यवहार कैसा है? इन पर सदैव ही चिंतन करें। घर वाले मेरे व्यवहार से कितने खुश हैं? मेरे प्रति कर्मचारी क्या विचार रखते हैं? मार्केट में मेरे प्रति लोगों की भावना कैसी है? ये चिंतन का मुख्य विषय है। आज धर्मनिष्ठ गुलेच्छा परिवार अपनी लाडली करुणा गुलेच्छा की दीक्षा हेतु अनुज्ञा-पत्र सहर्ष समर्पित कर रहे हैं। एक बार साधु जीवन का आनंद जरूर लें। मनुष्य जन्म मिला है, हम पुरुषार्थ अवश्य करें।”

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भोगों की सब सामग्री, सब साधन उपलब्ध होने के बावजूद भी जो सब कुछ छोड़कर संयम धारण करता है, वह सच्चा त्यागी है। हम संसार के अधिकारी नहीं, आत्मा के अधिकारी बनें।

शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु सुश्री करुणा जी गुलेच्छा की बहनों ने गुरुचरणों में सुंदर अभिव्यक्ति दी। स्थानीय संघ अध्यक्ष व मंत्री ने अधिक से अधिक विराजने की विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। मुमुक्षु बहन का आत्मिक परिचय महेश नाहटा ने दिया।

मुमुक्षु सुश्री करुणा जी गुलेच्छा (केतु, जिला जोधपुर) ने प्रतिज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित कर शीघ्र दीक्षा प्रदान करने की विनती की। वीर माता-पिता ऊषा देवी-हीरालाल जी गुलेच्छा, वीर दादा रेखचंद जी गुलेच्छा सहित अनेक परिवारजनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित किया। जयवंता-जयवंता गीत व जय-जयकारों से संपूर्ण माहौल भक्तिमय बन गया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके **मुमुक्षु सुश्री करुणा जी गुलेच्छा** की दीक्षा **7 अक्टूबर को भीलवाड़ा** के लिए घोषित की। पूरी सभा भावविभोर हो गई। एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु बहन व परिजनों का आत्मीय स्वागत-अभिनंदन पारसोली संघ ने तिलक, शॉल आदि द्वारा किया।

मुमुक्षु सुश्री करुणा जी गुलेच्छा ने अपने भावोद्गार में कहा कि संयम जीवन सर्वश्रेष्ठ जीवन है। गुरु-भगवंतों व पारिवारिकजनों के आशीर्वाद से मेरी वर्षों की संयम भावना साकार रूप ले रही है। बालिकाओं को एक बार आरुग्गबोहिलाभ में जरूर भेजने का लक्ष्य रखें।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, जोधपुर संघ के पूर्व अध्यक्ष सहित देश के अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी भाई-बहन उपस्थित थे। संयम शतक में अपना नाम अंकित करवाने हेतु कई मुमुक्षु भाई-बहन पावन चरणों में समर्पित हो रहे हैं। विभिन्न त्याग प्रत्याख्यान हुए।

मौन सर्वोत्तम

22 जून 2024, कंवरपुरा। प्रातःकालीन प्रार्थना में पंच परमेष्ठी का गुणगान करने के पश्चात् शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-5 का पारसोली से विहार कर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, कंवरपुरा में अपूर्व जयनादों के साथ मंगल प्रवेश हुआ।

ज्ञानचर्चा में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने मौन के गुण बताते हुए फरमाया कि मौन रखने से 9 गुण प्रकट होते हैं - क्रोध नहीं आता, क्लेश नहीं होता, झूठ नहीं लगता, अभिमान नहीं आता, समय खराब नहीं होता, शक्ति नहीं घटती, बुद्धि नहीं घटती, व्यर्थ कर्मबंधन नहीं होते, नीच गति में नहीं जाते।

‘आया कहाँ से, कहाँ है जाना’ गीतिका के संगान के पश्चात् आचार्य भगवन् ने अपूर्व कृपा वर्षण करते हुए मांगलिक फरमाकर उपस्थित जनसमूह को आत्मतृप्त किया। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। प्रत्येक पूर्णिमा को गुरुदर्शनों का लक्ष्य रखने वाले श्रद्धालुओं सहित अनेक स्थानों के गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। कँवरपुरा धाकड़ समाज की सेवाभक्ति सराहनीय रही।

जैसी संगत वैसी रंगत

23 जून 2024, मनकड़ी स्कूल। मंगलमय प्रार्थना में मधुर प्रभु भक्ति के पश्चात् प्रातःकाल की शुभ बेला में प्रशांतमना आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-5 का कँवरपुरा से मनकड़ी की दिशा में विहार हुआ। इस दीर्घ वय में आचार्य भगवन् के आत्मबल से जन-जन प्रभावित हो रहा था। चातुर्मास स्थल भीलवाड़ा की ओर बढ़ते गुरुचरणों से अनेक क्षेत्र पावन हो रहे हैं। आपश्री जी का राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मनकड़ी में मंगलमय पदार्पण हुआ। संपूर्ण मार्ग जयनादों से गुंजायमान हो रहा था।

प्रवेश पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री गगन मुनि जी म.सा. ने ‘**सत्संग में सुख मिलता है**’ भजन प्रस्तुति के साथ फरमाया कि हमें सदैव ही सत्य, गुणी व अच्छे लोगों की संगति करनी चाहिए। जैसी संगत होती है, वैसी रंगत होती है। मनुष्य जन्म, जिनवाणी श्रवण, जिनवाणी पर श्रद्धा व संयम में पुरुषार्थ दुर्लभ है। हमें इन चारों का सदैव ही चिंतन कर इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। सत्य ही भगवान है। ग्रामीणों व छात्र-छात्राओं ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए। भीलवाड़ा के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल तथा समता युवा संघ के सदस्यों व पदाधिकारियों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

धर्म और कर्म अच्छे हों

24 जून 2024, मुरलिया। प्रातःकालीन प्रार्थना तथा विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों पश्चात् आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर सहित सान्निध्यवर्ती चारित्रात्माओं का विहार का क्रम जारी रहा। आपश्रीजी आदि ठाणा-5 का मनकड़ी से विहार कर धर्म जागरणा करते हुए राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मुरलिया में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ प्रवेश पश्चात् दर्शनार्थियों का ताँता लग गया। ग्रामीणों व बालक-बालिकाओं ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए। समता महिला मंडल, भीलवाड़ा ने विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि रिश्ते वे होते हैं, जिनमें शब्द कम और समझ ज्यादा हो। जिनमें तकरार कम और प्यार ज्यादा हो। जिनमें आस कम और विश्वास ज्यादा हो। जिनमें धर्म और कर्म अच्छे हों। एक मिनट में हृदय 72 बार धड़कता है। एक मिनट में आवाज 12 मील की यात्रा कर लेती है। एक मिनट में अरबों टन का व्यापार व सौदा होता है। एक मिनट में हम अपने भावों को शुद्धतम बना सकते हैं। इसलिए एक मिनट का बहुत महत्त्व है। नीचे देखकर चलने व जीवरक्षा हेतु यतना रखने का नियम कई लोगों ने ग्रहण किया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करते हुए मंगलपाठ फरमाया।

भीलवाड़ा में शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 **शंकर समता भवन** में, शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-6 **समता भवन काशीपुरी** में, शासन दीपक श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 **अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी** में, श्री मनीष मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 **सिंगोली** में तथा साध्वीवर्याएँ भीलवाड़ा के आस-पास के अनेक क्षेत्रों में शासन की भव्य प्रभावना कर रहे हैं।

शिक्षा के साथ नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को दें महत्त्व

25 जून 2024, आमा। भोर की मंगल बेला में पक्षियों के मधुर कलरव के मध्य प्रभु व गुरुभक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना की गई। अधिकाधिक क्षेत्रों को जिनवाणी से पावन करने के लक्ष्य से आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का मंगलमय विहार क्रम जारी है। आपश्रीजी का मुरलिया से विहार कर आमा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में विराजना हुआ। यहाँ पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे गुरुभक्तों सहित स्थानीय जनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ प्राप्त किया। शांति भवन व अहिंसा भवन, भीलवाड़ा के अध्यक्ष, मंत्री व अन्य पदाधिकारियों ने क्षेत्र स्पर्शने की भावभरी विनती गुरुचरणों में समर्पित की। ग्रामीणों व शिक्षकों ने महापुरुषों की कठोर संयम साधना को जानकर अति प्रभावित हो व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने शिक्षक-शिक्षिकाओं व उपस्थित अन्य जनों को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए फरमाया कि “जीवन में शिक्षा के साथ नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को भी प्राथमिकता दें। ईमानदारी, सच्चाई, नैतिकता व मानवता के गुणों को भावी पीढ़ी में विशेष रूप से प्रतिस्थापित करें।” माह में चार दिन रात्रिभोजन त्याग व जान-बूझकर जीवों को नहीं मारने का संकल्प अनेक जनों ने लिया।

हिंसा व आसक्ति से नरक गति का बंध

26 जून 2024, सियार। आज के विहार के क्रम में परम पूज्य आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-5 का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सियार में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। भीलवाड़ा शहर संघ व प्राज्ञ संघ के पदाधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्र स्पर्शने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

धर्मसभा में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने चार गति में जाने के कारणों एवं विभिन्न गतियों से आने वाले जीव की पहचान का विस्तृत विवेचन फरमाया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ फरमाया। जैन व जैनैतर जाट, ब्राह्मण, तेली समाज की सेवाएँ सराहनीय रही।

मन ही बंधन और मोक्ष का कारण

27 जून 2024, मांगरोप। सिरीवाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-5 का प्रातःकालीन प्रार्थना एवं धर्माराधना के पश्चात् आमा से विहार कर मांगरोप के महात्मा गांधी विद्यालय में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। जैन, माहेश्वरी, ब्राह्मण, जाट समाज सहित विद्यालय परिवार ने आत्मीय अगवानी की।

यहाँ पर आयोजित प्रवचन सभा में तत्त्वबोध प्रदान करते हुए श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अपनी आत्मा के समान दूसरी आत्मा को समझने वाला, सभी जीवों पर समभाव रखने वाला, माह में 6 पौषध करने वाला तथा कालोकाल सुबह-शाम प्रतिक्रमण करने वाला शीघ्र ही मोक्ष जाता है। कर्मों में मोहनीय कर्म को, पंचेंद्रियों में स्पर्शेंद्रिय को, छहकाय में वायुकाय को, तीन योगों में मनोयोग को जीतना बहुत मुश्किल है। मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है। मन से सदैव सुविचारों का चिंतन करना चाहिए।

कई भाई-बहनों ने माह में 15 दिन प्रतिक्रमण करने तथा माह में चार पौषध करने का नियम लिया। आचार्य भगवन् ने कृपावर्षण करते हुए मंगलपाठ फरमाकर उपस्थित भक्तों का जीवन धन्य बनाया।

चातुर्मास धर्माराधना का अनुपम अवसर

28 जून 2024, भोली गाँव। नगर-नगर, ग्राम-ग्राम को पावन-पवित्र करते हुए चारित्रात्माओं का चातुर्मास स्थलों की ओर गमनागमन गतिशील है। छह काय की रक्षार्थ चातुर्मास के चार माह जीवों को अभयदान देते हुए चारित्रात्माओं का प्रवास होगा। आचार्य भगवन् भी अपने सान्निध्यवर्ती शिष्यों सहित चातुर्मास स्थल भीलवाड़ा की दिशा में बढ़ रहे हैं। प्रतिदिन विहार का क्रम जारी है। मार्गवर्ती अनेक क्षेत्रों की ग्रामीण जनता महापुरुषों के संयमी जीवन तथा उच्च आदर्शों के बारे में जानकर उनके दर्शनमात्र से अपने आपको धन्य महसूस कर रही है।

व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-5 का मांगरोप से विहार कर भोली गाँव में लादूलाल जी जाट के निवास पर विराजना हुआ। जयघोषों से संपूर्ण क्षेत्र धर्ममय बन गया। ग्रामीण जनता हर्षविभोर हो अगवानी हेतु उपस्थित थी। आपश्रीजी के पावन सान्निध्य में व्यसनमुक्ति के संकल्प व नवकार मंत्र जाप हुआ। आचार्यदेव ने असीम कृपा कर मंगलपाठ फरमाया। भीलवाड़ा के अनेक उपक्षेत्रों व कॉलोनिनों आदि के गुरुभक्तों ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। उपाध्याय भगवन् ने सभी से चातुर्मास में धर्म-ध्यान, तप-त्याग करने की विशेष प्रेरणा देते हुए फरमाया कि “चातुर्मास धर्माराधना करने का स्वर्णिम अवसर है। जो इस अवसर का लाभ उठाता है वह धन्य-धन्य हो जाता है।”

रात्रि में आयोजित धर्मसभा में श्री गगन मुनि जी म.सा. ने ‘सत्संग से सुख मिलता है, जीवन का कण-कण खिलता है’ भजन के साथ फरमाया कि कोई चीज साथ जाने वाली नहीं है। एकमात्र धर्म है जो साथ जाने वाला है। सब चीजों के लिए समय है लेकिन धर्म के लिए समय नहीं है। सच्चाई, ईमानदारी व सुनीति से कार्य करेंगे तो जीवन नैया पार हो जाएगी। ग्रामीणों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए।

भीलवाड़ा का कण-कण हुआ पावन

29 जून 2024, शंकर समता भवन, भीलवाड़ा। चातुर्मासिक घोषणा के पूर्व से ही अनेक क्षेत्र गुरुचरणों के आगमन की आस में पलक-पावड़े बिछाए हुए इंतजार में हैं। आचार्य भगवन् के चातुर्मास से भीलवाड़ा संघ का सौभाग्योदय हुआ। आज प्रातःकालीन दैनिक प्रार्थना व धर्माराधना के पश्चात् व्यसनमुक्ति के प्रणेता, जन-जन के आराधक, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का भोली गाँव से विहार कर भीलवाड़ा के शंकर समता भवन में ऐतिहासिक मंगल प्रवेश हुआ। संपूर्ण प्रवेश मार्ग ‘भले पधारो आगमजाता, हम सब पूछें सुख और साता’ आदि जय-जयकारों से गूँज उठा। हजारों गुरुभक्त व स्थानीय पदाधिकारीगण आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की अगवानी में उमड़ पड़े।

मंगल प्रवेश पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को प्रभु महावीर की अमृतवाणी का दिव्य संदेश प्रदान करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “अरिहंत व सिद्ध भगवान राग-द्वेष रहित होते हैं। वे न तो स्तुति करने से प्रसन्न होते हैं और न ही निंदा करने से खिन्न व क्रोधित होते हैं। फिर भी हम स्तुति क्यों करते हैं? हर प्रश्न का समाधान होता है। परमात्मा न किसी से खुश होते हैं और न किसी से उनको तकलीफ होती है। हम सभी उनकी स्तुति अपनी स्वयं की आत्मसंतुष्टि के लिए करते हैं। हमारी दृष्टि हमेशा गुणों पर रहनी चाहिए। जैसी दृष्टि होगी वैसी ही गुणों का हमारे अंदर समावेश होगा। एक ही

जमीन पर गन्ने की फसल व अफीम की फसल उगती है। जमीन एक ही है लेकिन दोनों का स्वाद अलग-अलग होता है। गन्ना मीठा व अफीम कड़वा होता है। मानव को हमेशा सत्य धर्म के साथ जीवनयापन करना चाहिए। सत्य धर्म के साथ हमारा विश्वास अटल होना चाहिए। धर्म के अटल विश्वास व प्रवाह से शूली का सिंहासन हो गया था। यदि हमारा धर्म पर अटल विश्वास है तो सत्य धर्म के चमत्कार पग-पग पर मिलेंगे। सभी समस्याओं का समाधान सत्य धर्म व नवकार मंत्र से है। जो चीज सहज में मिली है उसके स्वरूप की श्रद्धा से स्तुति नहीं कर रहे हैं। जो धर्म में दृढ़ रहते हैं उनको देवता भी नमस्कार करते हैं। अतः हमें सत्य धर्म एवं गुरु के बताए हुए मार्ग पर बिना किसी अविश्वास के चलते रहना चाहिए।”

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मिथ्यात्व को छोड़कर हमें सच्चे देव, गुरु, धर्म पर अटूट विश्वास रखना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ‘गुरु के मिले चरण कि में रोम खिल गए’ भाव गीत प्रस्तुत किया।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा के अध्यक्ष व मंत्री ने कहा कि 20 वर्षों के पश्चात् महापुरुषों का भीलवाड़ा में पदार्पण हुआ है। गुरु के सान्निध्य का अधिकाधिक लाभ उठाएँ। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के अतिशय का उल्लेख करते हुए सभी से धर्म-ध्यान, त्याग-तप से जुड़ने की अपील की। कई भाई-बहनों ने चातुर्मास में एक तेला करने का संकल्प लिया। अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

18 वर्षीय **मुमुक्षु बहन जिया जी कोठारी** सुपुत्री प्रकाशचंद जी-कविता जी कोठारी, बेंगलुरु/देवगढ़ सुपौत्री प्यारेलाल जी-मंजूबाई कोठारी की जैन भागवती दीक्षा हेतु पारिवारिकजनों ने अनुज्ञा-पत्र सहर्ष गुरुचरणों में समर्पित किया। आचार्य भगवन् ने जैसे ही **7 अक्टूबर 2024** के लिए मुमुक्षु जिया जी कोठारी की दीक्षा हेतु घोषणा की संपूर्ण सभा जय-जयकारों व जयवंता-जयवंता गीत से गूँज उठी। हर कोई मुमुक्षु बहन के त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा था।

एक अलग कार्यक्रम में दीक्षार्थी बहन व वीर परिजनों का स्वागत-बहुमान साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल व समता युवा संघ, भीलवाड़ा के पदाधिकारियों व सदस्यों द्वारा किया गया।

मोबाइल के प्रयोग से असंख्यात् जीवों की हिंसा

30 जून 2024, शंकर समता भवन, भीलवाड़ा। प्रातःकाल से ही उल्लासित भक्तों के कदम समता भवन की ओर बढ़ रहे थे क्योंकि रविवारीय समता शाखा का पावन प्रसंग और वो भी आचार्य भगवन् के सान्निध्य में, ऐसे पावन अवसर से कोई भी वंचित नहीं रहना चाहता था। ऐसे लग रहा था जैसे जनसैलाब उमड़ पड़ा हो। समता शाखा में आराधना पश्चात् आराध्यदेव ने मंगलपाठ श्रवण कराया।

समता शाखा पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए दयानिधि कृपानिधि आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “**मनुष्य जैसे-जैसे मोह में फँसता जाता है, वैसे-वैसे सांसारिक दलदल में धँसता जा रहा है। मोह घटेगा तो संसार चक्र घटेगा। धर्म व मांगलिक का उद्देश्य आत्मकल्याण होना चाहिए, न कि स्वयं की स्वार्थ पूर्ति। मानव को बुद्धि मिली पर वो इस बुद्धि का सही दिशा में उपयोग नहीं कर पा रहा है। यह अटल सत्य है कि बुढ़ापा व मृत्यु को कोई नहीं टाल सकता है। हर व्यक्ति को परमात्मा की स्तुति करते हुए**

उनके गुणों को जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए। हमें किसी का तिरस्कार, निंदा नहीं करनी चाहिए। एक बार मोबाइल का बटन दबाने से असंख्यात् जीवों की हिंसा होती है। कई बार मोबाइल को बिना वजह के चलाते रहते हैं तो सोचें कि कितने जीवों की हिंसा कर कर्मबंधन कर रहे हैं। मोबाइल के व्यर्थ दुरुपयोग से बचने का प्रयास करें।”

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें धन-दौलत व भौतिक सुखों के लिए जीवन बरबाद नहीं करना है। हमें समझ की परीक्षा लेनी चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का गुरुचरणों में मंगलमय पदार्पण हुआ। ब्यावर संघ ने आगामी वर्ष 2025 के दीक्षा प्रसंग, होली चातुर्मास, अक्षय तृतीया, महत्तम महोत्सव के समापन प्रसंग व चातुर्मास की भावभरी पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। परम गुरुभक्त विनोद जी अभ्याणी के निधन पर परिवारजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

दोपहर में श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने धर्म व तत्त्वज्ञान का बोध दिया। ‘लोच में क्या सोच’ कार्यक्रम के अंतर्गत कुछ भाइयों ने लोच करवाकर कायाक्लेश तप किया। बाहर से दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर जारी है। भीलवाड़ा में चातुर्मास से पूर्व अनेक उपनगरों में आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का पावन प्रवास संभावित है। हर जाति, वर्ग, संप्रदाय के लोग दिव्य महापुरुषों के दर्शनों से पावन हो सान्निध्य हेतु लालायित नजर आ रहे हैं। संपूर्ण भीलवाड़ा धर्म व गुरुवर राम के रंग में सराबोर हो रहा है।

तपस्या सूची

| | |
|---------------|--|
| आजीवन शीलव्रत | धर्मेन्द्र जी मीना जी आंचलिया-बेगूँ, अनूप जी डिंपल जी धम्माणी-रतलाम, जगदीश जी पंचोली-बेगूँ, सुरेंद्र सिंह जी पुगलिया-बिजौलिया, भागचंद जी आंचलिया-बेगूँ, गौतम जी अंजना देवी पितलिया-पारसोली, शांतिलाल जी पितलिया, बसंत जी मोनिका देवी सेठिया-भीलवाड़ा, फूसराज जी किरण देवी सुराणा-गंगाशहर |
| सामायिक | 2000 - विजय सिंह जी सुराणा-कदवासा |
| पोरसी | 100 - पुष्पा जी सेठिया 200 - सोहन बाई जैन, गौतम जी पीतलिया-पारसोली |
| पक्की नवकारसी | आजीवन - संगीता जी पंकज जी मेहता-रतलाम |

-महेश नाहटा



भिक्षाचर्या को ‘गोचरी’ भी कहा गया है। गोचरी अर्थात् गउ+चरी। गधा घास को समूल उखाड़ देता है, जबकि गाय ऊपर-ऊपर से चरती है तो जड़ सही-सलामत बनी रहती है। दूसरी उपमा भँवरे की भी दी गई है कि भँवरा अनेक फूलों से थोड़ा-थोड़ा पराग लेता है। इससे फूल भी नहीं कुम्हलाता, खिला रहता है और भँवरा अपनी आत्मा को तृप्त भी कर लेता है। इसी प्रकार अनगर भी जब सभी घरों से थोड़ा-थोड़ा आहार लेता है तब किसी एक पर भारभूत नहीं होता। यदि एक ही घर से लेगा तो निश्चित आरंभ-समारंभ होगा और उसका पाप भी उसे लगेगा, तब आश्रव द्वारा संयोग जुड़ जाएगा।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

संक्षिप्त परिचय

- जन्म स्थान : शिंदखेड़ा, धुले (महा.)
जन्म तिथि : 26 अगस्त 1994
वैराग्यकाल : लगभग 6 माह
व्यावहारिक शिक्षा : एम.बी.ए. (फाइनेंस)
धार्मिक अध्ययन : श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र 5 अध्ययन,
पुच्छिसु णं, लघुदंडक, गति-आगति,
जीवधड़ा, गमक का थोकड़ा, गुणस्थान
का थोकड़ा
धार्मिक परीक्षाएँ : जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-1 से 3
पदयात्रा : लगभग 500 किमी.
संभावित दीक्षा तिथि : 28 जुलाई 2024

मुमुक्षु श्री लोकेश जी चोपड़ा



पारिवारिक परिचय

- पड़दादाजी : स्व. श्री हस्तीमल जी चोपड़ा
दादाजी-दादीजी : स्व. श्री हिम्मतमल जी-स्व. श्रीमती बनारस बाई चोपड़ा
पिताजी-माताजी : स्व. श्री राजेंद्र जी-श्रीमती वर्षा जी चोपड़ा
चाचाजी-चाचीजी : मनीष जी, कमलेश जी-अश्विनी जी चोपड़ा
भाई-भाभी : चेतन जी-हितेश्री जी, दीक्षांत जी, अरिहंत जी चोपड़ा
बहन-बहनोई : हीना जी-यशपाल जी टाटिया
भुआजी-फूफाजी : स्व. श्रीमती शकुंतला जी-स्व. श्री रूपचंद जी बोरा, श्रीमती चंद्रकला जी-
स्व. श्री भागचंद जी लोढ़ा, अलका जी-नथमल जी संचेती, वैशाली जी-
तिलोकचंद जी बोथरा
नानाजी-नानीजी : स्व. श्री जसराज जी-स्व. श्रीमती सुशीला बाई कुचेरिया
मामाजी-मामीजी : हेमंत कुमार जी-अलका जी कुचेरिया
मौंसीजी-मौंसाजी : स्व. श्रीमती हर्षा जी-एड. नंदलाल जी औस्तवाल, संगीता जी-सुमति
कुमार जी कोठारी, योगिता जी-राजेंद्र कुमार जी बागरेचा
परिवार से दीक्षित : साध्वी श्री वरण श्री जी म.सा. (साधुमार्गी)
साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा. (साधुमार्गी)
साध्वी श्री हिमानी श्री जी म.सा. (साधुमार्गी)
साध्वी श्री स्वस्तिप्रज्ञा श्री जी म.सा. (अन्य संप्रदाय)

अंक्षिप्त परिचय

| | |
|---------------------|---|
| जन्म स्थान | : नसीराबाद, अजमेर (राज.) |
| मूल निवासी | : न्यारा, अजमेर (राज.) |
| जन्म तिथि | : 20 अगस्त 1979 |
| वैराग्यकाल | : लगभग 8 माह |
| व्यावहारिक शिक्षा | : बी.एससी. |
| धार्मिक अध्ययन | : श्रीमद् दशर्विकालिक सूत्र 1-4, सुखविपाक सूत्र 1-2, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 3-4, पुच्छिसुणं, भक्तामर, रत्नाकर पच्चीसी, जैन सिद्धांत बत्तीसी, प्रतिक्रमण, महावीराष्टक, उवसग्गहर |
| धार्मिक शिक्षा | : लक्ष्य सिद्धि शिविर |
| धार्मिक परीक्षाएँ | : जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-1, श्रुत भूषण-1, श्रुत आरोहक-1, 2 |
| पदयात्रा | : लगभग 150 किमी. |
| संभावित दीक्षा तिथि | : 14 अगस्त 2024 |

पारिवारिक परिचय

| | |
|------------------------|---|
| बड़े दादाजी-बड़ीदादीजी | : स्व. श्री मोतीलाल जी-स्व. श्रीमती मनोरथ बाई पोखरना |
| दादाजी-दादीजी | : स्व. श्री सोहनलाल जी-स्व. श्रीमती लाड कँवर जी पोखरना |
| पिताजी-माताजी | : महेन्द्र सिंह जी-विमला देवी पोखरना |
| चाचाजी-चाचीजी | : स्व. श्री सुरेंद्र जी-मंजू देवी, राजेंद्र जी-पुष्पा देवी, स्व. विजेंद्र जी-सरोज देवी पोखरना |
| धर्मसहायिका | : मुमुक्षु श्रीमती बसंती देवी पोखरना |
| भाई-भाभी | : आशीष कुमार जी-शिल्पा जी, विपिन कुमार जी-ममता जी, जितेंद्र कुमार जी-चेतना जी पोखरना |
| बहन-बहनोई | : प्रियंका जी-दिलीप जी मूथा, विनिता जी-विजयराज जी ओस्तवाल, जैनिता जी-कमलेश जी मेहता, शिखा जी-मनीज जी सांखला, नंदिता जी-रोहित जी बोहरा, रक्षिता जी |
| भुआजी-फूफाजी | : स्व. श्रीमती सुशीला देवी-स्व. श्री रतनलाल जी कोठारी, पुष्पा देवी-नथमल जी टिकल्या, लीला देवी-ज्ञानचंद जी मुणोत |
| नानाजी-नानीजी | : स्व. श्री शोभागमल जी-स्व. श्रीमती अनूप कँवर जी बोहरा |
| मामाजी-मामीजी | : चेतन सिंह जी-कमला देवी, प्रेमराज जी-तारा देवी, ललित कुमार जी-राजुल देवी बोहरा |
| मौंसीजी-मौंसाजी | : कंचन बाई-सुभाष जी लोढ़ा, मंजू बाई-संतोष जी सिंघवी, संजू बाई-गौतम जी गेलड़ा |
| ससुरजी-सासजी | : बादलचंद जी-कमला देवी मेहता, सिरकाली |

विशेष – आपकी धर्मसहायिका मुमुक्षु श्रीमती बसंती देवी पोखरना भी आपके साथ ही दीक्षा ग्रहण कर रही हैं।

मुमुक्षु श्री नीरज जी पोखरना



अंक्षिप्त परिचय

- जन्म स्थान : पीसांगन, अजमेर (राज.)
जन्म तिथि : 20 जनवरी 1980
वैराग्यकाल : लगभग 27 माह
व्यावहारिक शिक्षा : बी.एससी.
धार्मिक अध्ययन : श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र 1-10, सुखविपाक सूत्र 1-10, पुच्छिसु णं, भक्तामर, लघुदंडक, गति-आगति, जैन सिद्धांत बत्तीसी, प्रतिक्रमण
धार्मिक शिक्षा : आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षाएँ : जैन संस्कार भूषण, जैन संस्कार कोविद, श्रुत आराधक
पदयात्रा : लगभग 150 किमी.
संभावित दीक्षा तिथि : 14 अगस्त 2024

मुमुक्षु श्रीमती बसंती देवी पोखरणा



पारिवारिक परिचय

- ससुरजी-सासजी : महेंद्र सिंह जी-विमला देवी पोखरणा
धर्मसहायक : मुमुक्षु श्री नीरज जी पोखरणा
बड़े दादाजी-बड़ी दादीजी : स्व. श्री मोखम सिंह जी-स्व. श्रीमती सुंदर बाई मेहता
दादाजी-दादीजी : स्व. श्री मिश्रीलाल जी -स्व. श्रीमती उमराव कँवर जी मेहता
पिताजी-माताजी : बादलचंद जी-कमला देवी मेहता
चाचाजी-चाचीजी : स्व. श्री सुभाषचंद जी-विमला देवी, नीलमचंद जी-आशा देवी मेहता
भाई-भाभी : महावीर जी-मनोहरी जी, रकेश जी-पायल जी, शंकर जी-सपना जी, अभिषेक जी-मंजुला जी, अभिनव जी-प्रियंका जी मेहता
बहन-बहनोई : सुनीता जी-सुनील जी बाबेल, राखी जी-प्रसन्न जी आँचलिया, विजयलक्ष्मी जी-गौतम जी सुराणा, पायल जी-विकास जी सुराणा, मंजू जी-नवीन जी चोरड़िया, निधि जी-विकास जी बोहरा
भुआजी-फूफाजी : विमला बाई-कन्हैयालाल जी कांकरिया
नानाजी-नानीजी : गिरधारी सिंह जी-सोहन कँवर जी मेहता
मामाजी-मामीजी : भंवर सिंह जी-सुशीला जी, स्व. श्री किशन सिंह जी-सुशीला जी मेहता
मौंसीजी-मौंसाजी : सुनीता जी-भीकमचंद जी लोढ़ा

विशेष – आपके धर्मसहायक मुमुक्षु श्री नीरज जी पोखरणा भी आपके साथ ही दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

॥ जय गुरु नाना ॥

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु राम ॥



शिखर महोत्सव 2024

आचार्य श्री रामेश यावन वर्षावास प्रसंग

हुवमसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्यज्ञाता,
व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलाल जी म.सा.

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर
श्री राजेश मुनि जी म.सा

आदि ठाणा के पावन वर्षावास - 2024 का प्रसंग रखे जाने वाले
समस्त आगारों सहित भीलवाड़ा संघ को प्राप्त हुआ है ।

सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं व संघों से विनती है कि इस पावन अवसर पर संघ एवं परिवार सहित
पधारकर धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता की भव्यता से अपने जीवन को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करें।

स्थानक - श्री महावीर सेवा समिति, अरिहंत भवन, आर.के. काँलोनी, भीलवाड़ा
प्रवचन स्थल - रा.प्रा.वि. धांधोलाई, आर.सी. व्यास काँलोनी, भीलवाड़ा

चातुर्मास
संयोजक
94141-15394

कार्यालय संयोजक
94141-15164
कार्यालय
95719-90108

चौका व्यवस्था
94141-15624
94605-76530

आवास-निवास
व्यवस्था
95713-90108

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा

* समता युवा संघ * समता महिला मंडल * समता बहू मंडल *

॥ जय गुरु नाना ॥

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु राम ॥

चातुर्मासिक स्थापना दिवस

लक्ष्य : 1,11,111 सामायिक

20 जुलाई का पावन दिवस वैश्विक सामायिक दिवस (GLOBAL SAMAYIK DAY) के रूप में मनाया जा रहा है।

श्रीसंघ के सभी सदस्यों से निवेदन है कि अनुकूलता के अनुसार अधिक से अधिक सामायिक करने का लक्ष्य रखें। आप स्थानक भवन अथवा घर पर रहकर भी कल्प के अनुसार सामायिक कर सकते हैं।

SCAN THE CODE



दिनांक व समय : 20 जुलाई 2024, सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक

विशेष : आपने जितनी सामायिक की, चाहे वह 1 सामायिक भी की हो तो उसे काउंट किया जाएगा। इसकी सूचना गूगल लिंक

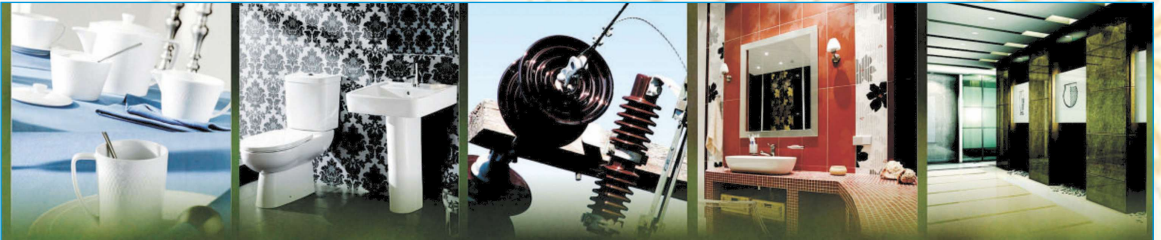
https://docs.google.com/forms/u/0/d/1aKZbF4VsFPE5fSEQYy_FIIlZzyj2IPlxzoHj3X5nnTw/viewform?edit_requested=true

के माध्यम से अवश्य भेजें अथवा स्थानीय संघ को दर्ज कराने का कष्ट करें।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के समस्त श्रावक-श्राविकाएँ, युवा, बच्चे आदि सभी को इस आयोजन हेतु पुरजोर पुरुषार्थ करते हुए अधिकाधिक संख्या में इस लक्ष्य को पूरा करने हेतु स्वयं सामायिक करनी है तथा इसके लिए प्रभावना करनी है।

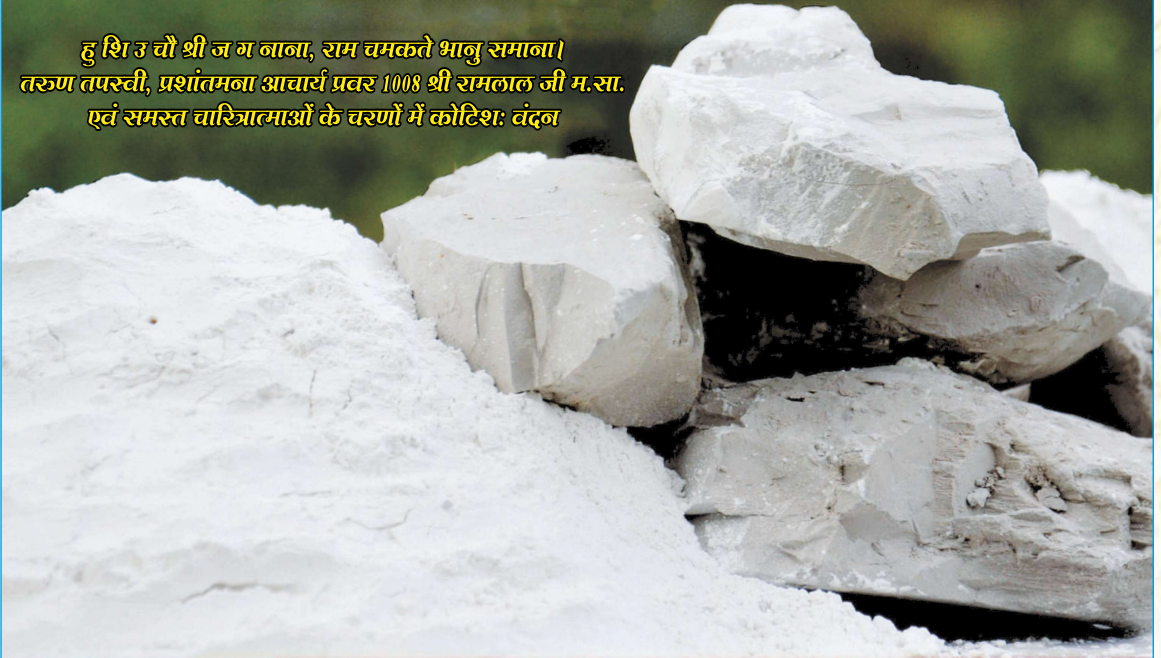
::: निवेदक :::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ



Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज न बाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कौटिशः वंदन



A Premier Clay Specialists in The Country..

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में 1,000/- (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु 15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक 50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता 500/-

आजीवन सदस्यता 5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से

कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com

SCAN & PAY



व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

| | | |
|---|--------------|--|
| श्रमणोपासक | : 9799061990 | } news@sadhumargi.com |
| श्रमणोपासक समाचार | : 8955682153 | |
| साहित्य | : 8209090748 | : sahitya@sadhumargi.com |
| महिला समिति | : 6375633109 | : ms@sadhumargi.com |
| समता युवा संघ | : 7073238777 | : yuva@sadhumargi.com |
| धार्मिक परीक्षा | : 7231933008 | } examboard@sadhumargi.com |
| कर्म सिद्धांत | : 7976519363 | |
| परिवारांजलि | : 7231033008 | : anjali@sadhumargi.com |
| विहार | : 8505053113 | : vihar@sadhumargi.com |
| पाठशाला | : 9982990507 | : pathshala@sadhumargi.com |
| शिविर | : 7231833008 | : udaipur@sadhumargi.com |
| ग्लोबल कार्ड अपडेशन | : 6265311663 | : globalcard@sadhumargi.com |
| सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जनसेवा, जीवदया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ | : 9602026899 | |
| शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ | : 7231933008 | |

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर
YOUR TRUST

जय गुरु राम



RAKSHA[®]

PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond
Dureflex
Diamond
DUROLON



Now with new
M.R.O.
Technology
Resists high impact



IS 15778 : 2007

CM/L NO : 2526 149



LUCALOR
FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,900

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh



www.facebook.com/HOSadhumargi

